तंत्र कौमुदी
NTKU
निखिल तत्व सायुज्य श्री साधना महाविशेषांक
Eight Issue – OCTOBER 2011
Tantra kaumudi

तंत्र

नित्यं सौभाग्यमेतत जनयति शुभदं दीपमाला सुमाला ,प्रेमाबद्धं च ललितं वितरति सत्यं दानमानादि सौख्यं |
हित्वा हेयं तमौघं प्रभवति विमलं ह्रदय तेजोऽभिधेयं ,वन्द्यं सिद्धेश्च निखिल : स्फुरतु मम ह्रदि ब्राह्मऽतेजोभिदीप्त

सुन्दर दीयो से सुशोभित यह दीपमाला सौभाग्य को उत्पन्न करने वाली हैं , जिसके आते ही लोग प्रेममय हो कर अच्छे वस्त्रो से सुसज्जित हो ,सत्य दान ,मान एवं बन्धुत्वमय व्यवहार करने लगते हैं यह दीपमाला सभी अन्धकार राशि को दूर करके स्वच्छ प्रकाश से संसार को आलोकित कर देती हैं, इस मंगल बेला में सिद्ध समूह से वन्दित गुरुदेव निखिल अपने ब्रह्मतेज से दीप्त हो मेरे ह्रदय में स्फुरित हो .

Lighted with beautiful earthen lamp , this deepmala generates luck, and on coming this festival everybody wears new Clothes,and behaves saty, daan,respect and friendliness to all , this Deepmala removes darkness and spread lights to whole world, in this auspicious time gurudev Nikhil praised by siddha mandal ,provide light in my heart through his bramhtej..
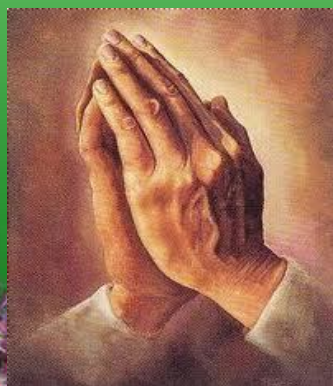
Dedicated
To
The Divine Holy Lotus Feet of
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI
(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)
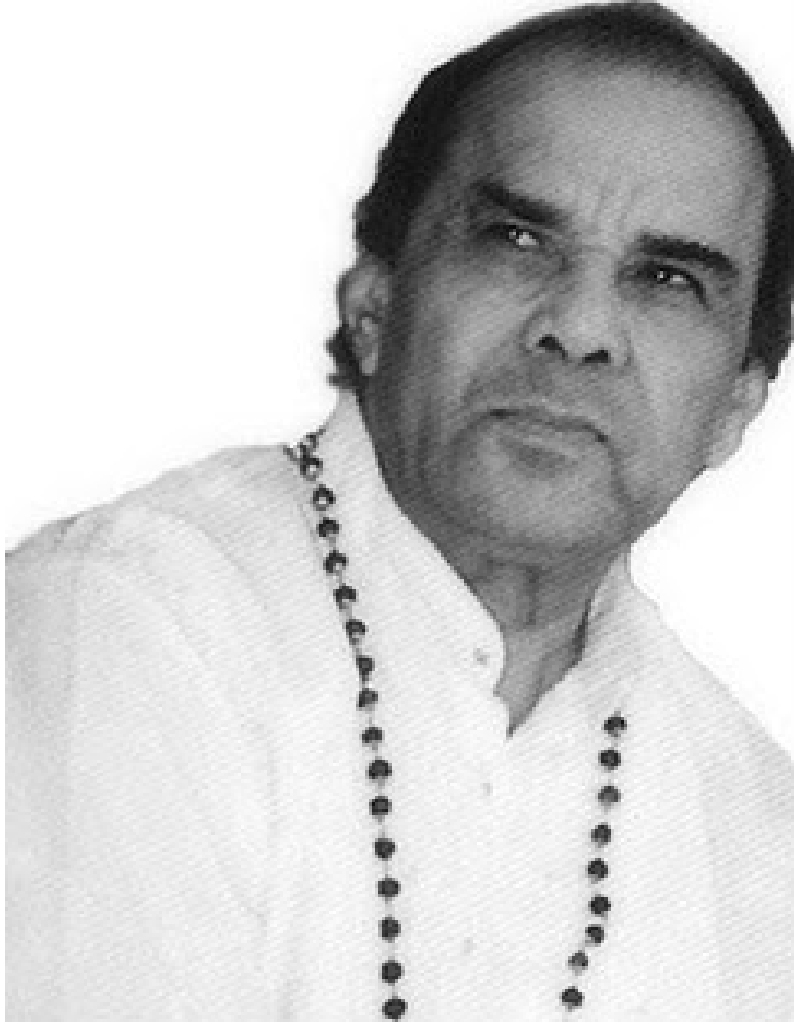
Publisher

Of

Tantra kaumudi e-magazine

Nikhil Para Science Research Unit

Can be contacted through

http://nikhil-alchemy2.com

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

TEAM MEMEBERS OF TANTRA KAUMUDI E- MAGAZINE

Editor | *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com raghunath.nikhil@yahoo.in anuwithsmile@rediffmail.com

Name of the Articles

- *In The End*

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

General Rules :

This free e magazine available only to the follower register in the blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com. and also nikhil-alchemy groups memeber . the article appear here, are /will be based on the divine wisdom of **SadGurudev Dr Shri Narayan Dutt Shrimali ji** , and his sanyasi shishyas . we as a your fellow guru brothers, here just providing words to their thought. For the address of these mahayogi's are not known to us, as they all are wondering saints.

The sadhana and mantra's appeared /mentioned in any article can be practiced ,on your own responsibility, to get success in sadhana you can have Diksha from anywhere where your faith,devotion and trust calls . for sadhana articles needed for that , you can purchase from any place ,as per you faith and trust suited to you ,

Please do not ask us for any type of sadhana related materials, and also for Diksha related Queries at any cost /condition , we does not sell any sadhana material (yantra , rosary etc).

Since sadhana is a very complex matter, for success and failure of any sadhana mentioned in any article here , many things required , to get success . that's why ,we do not take any responsibility in this connection. we also request, not to do any sadhana ,which is adverse and not permitted as per legal, morel, society belief.

This e magazine will be published monthly. You are receiving this magazine means that you are accepting the terms and conditions . at any time , you can withdraw your registration . this e magazine just a forum to share knowledge between us (Sadgurudev ji's shishyas - All guru brother and sisters),

if still any one raises questions regarding the authenticity of articles published here , for them, treat all articles just as a fiction and a ear say.

सम्पादकीय ......

प्रिय मित्रों ,भाइयों एवं बहिनों ,

निखिल प्रणाम,

विगत अंक से सम्बंधित आप सभी की राय हमारे चित्त को प्रसन्नता देने वाली थी . ये तो सत्य है की जो भी खट्टा मीठा हमारे संग्रह मे होता है ,उसे बिना संकोच के आप सभी के समक्ष रखना हमारा ध्येय है, वैसे सत्य ये है की अनुभूतियाँ नितांत व्यक्तिक होती है ,और मेरा अनुभव कदापि आपका नहीं हो सकता,परन्तु एक दिशा , एक पथ जरुर दृष्टिगोचर होता है ,इस आदान-प्रदान की क्रिया मे .इसी क्रम मे आप सभी के समक्ष प्रस्तुत अंक **"निखिल तत्व सायुज्य श्री साधना महाविशेषांक"** अर्पित है ,

अर्पित है ये अंक मेरे नहीं नहीं हम सबके प्राणाधार सदगुरुदेव निखिल के चरण कमलों में ,जिन्होंने कभी ज्ञान का आदान-प्रदान करने में जातिगत भेद भाव नहीं देखा,जिनका दिव्य स्पर्श शिष्य वर्ग मात्र के लिए था,और समर्पित था उनका पूर्ण जीवन भी हम सभी के लिए .तभी तो ज्ञान की एक धारा,एक विचार समय के साथ साथ सागर ही नहीं बल्कि महासागर में परिवर्तित हो गयी.

मेरे लिए ये अंक लिखना अत्यधिक गौरव का विषय थी,और भला क्यूँ नहीं होती,क्यूंकि मेरा जीवन उन्ही के चरणों में उन्ही को समझने में तो लगा और लगा रहेगा. उन्हें सोचते सोचते कब सब लिखते चला गया ,पता ही नहीं चला ,

हाँ दुःख है की और भी बहुत सारा लिख सकता था,पर नहीं लिख पाया ,क्यूंकि जितना मेरी अल्प बुद्धि ने जाना है , यदि उसे ही लिखता जाता तब भी ना जाने कितने लाख पृष्ठ कम पड़ जाते. फिर भी विषय के आधार पर उन साधनाओं और ज्ञान को आप सबके समक्ष रखने का साहस कर रहा हूँ

जिन्हें अज्ञात रखने का भरसक प्रयत्न जाता रहा है ताकि हर कोई पावन न हो जाये उस गंगाधर की मधुर ज्ञान धारा में .परन्तु नियति सबकी नियत है. इस अंक के लिए भी नियत है ,**यदि इन रहस्यों के ज्ञान के बाद भी हम अपने आत्मोत्थान के लिए गिडगिडाते रहे तो हमसे बड़ा हतभागी कोई नहीं होगा, अब सदगुरुदेव की कृपा प्राप्ति के लिए अपने ह्रदय का निर्मल होना और साहस का चरम भाव ही पर्याप्त होगा,निश्चित रूप से ये समस्त विधान आपको आपके अभीष्ट लक्ष्य तक अवश्य पंहुचा देंगे ,**

ये समस्त सूत्र सदगुरुदेव की असीम करुणा का प्रतीक हैं जो की मात्र हम जैसो के उद्धार के लिए ही काल कवलित होने से बचे रहे हैं. वे जानते थे की भविष्य में मेरे बच्चों को इसकी आवशयकता होगी ही.और इस अंक में श्री तत्व का वह अर्थ भी बताने की चेष्टा की है जो की हम कभी नहीं समझना चाहते हैं.

श्री मात्र ऐश्वर्य का प्रतीक नहीं है अपितु जीवन के प्रति सार्थक दृष्टिकोण की प्राप्ति ही वास्तविक श्री तत्व है. शक्तिपात रुपी ऊर्जा को सही रूप से संचयित रखकर ही हम एक सार्थक जीवन प्राप्त कर सकते हैं, और सदगुरुदेव की विराटता को देखने से बड़ा आनंद और सौभाग्य भला किसे कहा जा सकता है,

मेरा निवेदन है की आप एक एक शब्द को ध्यान से पढ़े और जो भी काम का लगे उसे स्वीकार कर अन्य जो भी स्वीकारणीय ना लगे,उसके बारे में भी अपनी राय जरुर बताइयेगा, निकट भविष्य में सदगुरुदेव के जीवन पर और भी अंक प्रकाशित करने की योजना है.हाँ अगला अंक **"शक्ति सायुज्य अघोर साधना महा विशेषांक"** है, जिसकी तैयारी में हम जोर शोर से लगे हैं.और उतना ही प्रयास हम कार्यशाला और किताब के प्रकाशन के लिए कर रहे हैं . ताकि प्रायोगिक रूप से इन विषयों को समझना आसान हो सके. हाँ सफलता के मूल में सदगुरुदेव का आशीर्वाद ही कार्य करता है,अतः ये विशेष रूप से ध्यान रखे.

मेरे प्रिय **अनुराग भाई और रघुनाथ भाई** का सहयोग पल प्रति पल मुझे मिलता ही रहता है ,तभी एक अंक साकार रूप में हम सभी के समक्ष आ पाता है ,निकट भविष्य में भी ये युगलबंदी कुछ नवीन रहस्य आप सभी के समक्ष अवश्य रखेगी... तब तक आपकी राय की प्रतीक्षा में. **जय सदगुरुदेव**

सदैव आपका ही भाई

आरिफ खान

SADGURUDEV - PRASANG

धन गरजे बरसे अमी

कभी-कभी जीवन में ऐसी घटनाओं का साक्षीभूत होना पड़ता है या ऐसी घटनाएं जीवन में घटित हो जाती हैं, कि वे चित्त पर हमेशा-हमेशा के लिए अंकित होजाती हैं और जब भी वे क्षण याद आते हैं या आंखों के सामने से गुजरते हैं, तो आंखें नम हो जाती हैं और दिल फटने लगता है । सन 1992 जनवरी माह में गुरुदेव को पेट में कुछ तकलीफ हुई और दर्द बढ़ता ही गया। मार्च 1992 में नवरात्रि थी और हम देख रहे थे, कि गुरुदेव धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे हैं,

उनका वजन कम होता जा रहा है और थोड़ी देर बोलने के बाद ही वे थकने से लगते हैं, मगर उन्होंने किसी को कुछ कहा ही नहीं, मैंने यह अनुभव किया है, कि चाहे उनके ऊपर पहाड़ टूट पड़े,

चाहे लाखों-लाखों चिन्ताएं और तनाव उनके जीवन में आ जायें, मगर वे मुंह से कुछ कहते ही नहीं, किसी को कुछ बताते ही नहीं, चुपचाप उस दुःख को, उस दर्द के, उस पीड़ा को, उस कष्ट को सहन करते रहते हैं और उस तनाव को पीते रहते हैं । हम लागों ने उनसे पूछा भी - "आप पहले से बहुत ज्यादा कमजोर होने लगे हैं, दो-दो घण्टे, तीन-तीन घण्टे **अजस्त्र**

और अबाध गति से आप प्रवचन करते थे, वहीं अब पन्द्रह-बीस मिनट बाद विश्राम करने लगते हैं, तो कोई न कोई ऐसी पीड़ा, कोई न कोई ऐसा दर्द जरूर है, जो आप बताते नहीं हैं । और मैंने देखा कि एक क्षण के लिए मन का दर्द उभरा, शायद होंठ उस दर्द को कहने के लिए थरथराने लगे, मगर फिर मुस्कुरा कर बोले - "ऐसा तो कुछ भी नहीं है, सब ठीक-ठाक है ही, मुझे क्या हुआ है? यदि कुछ हुआ भी है, तो मेरे शरीर को हुआ है –

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरो पराणि।

भगवान कृष्ण ने तो साफ-साफ कहा है, कि जब कपड़ा पुराना हो जाता है, जीर्ण-जीर्ण हो जाता है, तो उसको उतार देते हैं और नया कपड़ा पहन लेते हैं –

'तथा शरीराणि विहाय जीर्णा,
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।

और गुणवान श्रेष्ठ व्यक्तित्व ठीक उसी प्रकार से देह के प्रति भाव रखते हैं, कि यह देह के प्रति भाव रखते हैं, कि यह देह भी एक दिन जीर्ण-शीर्ण हो सकती है और यह प्राण, यह आत्मा पुराने शरीर को छोड़ कर नया शरीर धारण कर लेती है...... और ऐसा कह कर वे हमारे बीच में से उठ कर चले गये।

हम आठ-दस अंतरंग शिष्य बैठे हुए थे और उनकी बात सुनकर अवाक रह गये - गुरुजी यह क्या बोल रहे हैं? क्या गुरुजी ने शरीर को छोड़ने की क्रिया प्रारम्भ कर दी है? क्या उन्होंने शरीर को छोड़ने की तैयारी कर ली है? फिर ये श्लोक वे क्यों बोले? क्या वे हमें छोड़कर चले जायेंगे? .... और छोड़कर चले जायेंगे तो ये लाखों शिष्य कैसे जी सकेंगे, ये तो एक क्षण भी गुरुजी के बिना जिन्दा रहने की कल्पना ही नहीं कर सकते।

गीता के इस श्लोक को जब उन्होंने कहा, तो एक चोट सी मेरे सीने में लगी और ऐसा लगा, कि प्राण निकल जायें और मैं यहीं समाप्त जो जाऊं, यह मेरी ही भावना नहीं थी, यह हम सब शिष्यों की भावना थी।

समय बीतता गया और मैंने निश्चय कर लिया, कि चाहे कुछ भी हो जाय, मुझे प्रतिक्षण गुरुदेव के साथ रहना है। मैंने उनसे पिता का प्यार पाया है, आत्मीयता अनुभव की है, अंतरंगता अनुभव की है, और गुदेव की शीतल छाया का एहसास किया है, मुझे हर क्षण साथ रहना चाहिए और हम पति-पत्नी ने निश्चय कर लिया, कि हम साथ ही रहेंगे, हर क्षण, हर पल, हर सेकेण्ड।
परन्तु अप्रैल आते-आते तो उनका कष्ट बहुत अधिक बढ़ गया, शायद उनकी किडनी में कुछ इन्फेक्शन हो गया था।

उन्हीं दिनों गुजरात में दो दिन का शिविरहुआ, गुरुदेव बम्बई से वहां आये, मगर हम देख रहे थे, कि गुरुदेव धीरे-धीरे पीले पड़ते जा रहे हैं और जबरदस्ती अपने शरीर को खींच से रहे हैं, मगर फिर भी उन्होंने आये हुए हजारों शिष्यों को एहसास तक नहीं होने दिया, कि वे कष्ट में हैं; मगर हम लोगों को यह एहसास हो गया था, कि शीघ्र ही हमें बम्बई चलना चाहिए। माता जी, नन्दकिशोर जी, हम सब ने उनसे निवेदन किया, कि आपको हमारी भले ही आवश्यकता नहीं हो, मगर हम सभी को आपकी बहुत आवश्यकता है, आपको बम्बई चलना चाहिए; किन्तु वे नहीं माने....

उन्होंने कहा - "मुझे कोई तकलीफ नहीं है ।
लेकिन माता जी जिद्द कर बैठीं, उन्होंने कहा -
"आपको बम्बई चलना ही है, नहीं तो मैं अन्न छोड़ दूंगी, मुझे इस शरीर को रखना ही नहीं है ।

अंततः गुरु जी को झुकना पड़ा और हम सब उनके साथ बम्बई आ गये । एक शिष्य ने बांद्रा में अपना एक छोटा सा फ्लैट रहने के लिए दिया, यधपि और भी कई शिष्य फ्लैट देने के लिए आतुर थे, मगर गुरुदेव ने कहा, कि आप लोगों की जिद्द पर आ गया हूं, कोई भी फ्लैट हो, मुझे तो बस माता जी की इच्छा को पूरा करना है । मई का महीना तो गुरुदेव के लिए अत्यन्त कष्टदायक था, डाक्टर ने बताया - "गुरुदेव बहुत कष्ट सहन कर रहे हैं, जिस प्रकार उन्हें कष्ट है, उस प्रकार का कष्ट इतनी सहजता से सामान्य मनुष्य तो सहन कर ही नहीं सकता ।

गुरुदेव बिल्कुल निशिचन्त थे, उनके चेहरे पर हमेशा हल्की सी मुस्कुराहट बनी रहती, हम जब उनके कमरे में जाते, तो वे मुस्कुरा कर एहसास कराने की कोशिश करते, कि मुझे कोई तकलीफ नहीं है । मगर हम समझते थे, कि वे कितने अधिक कष्ट में, कितनी अधिक व्यथा में हैं । 'डुमसिया परिवार, 'श्री गणेश वटाणी और भी सैकड़ों शिष्य गुरुदेव की सेवा करने के लिए चौबीसों घण्टे दालान में बैठे रहते, शायद घर भी नहीं जाते; मगर गुरुदेव ने कभी किसी से कुछ कहा ही नहीं, जब भी किसी ने कुछ कहा, तो यही कहा, कि मुझे कोई कष्ट है ही नहीं ।

मैंने एक दिन हिम्मत करके पूछलिया - "गुरूदेव ! आप तो समर्थ हैं, आप तो इस बीमारी को एक सेकेण्ड में ही समाप्त कर सकते हैं ।
उन्होंने उत्तर दिया - "यह कष्ट मेरा नहीं है, यह तो पिछले चालीस सालों से शिष्यों का घनीभूत कष्ट है । उनका जो कष्ट मैं अपने ऊपर लेता गया, वह धीरे-धीरे इकटठा हो इतना घना हो गया, कि उस कष्ट का निराकरण और निवारण आवश्यक हो गया.... और यह पीड़ा तो है ही, मैं मनुष्य हूँ, मुझमें सहन करने की हिम्मत है, मैं सहन कर लूंगा ।
पांच दिनों बाद डाक्टर ने कहा, कि इन्हें अस्पताल में ले चलना होगा और पूरे खून का परीक्षण करना होगा, मगर यह क्रिया अत्यधिक कठिन होगी और दो-तीन घण्टे की होगी, जबकि गुरुदेव तो काफी कमजोर से दिख रहे हैं । हम सब चिनितत होगये, माता जी से सलाह ली, माता जी गुरुदेव के पलंग पर बैठ गईं और उनका हाथ अपने हाथ में लेलिया, उनकी आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे ।

गुरुदेव ने धीरे से आंख खोल कर कहा - "क्या बात है? क्योंरो रही हो? यह तो थोड़ा सा कष्ट है, यह तो समाप्त हो ही जायेगा.... और मुझे तो कहीं कोई कष्ट अनुभव नहीं हो रहा है।
माता जी बोलीं - "डाक्टर कह रहे हैं, कि पूरे शरीर के खून को निकाल कर देखना पड़ेगा, मगरयह प्रक्रिया अत्यन्त कष्टप्रद है।
गुरुदेव इतनी कमजोरी की अवस्था में भी पलंग पर बैठ गये, उन्होंने कहा –

"बस इतनी सी बात है, मैं अभी चलता हूँ, शरीर के खून का एक-एक कतरा निकाल लें, इतनी छोटी सी बात के लिएविचलित होने की जरूरत ही क्या है? इस घटना की अपेक्षा तुम्हारे आंख के आंसू ज्यादा मूल्यवान हैं, इन्हें आंखों की कोर में ही रहने दो, बाहर मत निकालो।
- और वे वापिस पलंग पर लेट गये।
तीसरे दिन वे अस्पताल पहुँचे, डाक्टरों ने तैयारी की और मशीन लगाकर 'डायलिसिस आरभ किया। डायलिसिस अत्यन्त यंत्रणामय होता है, दु:खदायी होता है, क्यांकि आसपास के दो-तीन लोग, जिनका डायलिसिस हो रहा था, वे रो रहे थे, तड़फ रहे थे, बेचैन हो रहे थे - मगर गुरुजी अत्यन्त शांत चित्त लेटे हुए थे, ऐसा लग रहा था, जैसे शांति से नींद ले रहे हों। डाक्टर भी आश्चर्यचकित थे, कि इस आदमी में इतनी हिम्मत कैसे है? चेहरे पर पीड़ा का भाव ही नहीं। वे चिनितत होकर मशीन की तरफ देख रहे थे, मशीन तो बराबर कार्य कर रही थी; गुरुदेव के चेहरे की तरफ देखा, तो चेहरा निर्विकार था।
तीन घण्टे तक यह क्रिया होती रही और डाक्टरों ने गुरुदेव से कहा - "आप कुर्सी पर बैठकर लिफ्ट तक चलें।

उन्होंने कहा - "क्यों? पैरों से चल कर आया हूँ तो पैरों से चल कर ही लिफ्ट तक जाऊंगा, व्हील चेयर की जरूरत ही कहां है ....

और हमने देखा, कि डाक्टरों के लाख मना करने के बावजूद भी वे एकदम से पलंग से उठ खड़े हुए और हल्के से लड़खड़ाते कदमों से ही सही, परन्तु पूरा कारीडोर पैदल पार किया और लिफ्ट से नीचे उतर गये और कार में जा बैठे।
हम सब घर पहुंचे, मगर कष्ट अभी कम नहीं हुआ था; वे लेटे हुए जरूर थे, उनके चेहरे पर कांतिथी, मुस्कुराहट अवश्य थी, मगर उस कांति और मुस्कुराहट के पीछे भयंकर पीड़ा के भाव को भी हम अनुभव कर रहे थे; मगर होठों में किसी प्रकार की थरथराहट नहीं थी, आंखों में किसी प्रकार की नमी नहीं थी, चेहरे पर किसी प्रकार के थकावट के चिन्ह नहीं थे, ललाट पर किसी प्रकार की कांतिहीनता नहीं थी,

जबकि माता जी बहुत तनाव में थीं।
अधिकांश शिष्यों को कह दिया गया, कि आप केवल शाम की आरती में ही आया करें, दिन भर यहां नहीं रहा करें, क्योंकि आसपास के लोगों को आपकी उपसिथति से तकलीफ होती है।

सभी शिष्य विवश हो गये, किन्तु चिलचिलाती धूप में भी बाहर सड़क पर या फ्लैट के बाहर जो बगीचा होता है, वहां खड़े रहते, एकटक उस खिड़की की तरफ देखते रहते, जहां गुरुदेव लेटे रहते थे, एक-दो नहीं, सैकड़ों लोग..... तनाव से, चिन्ता से, थकावट से और उन परेशानियों से तीसरे दिन माता जी बीमार पड़ गईं, ऐसा लगा, कि जैसे पीलिया सा हो गया हो, यह एक नई समस्या पैदा हो गई थी । डाक्टर को बुलाया गया, डाक्टर ने खून टेस्ट किया और कहा, कि इनको अस्पताल में भरती कराना ज्यादा ठीक रहेगा ।
डाक्टर चले गये, माता जी ने कहा - "मुझे अस्पताल में ऐसे समय में भर्ती नहीं होना है ।

माताजी से भी अत्यधिक कष्ट गुरुजी को था, मई महीने की चिलचिलाहट भरी धूप, गर्मी, उमस, घुटन, चलने की शä निहीं, पूरी पीठ पर फफोले से हो आये थे, पूरे शरीर में छोटे-छोटे चिकत्ते से हो गये थे और डाक्टरों ने कह दिया - "चौबीस घण्टों में एक गिलास से ज्यादा पानी पीना ही नहीं है ।

कुछ कल्पना ही नहीं की जा सकती थी, कि गुरुदेव कितने अधिक कष्ट में हैं, कितनी अधिक पीड़ा में हैं, कितना अधिक तनाव झेल रहे हैं? इधर माता जी का स्वास्थ्य कमजोर होता जा रहा था, वजन गिरता जा रहा था, तेजी के साथ वजन गिरते देखकर हम चिंतित हो रहे थे, एक दिन सायंकाल तो उनमें उठने की शक्ति नहीं रही, दूसरे सभी शिष्यों को गुरुदेव ने मना कर दिया, कि आप लोग नहीं आयें । सिर्फ मैं और मेरे पति और गुरुदेव के परिवार के सदस्य - हम कर ही क्या सकते थे, विवश से देख रहे थे ।
गुरुदेव ने कहा - "आपको अस्पताल में भरती हो जाना चाहिए । किन्तु माता जी ने कहा - "आपको छोड़कर मैं अस्पताल नहीं जाऊंगी ।
हम में इतनी हिम्मत भी नहीं थी, कि हम माता जी की जिद्द तोड़ते या गुरुदेव से कुछ कहते ।

पन्द्रह मिनट बाद गुदेव ने मुझसे कहा, कि माता जी का कष्ट मुझे अपने ऊपर ले लेना चाहिए, अगर माता जी अस्पताल नहीं जातीं, तो मुझे उनका सारा कष्ट भोग लेना चाहिए ।

मैंने कहा - "आप यह क्या कह रहे हैं? आप स्वयं इस घोर कष्ट में हैं और चौबीस घण्टों में केवल 200 मिली लीटर पानी पीकर दिन काट रहे हैं, ऊपर से इतनी गर्मी है और आपका शरीर कमजोर, दुर्बल..... और आप कह रहे हैं, कि माता जी की बीमारी मैं अपने ऊपर ले रहा हूँ ।

उन्होंने कहा - "मुझे भोगने दे, जो भोगना है, और मुझे इसी जीवन में भोग लेना है, यदि शिष्यों का है, तब भी और इससे भी सौ गुना ज्यादा भोगने की हिम्मत मैं रखता हूँ।

हम सब अवाक थे और सोच रहे थे, कि यह क्या हो रहा है? शाम का समय था ही, भगवान की आरती समाप्त हो गई और दो-चार-बचे-खुचे शिष्य भी अपने घरों को लौट गये थे। गुरुजी और माता जी कमरे में अकेले थे। गुरुदेव उठे और माता जी के पलंग पर जाकर बैठ गये। माता जी अत्यन्त कष्ट में थीं, शरीर पीला हो गया था, आंखों में पीलापन साफ झलक रहा था, अत्यधिक रुग्ण लग रही थीं। गुरूदेव ने माता जी का हाथ अपने हाथ में लिया और धीरे-धीरे हाथ को सहलाने लगे.... यह कैसा दृश्य था.... अदभुत, अनिवर्चनीय दृश्य था, जिसे देखना भी एक सौभाग्यदायक क्षण था, मगर अन्दर ही अन्दर दुःखदायी भी था।

गुरुदेव ने कहा - "क्या बात है? रो क्यों रही हो, कमजोर क्यों हो रही हो? जब जीवन के प्रारम्भ से लेकर आज तक इतना दुःख भोगा है, तो यह दुख भी भोग लेंगे, मिल कर भोग लेंगे और इसके लिए रोने की, परेशान होने की जरूरत नहीं है, तुम्हें इतना काम करना ही नहीं चाहिए। ....और धीरे-धीरे माता जी की पीठ सहलाने लगे। माता जी की आंखो से आंसू उमड़ आये, हिचकियां सी बंध गई और सुबकने लगीं।

गुरुदेव नेकहा - "तू पागल हो गई है। मैंने तेरे साथ अगिन को साक्षी रखकर फेरे लिये हैं और कहा भी है, कि सुख में और दुःख में साथ रहेंगे -फिर तो तुम्हारा दुःख मेरा दुःख है, तुम्हारा कष्ट मेरा कष्ट है, तुम्हारी पीड़ा मेरी पीड़ा है, तुम्हारी वेदना मेरी वेदना है; तुम्हारी आंख में आंसू आने ही नहीं चाहिए। ....और गुरुदेव एकटक उनको देखते हुए उनके हाथ को अपने दोनों हाथों मे रख सहलाते रहे, मुझे लगा शायद उस क्षण अगिन के फेरों से लेकर आज तक का सारा दृश्य आंखों के सामने घूम गया होगा। लगभग एक घण्टा हो गया, जबकि डाक्टरों ने कहा था, कि गुरुदेव को दो मिनट भी बैठे नहीं रहने देना है, सोने ही देना है, बैठेंगे तो समस्या बहुत बढ़ जायेगी; मगर एक घण्टे से ज्यादा हो गया, दरवाजा थेड़ा सा खुला हुआ था और हम सुबकते हुए यह दृश्य देख रहे थे,

हमें क्या पता था, क गुरुदेव माता जी के शरीर पर हाथ फेरते हुए उनके शरीर का कष्ट स्वयं के ऊपर ले रहे हैं, एक क्रिया कर रहे हैं; हम तो सोच भी नहीं सकते थे, कि इतना कमजोर व्यक्तित्व इतना चटटानवत हो सकता है, कि वह दूसरों के दुःख को अपने ऊपर ले सकता है। .... और एक घण्टे बाद, माता जी को समझाने के बाद गुरुदेव उठने लगे, मगर उठते-उठते बोले - "तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, मैं तुम्हारे साथ में हूँ, प्रति क्षण, प्रति पल, सुख में और दुःख में, मुझसे पहले तुम्हारे प्राण जा ही नहीं सकते, तुम्हें कष्ट हो ही नहीं सकता, मैं हर क्षण तुम्हारे साथ में हूँ और तुम्हारा हूँ, आज के बाद तुम्हें तकलीफ होगी ही नहीं। ....और धीरे से माता जी ने आंखें खोलकर देखा, गुरुदेव ने उनकी हथेली को अपनी हथेली के बीच हल्के से भींचते हुए कहा –

" अग्नि को साक्षी मानकर तुम्हारा वरण किया है, सही अर्थों में तुम मेरी पत्नी हो और मेरे दु:ख भरे क्षणों को मुस्कुरा कर सहा है । यह मेरा धर्म है, यह मेरा कत्र्तव्य है, कि मैं तुम्हारे सारे दु:खों को अपने ऊपर ओढ़ लूं, क्यांकि मैं पुरूष हूँ और पुरूष दु:खों को सहन कर सकता है, वहन कर सकता है ।

...और उठ कर नीचे चटाई बिछाकर धीरे से लेट गये ।
गुरुदेव को जमीन पर लेटते हुए देख माता जी ने धीरे से कहा - "यह आप क्या कर रहे हैं?
गुरुदेव ने कहा - "मैं जो कुछ कर रहा हूं, ठीक कर रहा हूं ।

हम सब दालान में उन दोनों की धनीभूत पीड़ा का एहसास कर रहे थे, उनकी वेदना को अनुभव कर रहे थे और सुबक रहे थे, सोच रहे थे, कि ये क्या व्यक्तित्व हैं, कितने महान व्यक्तित्व हैं, कितने अदभुत व्यक्तित्व हैं, कि इतना घोर कष्ट झेलते हुए भी माता जी की सारी बीमारी अपने ऊपर ले ली है और उनको एहसास तक नहीं होने दिया, ऐसा पुरूष तो दूसरा पैदा हो ही नहंी सकता - ये तो अपने आपमें हिमालय से भी दृढ़ और आकाश से भी ऊंचे हैं । और दूसरे दिन हमने देखा, कि जैसे माता जी को कभी कोई बीमारी हुई ही नहीं थी ।

जब दस बजे डाक्टर आये और माता जी को देखा, तो आश्चर्यचकित रह गये, कि ये इतनी जल्दी ठीक कैसे हो गईं, एक रात्रि में ठीक होना तो असम्भव है, महीने भर इलाज कराने पर ही ये ठीक हो पातीं, जबकि केवल बारह घण्टों में ही ये आराम से चल-फिर रही हैं, खाना खा रही हैं, काम कर रही हैं । डाक्टर ने पूछा भी - "यह सब कैसे हो गया? लेकिन हम उनको क्या समझाते ।

डाक्टर गुरुदेव के कमरे में पहुँचे, तो देखा, गुरुदेव शांति से पलंग पर लेटे हुए हैं, शायद उन्हीं नींद आ गई थी, डाक्टर ने उन्हें जगाना उचित नहीं समझा और आश्चर्य का भाव लिये, चकित से लिफ्ट से नीचे उतर गये । यह घटना कोई छोटी घटना नहीं है, यह एक पूरे जीवन की कहानी है, एक गृहस्थ के जीवन का ज्वलन्त उदाहरण है, अपने आपमें अदभुत दृश्य है, एक रोमांचक क्षण है, जो हमारी आंखों के सामने से गुजरा है और इन क्षणों की तुलना तो करोड़ों-करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से भी नहीं हो सकती । हमने देखा है, कि वे आकाश से भी ऊंचे और हिमालय से भी दृढ़, कठोर, हिम्मतवान, हौसलावान व्यक्तित्व है, ।

वास्तव में ही गुरुदेव एक अदभुत, अनिवर्चनीय व्यक्तित्व है,, इनके व्यäतिव का वर्णन करना पूरे ब्रह्माण्ड का वर्णन करना है । इन जैसे दिव्य व्यक्तित्व को प्रकृति हजारों-हजारों वर्षों बाद पृथ्वी लोक में जन्म देकर प्राणी मात्र को सौभाग्य प्रदान करती है। इनके शिष्यत्व को प्राप्त करके हम सभी धन्य हैं, गौरवान्वित हैं । हम सभी की अभिलाषा यही है, कि इसी तरह इनके चरणों की सेवा करते हुए इन श्री चरणों के रज कणों को अपने मस्तक पर लगाते रहें तथा पावनतम बने रहें ।

****

SADGURUDEV-PRASANG

In 1992 Sadgurudev was feeling some problem in his stomach and slowly and slowly this problem grows. In march navratri we all are watching that Sadgurudev slowly slowly appearing weak and his body weight getting down and he start taking rest in between speaking. Taking more rests while speaking a little, but he never said this to any one, ,this what I feels that even the problem all round circled him, and no matter what the worst situation comes but he never speak about them, silently bearing all that pain , and continuously drinking poison of situation but silently bearing all type of pain said nothing.

We asked him - you are appearing much weaker comparing to earlier, you previously give pravchan continuously for 2 to 3 hour without taking any rest but now taking rest between every 15 -20 minit, this means definitely any pain or tension you are undergoing but not expressing to us .

What I found that for a minit he want to say but he controlled himself and again speaks with smile , what is wrong is with me. Everything is fine and if some thing happens that , too with my body

Bhagvaan shri krishn has said when cloths get old and torn than we changed that

Like that wise people have the same feeling towards their body and this body one day get like the clothes and this soul leave the old body get a new one….. and he stand up and leave all us who I s sitting the room .

We are all 7/8 very close disciple who was sitting with him, get shocked that what this Sadgurudev has said, are he started the process of leaving this body: are he is doing the process of that ? than why he said that shloka , will he leave us ,

And if he leave than how can million of his shishy will live they can not imagine to live without him for a second. When he said that shloka , I really get shocked , what I felt that , why not I am finish on that moment but this was not only mine feeling but all of us feeling the same.

And made up mine mind, come what may , but I have to be with my Gurudev each second, we get fatherly love form , so much closeness , so much sneh than we both husband and wife decide that we will be with Sadgurudev in every moment in each second.

But till April his pain was so much increasing may be some kidney infection,, at that time there was a shivir organized in Gujarat, Gurudev reached there from Mumbai but we are watching that Sadgurudev color becoming yellowish and he forcefully using his body. But he does not make a impression to shishy that he is in such a pain but we decided that we have to move to Mumbai for Sadgurudev complete medical checkup,

mataji ,nandkishor ji and we all request that may we you do not need all of us but we definitely need you. You have to go with us Mumbai.. but he is not ready..

He replied .. I have not have any problem.

But mataji ji keep on saying you have to go Mumbai other wise I also left food and water and leave this body.

So at last we all with him reached to Mumbai. One of his shishy offered his small flat for Sadgurudev staying. Even some more shishy's are willing to do , he said that I came here just because all of your so much pressure of ma here because i have to fulfill mataji desire,

The month of may pass very hard for him regarding health condition, even doctor says that its very painful to bear such a pain, a normal common person can not bear this , but it s very strange how Gurudev patiently bearing this.

Sadgurudev was very confident a mild smile always on his divine face., whenever we visited inside the room, he always assure that nothing wrong with him but we all know that how much pain the Sadgurudev was undergoing.

"Dumasia family""shri ganesh vattani" and hundreds of the shishy always sitting in the lounge for Sadgurudev ji may if any thing we needed. and they not usually went to home, Sadgurudev never said to anything to them. If some one say something to him . he simply replied , there is nothing wrong is my body.

One day on getting courage I asked to Sadgurudev why you are bearing this trouble, you are much capable ,and within a second you can get healed from this illness..

He replied: this pain is not mine, this the cumulative condense pain of past 40 years of shishy's. That slowly slowly I am taking from them , now become so much condense that i need to clear that .. and yes there is pain but if I am a manav and have capacity to bear than I will bear.

After 5 days doctor advised him that he has to go to hospital from complete blood examination this is very difficult process and required 2/3 hour but Sadgurudev ji looking very weak, we all are very worried , so asked advice from mataji , mataji sit very nearer to Sadgurudev and take Sadgurudev hand in her hand and tears starts flowing from her eyes

Sadgurudev very slowly opened his eyes , =what is the matter , why are you crying, this is small pain and will be gone ,..and I am not feeling any pain.

Doctor said mataji spoke- that complete blood has to be take out and this process is very much trouble some.

Sadgurudev in spite of so much illness sit on the bed and said " just such simple things, I am ready to just now, they can examined each particle , why to worry to worry for such small things. Your tears are much more valuable, keep this inside your eyes,"

And than he again rest on the bed,

On the third days he reached hospital and through machine dialysis process start, this is very tough and very painful two or three person who are undergoing this are cry become very impatient, but Sadgurudev laying on the bed with so ease alike sleeping . even doctor amazed to see this. How can this person bear such a pain, no sign of any pain visible on the Sadgurudev face. Machine are doing the work but Sadgurudev face showing no sign of any discomfort.

Three hours this process happened after that doctor asked Sadgurudev take chair to reach nearer to the lift, Sadgurudev replied why to take chair , if I came here on my feet than I can go back too,, we all watched witched this even little bit having problem Sadgurudev crosses the whole passage and reach near to the car,

When we reached the home still pain is not vanished he is lying on the bed but having divine radiance on his face and smile , we can understand that the pain he is feeling,, no sign of any stress but mataji feels a lot tension.

And after all the shishy has been advised kindly visit here only on the between aarti and plz do not stay here all the day since families of other patients often get trouble,, now on this agya what the shishy can do they move to near by park , where they are waiting and see the window of the room , not one or two but hundreds of the people

Due to this tension/stress , continuously worries mataji 's health also get some complication and doctors advised her to go for hospital complete test ,

But matajis replied when Sadgurudev ji in such a condition I do not need to get admitted in hospital.

But Sadgurudev ji is facing much trouble , on point such a very bitter heat of month of may, no power to walk , so much humidity, and on because of continuously laying on the bed so many wounds are appearing on his back, and doctors said he can drink only one gilas of water par day.

One cannot imagine how much the pain Sadgurudev is bearing ,how much stress he is bearing, here mataji 's health is also decline , her body weight is also decreasing , we are also very worried to see that, and one days she was unable to even stand up ,and Sadgurudev also instructed to other shishy's not to come.

Here only myself and mine husband and some of the Sadgurudev family/relatives left , but what we both can do , watching all thses helplessly.

Sadgurudev asked her to admit in the hospital but she replied , "I can not leave you"

we all have not courage to say something contrary to mataji's wish or Sadgurudev.

After 15 minits Sadgurudev told me that I would take the suffering/illness of mataji's , is mataji is not wiling to go hospital than all her suffering i will bear and felt.

I said- what are you talking about you are here in such a intense pain and only taking one gilas of water in whole day , in such heat and your body is in such weak condition.. and still you are saying that you are taking mataji's illness upon you.

He relied- I would bear what I have to , and this is too in this life, and even if it is belongs to shishyas than I will bear hundreds times of that , I am having such a courage.

We all are shocked, thinking that we is this going on,

In the evening time , aarti comes to end and remaining 2-4 shishyas also went to their home, Sadgurudev and mataji is in room alone. Sadgurudev stand up slightly and sit on the matajis bad, matajis is in such intense pain her bodies color also turned to yellow ,looking very ill, Sadgurudev ji take her in his hand slowly slowly having his hand on her hand.,…what that séance was..really unspeakable, watching that is also a great luck but inside very painful too.

Sadgurudev told her- what is the matter , why are you weeping ,why are you too becoming too weak from the beginning of this life to till this we have suffered a lot than we will bear all this together, for that not to weep a not to get so much stressed, you should not do such a tense work.

And slowly slowly softly moving his hand on her back, tears starts flowing her eyes and her voice get choked because of emotion ,

Sadgurudev told her – are you getting mad, I have taken seven holy round of fire and said that we are with in happiness and sorrow than all your sorrow is mine, all your stress I s mine and all your suffering is mine , than no tear should come out of your eyes.

.. and Sadgurudev watching continuously her and slowly slowly softly moving his hand on her hand it seems that whole life from that seven agni fere to till date all that has been passes from his eyes.

Approx, 1 hours has been passed, doctor already told us that Sadgurudev should be sit even for 2 minits, otherwise e his illness can be worsen. But here is more than a hour passed , we are watching from the door which is slightly open and we are have tears in our eyes, cannot not imagine that though moving hi s hand on her hand Sadgurudev taking her illness on himself, can not imagine that even such a weak health condition this person has a courage , and still willing to take the pain.

After one hour Sadgurudev stand up from there, and spoke that – you need not worry about that , I with you each and every moment, your soul can not gone before mine, you will not feel any pain , am with you and I am yours and after this day you will not feel any pain.

And when matajis slowly open her eyes , Sadgurudev pressing her palm from his palm and- I have accept you in the witness of holy fire you are in real sense mine wife and you faced mine sorrowful moment with smile , so this is mine responsibility , that I will bear all your pain, since I am the purush and it's the purush that can bear the pain,

And very slowly opened a mat on the floor an d laying on that.

Seeing all this mataji ,matajis told him- what you are doing

Sadgurudev replied, what I am doing I know that is right.

In the lawn we all are sitting can feel the pain , and thinking that what is this person/personality , how much heighten his personality. Even bearing such pain , still take all the matajis illness, and no one understand this, no other such a person can born again.

He is stronger than the Himalaya and heighten than sky.

And second days we all have seen that it seems suppose no illness ever came on matajis.

Doctor when visited at 10 o clock can not believe that how that becomes possible , in a night she is completely recovered , for that she at least have to go one month complete treatment , and she start taking food, and he asked - ho w this can happens.

But what we can give explanation.

When doctor see the Sadgurudev laying on the floor very silently as it seems that he is under sleep , and doctor think not to get disturb him moved back.

This is not a very small incident , the whole life story, a great example of house hold life, an amazing moment and that has been passed in front of out eyes, and noting can comparison this movement even million of million gold coin too.

We had seen Sadgurudev is mightier and stronger than the Himalaya and what a courage of a person.In real sense , Sadgurudev is such amazing/mightier personality that even describing about him Is like describing whole universe., and such divine appear on some thousand years to bless the human like us,,

we all are blessed to have his shishyta , proud to became his disciples. And praying that we all having such a an opportunity to serve him and apply the dust of his holy feet, on our forehead , and became holier,

From Mantra Tantra yantra vigyan August 1996

SHRI lakshmi vinayak PRAYOG

भगवान गणपति के वरदायक स्वरुप को घर में स्थापन करा सकने में समर्थ तीव्र प्रयोग

बुद्धि के पक्ष को कभी भी हम अनदेखा नहीं कर सकते हैं, क्योंकि जो भी हमें जीवन में उच्चता मिली हैं या मिलती ही उसमे इसका भीएक बहुत बड़ा हिस्सा होता ही हैं उदाहरण के लिए मानलीजिये आपके पास से कहीं से एकसाथ रुका हुआ स्वर्जित घन या बिं अर्जित धन लाटरी जैसे माध्यम से आ भी गे तो और अब आप उसे सही और व्यवस्थित ढंगसे अपने जीवन में उपयोग नहीं कर पाए तो पुनः अपनी प्रारंभिक स्थति में जाने में कितना समय लगता हैं इस लिए प्राचीन आचार्यों ने तंत्रज्ञों ने कहा की यदि लक्ष्मी तत्व जरुरी हैं तो उससे भी कहीं ज्यादा जरुरी हैं की भगवान गणपति का वरदायक स्वरुप का घर में स्थापन .

एक बात हमें भी याद रखना चहिये कि साधनाओ को अलग अलग करके नहीं देख जाना चहिये क्योंकि जीवन के सारे पक्ष एक दुसरे से जुड़े हैं और इसी तरह साधनाए भी एक दुसरे से जुडी ही रहती हैं क्यों की जीवन को एक सम्पूर्णता की दृष्टी से ही देखना पड़ता हैं और चाहिए भी और उसमे हर पक्ष का अपना एक अलग ही अर्थ हैं.

ध्यान :

दंता भये चक्र दरौ दधानं कराग्रगस्वर्णघटं त्रिनेत्रं |

घृताब्जया लिन्गितमब्धीपुत्र्या लक्ष्मीगणेशं कनकाभमीडे ||

मंत्र :

ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्व जन में वशमानय स्वाहा ||

यदि आपके पास कोई भी लक्ष्मी गणेश प्रतिमा हो या लक्ष्मी गणेश यन्त्र हो तो उसको सामने रख कर यह सारी प्रक्रिया करे और बाद में उसे अपने पूजा स्थान में रख कर प्रतिदिन 108 बार उच्चारण करते चले ,और निश्चय की आपके जीवन में इन दोनो महा शक्तियों कि कृपा से और भी जीवन अनुकूल होगा ही .

****

Shri lakShmi vinayak prayog

We cannot over shadow the importance of intelligence /buddhi what we achieved till date or what we are going to achieve one of the major role in that our intelligence played. For example any how you got some your earned money that are due to some reason blocked , or got some unearned money through any reason and you are not able to use that wisely than soon you will find yourself on the previous position .

that's why our ancient masters tantra field says a that if lakshmi tatv is necessary than the ganesh tatv also have much more importance .

One should keep in mind that sadhana's should not be considered separated from each other as the many face of life are joined though a single person like a the same way all the sadhana are related to each other, since we have to see the life as its complet form, and it should be.. and each face has its own value or importance.

Dhyan :

Danta bhaye darou ddhanam karagrgswarnghatm trinetram |

Ghritabjya lingitambuddhputrayaa lakshmiganesham kanakamide||

Mantra:

On shri gam soumayay ganpaatye var vard sarv jan me vashmaanay swaha ||

If you have any combined statue of both or having lakshmi ganesh yantra , and place in front of you and do all the process and after that place that yantra or statue in your prayer room and do jap 108 times each days soon you will find relief .and your life will blessed by thses two great maha shakti.

Nikhil tatv –related amazing sadhanye

पहली बार गृहस्थ साधको /शिष्यों के लिए

निखिल शब्द कितना महत्वपूर्ण है यह तो वह व्यक्ति ही समझ सकता है जो उस प्रेम मे अभिभूत हुआ हो. जो उस विराटता का अंकन कर सका हो. जिसने जाना हो कि वह एक व्यक्ति न हो के एक सत्ता ही है जो ब्रम्हांड की गति है. जिनके सामने महान से महान तांत्रिक मांत्रिक योगी सभी नतमस्तक हो. जिनके इशारे पर देवी देवता कार्य करते है. उसी महान विराट सत्ता का एक अत्यधिक पावन नाम "निखिल" है. इस पीढ़ी का सौभाग्य है की निखिल ने अंशावतार लेकर हम सब के बीच मे रह कर हमें धन्य किया है. उन्हें देखने समझने जानने का सौभाग्य दिया है, और उनके शिष्य बनाकर एक महानतम कार्य करने के लिए अपने शिष्यों को कृतग्य किया.

लेकिन आज जो भी परिद्रश्य हमारे आसपास देखा जाता है तो पता चलता हैं की इस पवित्र नाम से राजनीति करने तक लोग नहीं चूके तो आश्चर्य होता है की लोग आखिर कब समझेंगे की निखिल तत्व का अर्थ क्या है.?? क्या अर्थ है सदगुरुदेव शब्द का. यहाँ कई व्यक्ति इस "सदगुरुदेव " शब्द को अपने नाम के आगे लगाना चाहते है. इन व्यक्तियो को तो छोडो उनके शिष्यों ने तक उन्हें नहीं समझा.

किसी को स्वप्न के माध्यम से दर्शन हुए तो दुखी है की प्रत्यक्ष नहीं आए. किसी को अन्तश्चेतना मे दीक्षा प्राप्त करने की विधि दी जा रही है तो कहते पाया गया की नहीं वो प्रत्यक्ष हो के ही दीक्षा दे. कोई कहता है की मुझे उनके साथ घूमने जाना है? सौभाग्य की चरम सीमा होती है जब उनकी अमीद्रष्टि किसी पर पड़ती है. लेकिन एक बार भी अपने अंदर झांक के ये नहीं देखता है की हम ने आखिर ऐसा किया ही क्या है की उनके चेहरे पर एक स्मित मुस्कान आए, आखिर उनकी कृपाद्रष्टि को स्वीकार न कर के अपने नियम उन पर लादना और बाद मे उसे सदगुरुदेव के तरफ का प्रेम का नाम देना !

हकीकत तो ये है की ज्यादातर अंधीदौड मे लग गए है की उसको ऐसा मिला तो मुझे भी चाहिए, वो श्रेष्ठ है तो मुझे भी बनना है उसने ये किया है तो मुझे भी करना है; उनको सदगुरुदेव ने ऐसे दिया तो मुझे भी वैसे ही चाहिए और यह सब क्या है...प्रेम? एक बार खुद से ही यह प्रश्न ज़रूर पूछिएगा.

खेर, जैसे की पहले भी कई बार कहा जा चूका है इष्ट का अर्थ होता है की वह सत्ता की तरफ समर्पण जिसे हम ब्रम्हांडीय सत्ता कहते है या मानते है. वह कोई भी हो सकता है देवी देवता या गुरु भी. इसी क्रम मे निखिल को इष्ट स्वीकार कर कई प्रकार की नयी साधना पद्धतियो का प्रचलन हुआ, जो की मुख्य रूप से श्री निखिलेश्वरानंद से सबंधित रही है. यह साधनाए ज्यादातर सन्यासी शिष्यों के मध्य प्रचलित रही है. श्री की प्राप्ति तथा श्री तत्व की प्राप्ति के लिए भी कई साधनाए प्रचलित रही है.

जो की सदगुरुदेव से कई बार प्रार्थना करने पर उन्होंने प्रार्थना को स्वीकार कर अपने सन्यासी शिष्यों के माध्यम से प्रदान की. उन्ही अत्यधिक महत्वपूर्ण साधनाओ मे से श्री सायुज्ज साधनाओ के क्रम मे कुछ साधनाए मे आपके सामने रख रहा हू जो सभी साधना के लिए सामान्य नियम कुछ इस प्रकार है

- साधना रात्री काल मे १० बजे के बाद करे
- जप स्फटिक माला से हो. वस्त्र व् आसान सफ़ेद रहे. दिशा उत्तर हो.
- रोज मंत्र जप की संख्या व् समय एक ही रहे
- यथासंभव एक समय हल्का आहार, कम वार्तालाप, भूमि शयन तथा ब्रम्हचर्य का पालन करे.
- साधना के बाद माला को एक महीने तक धारण करे और उसके बाद माला विसर्जित करे.

आप इन साधनाओ मे से कोई भी साधना कर सकते हैं पर जिस क्रम से दिए गयी हैं उसी क्रम से करने पर ज्यादा लाभ , ज्यादा सफलता की प्राप्ति होती हैं .

NIKHIL TATV –ADBHUT SADHANAYE

The importance of the word Nikhil could only be understood by those who have gone through the love of the same, those who have been able to understand wideness of this word. Those who knew that he is not just a person but a controlling power with which this universe is running. In front of whom the biggest tantric and mantrik all are bowed, on whose order god and goddesses works.

That supreme power’s holy and sacred name is Nikhil. This era have a boon that Nikhil took anshavatar and staying with us he obliged us, he gave us fortune to see understand and know him and by blessing us with a title of his disciple he spread love in the form of noble task. But today it is very sad and surprising to see people using this holy name for their politics around us will a time came when they get to know what does Nikhil tatva means? What does the term SadGurudev means?

Here so many people want this title in front of them. Leave those cheap, but disciples even did not bother. If someone gets his glimpse in the dream they are sad that he didn't came bodily! If someone is given a procedure to have initiation in antaschetana then they are found telling that no, we want him to give diksha with body! Few say that we want to have travel time with him?!! It is the greatest boon when he looks at us with his holy eyes. But even once we did not looked inside us that what we have done so much that may give smile on his face,

after all not accepting his blessings but to apply force on him to do the things the way we want with our rules and after that to give it a name of our love towards him! Infact, reality is people are running blindly that he got it, I even want that, he is excellent, I even want to be excellent, they did that, I also want to do that, sadgurudev gave them this way, I also want that way and what all these things are….love? We should ask our self this question at least once.

Anyways, as many time before too had the same thing been said that meaning of the Ishta is the the devotion towards the power which we accept as basic source of energy. Ishta could be anyone god, godess or Guru. In this way accepting Nikhil as Ishta so many sadhanas came to light which are mainly related to Shri Nikhileshwaranandji.

These sadhanas have majority remained famous among sanyashi disciples. These ways, to get shree and shree tatva so many sadhana have remained famous. Which were granted and given by sadgurudev on many prays from sanyashi disciples. Among those very important sadhana; few important sadhana incorporating "Shree" are given below for which general rules remains same which are as follows.

- Sadhana should be done after 10 o'clock in night.

- Chanting should be done with sfatik rosary. Cloth and aasan should be white in colour. Direction should be north.

- Daily no. Of chantings and time should remain same

- So far as possible, follow the rules of one time light food, less speaking, sleeping on the earth and bramhacharya.

- After sadhana one should wear the rosary for one month and then should be dropped.

Sadhak is free to do any of the sadhana from above but if one do it in a sequence this remains more comfortable.

Nikhil beej shreem beej sadhana

जीवन में श्री तत्व को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए

श्री का स्थान जीवन मे अत्यधिक महत्वपूर्ण है. इस विद्या को भी महाविद्या का स्तर प्राप्त है. जीवन के चार मुख्य पक्षों मे अर्थ से सबंधित श्री अर्थात भौतिक सन्दर्भ मे धन की प्राप्ति के लिए यह साधना अपने आप मे एक विलक्षण साधना कही जा सकती है. तीन मुख्य शक्ति बीज मे "श्रीं " बीज का स्थान तो अपने आप मे साधको के मध्य ,पूर्ण ख्याति प्राप्त है इस महान मंत्र मे निखिल बीज को श्रीं बीज से सम्पुटित किया गया है. इस मंत्र का श्री पाप्ति के लिए अपना एक विशेष स्थान है.

इस साधना से साधक को श्री तत्व की प्राप्ति होती है. त्रिअक्षरी मंत्र की जितनी प्रशंशा की जाए उतनी कम है. साधक की धन सबंधी समस्याओ का निराकरण होता है.

साथ ही साथ सब से महत्वपूर्ण ये है की साधक की धनप्राप्ति के लिए उसे विद्या प्राप्ति भी होती है जिससे उसे धन वृद्धि मे भी कभी सहज ही कोई समस्या आने की संभावना नहीं रहती.

मंत्र :

श्रीं निं श्रीं

इस मंत्र का सवा लाख जाप का अनुष्ठान करना चाहिए इसके बाद इस मंत्र से शुद्ध धृत की 108 या 1008 आहुति अग्नि मे देनी चाहिए. इस मंत्र के अनुष्ठान को अधिकतम 21 दिनों मे कर लेना चाहिए

जिसके लिए पूर्ण अनुष्ठान संभव न हो उन व्यक्तिओ को इस मंत्र की रोज एक माला जाप करना चाहिए. ऐसा नियमित रूप से करने पर व्यक्ति को उपरोक्त लाभ प्राप्त होते है.

Nikhil BEEJ Shreem Beej Sadhana:

The place of Shreem in the life is important. This vidya is also having title of Mahavidya. Among the four main aspect of the life; artha related aspect's material matter is related with shreem for which this sadhana could be placed on top. In three main powers the place of beeja shreem is very famous among sadhak.

In this great mantra Nikhil beeja is merged with shreem beeja. This mantra has its own place in the sadhana of shree gaining.

With this sadhana sadhaka gets sree tatva. For this three letters mantra, appreciation is smaller word. Sadhaka's all problems related to money gets solve.

With this most important thing is sadhak gets understanding of wealth gaining with which he generally there remains almost no possibilities to get any problem in future related to this.

Mantra: **Shreem Nim Shreem**

Anusthan of this mantra should be done of 1,25,000 chanting after that one should give aahuti of pure ghee 108 or 1008 times with the same mantra. One should complete this anusthana maximum in 21 days.

Those who are not able to do this anusthan should chant one rosary daily. By repeating this on daily basis person can have the above mentioned results

Nikhil aishvary sadhaNa

ऐश्वर्य को सम्पूर्णता से प्राप्त करने की साधना

ऐश्वर्य का अर्थ है सभी दिशाओ मे सफलता तथा नित्य उन्नति. जीवन से जुड़े सभी पक्षों मे आप निरंतर गतिशील रहे तथा गति एक समान मात्र न रहकर उसमे नित्य प्रगति करते ही रहे इस हेतु ऐश्वर्य साधना करना नितांत आवश्यक है. सदगुरुदेव ने समय समय पर साधको को ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए अनेको विधान प्रदान किये है. लेकिन एक साधना ऐसी भी है जिसमे पालक देव विष्णु को सदगुरुदेव मे स्थापित मान कर सदगुरुदेव को ऐश्वर्य तत्व के प्राधान्य मान कर की जाती है. परिणाम स्वरुप सदगुरुदेव अपने शिष्यों को प्रेम भाव से ऐश्वर्य की प्राप्ति का आशीर्वचन देते है

इस साधना को करने के बाद प्रकृति एसी घटनाओ का सर्जन साधक के आस पास कर देती है की समाज मे उसका स्थान बढ़ जाता है, पारवारिक समस्याओ का निराकरण हो जाता है और एक सद्गृहस्थ व्यक्ति की श्रेष्ठ स्थिति की प्राप्ति सहज ही संभव हो जाती है.

इस साधना को करने से पूर्व साधक सदगुरुदेव से मन ही मन अनुमति ले. और साधना शुरू करे. साधना शुरू करने से पूर्व साधक को सदगुरुदेव के अंदर स्थापित विष्णु देव का मन ही मन ध्यान करे.

इस साधना मे साधक को निम्न मंत्र के 21000 जाप करने है जो की 11 दिनों मे हो जाने चाहिए. साधना के अंतिम दिन 108 आहुति इसी मंत्र से शुद्ध घी से प्रदान करे

मंत्र : ॐ निं ऐश्वर्याधिपतये नमः

यह महत्वपूर्ण साधना को संपन्न करने के बाद साधक को सदगुरुदेव की तरफ से ऐश्वर्य प्राप्ति का आशीर्वचन मिलता है.

****

Nikhil AishwAry sAdhANA

The meaning of aishwarya is daily progress and success. In the every aspects of the life one may remains active & progressive and the progress should no remain constant but keeps on growing more for that purpose one should do aishwary sadhana.

Sadgurudev have presented lots of procedure in this subject.

But there is one sadhana in which Vishnu is believed to be merged with sadgurudev and Sadgurudev a controller of prosperity with the same image sadhana is done. Resulting this; sadgurudev provide his love in the form of blessings to have prosperity.

After completing this sadhana nature creates such incident near to sadhaka that his place in the society gets increment, family problems gets solutions and easily gains the place of a gentlemen's great comfort life.

Before starting this sadhana sadhak should take permission from sadgurudev mentally and then only starts the sadhana. Before mantra chanting sadhak should meditate lord Vishnu inside sadgurudeva's image.

In this sadhana sadhak needs to do 21000 mantra chantings which should be completed maximum in 11 days. On the last day of sadhana; sadhak should give aahuti of the ghee 108 times with the same mantra

Aum Nim Aeishwaryaadhipataye namah

After accomplishing this important sadhana sadhak receives blessings from sadgurudev for prosperity

Nikhil bhagyodaya sadhana

दुर्भाग्य को हटा सकने में समर्थ एक साधना

कर्म के बंधनों से इस पृथ्वी लोक मे हमारी गति वर्तमान के रूप मे आकार लेती है. इसी क्रम मे भाग्य है जिस प्रकार से हमने हमारे कार्य इस जन्म या पूर्व जन्म मे किए है उसका उचित अनुचित परिणाम ही भाग्य का लेखा जोखा है. कई बार यु होता है की विभिन्न परिस्थिति सामने आ जाती है जिसमे कई लाभ हो सकते है लेकिन आखरी वक्त मे वह किन्ही कारणों से हम उस लाभ से वंचित रह जाते है. या फिर एक खुश हाल जिंदगी मे कई प्रकार की समस्याए अचानक ही आ जाती है. तब उद्गार निकलते है की हमारे भाग्य मे ही दोष है. तो आखिर इस भाग्य को कैसे बदला जाए?

भाग्योदय के लिए भी कई विधान दिए जा चुके है लेकिन एक शिष्य के लिए निखिल से सबंधित भाग्योदय साधना का स्थान तो दूसरे विधानों से ऊपर ही रहेगा.

इस साधना के लिए साधक को एक अखंड दीप जलना चाहिए जो की जितने दिन तक साधना चले उतने दिन तक निरंतर प्रज्वलित रहना चाहिए. अगर बीच मे दीपक खंडित हो जाए तो साधक को साधना खंडित मान कर उसे फिर से करना चाहिए

साधक को चाहिए की वह निम्न मंत्र के 60,000 जाप 21 दिन मे पूरे कर ले.

मंत्र :

ॐ निं पूर्ण गुरूवै नमः

साधना को कर लेने पर साधक के चेहरे पर एक नया तेज छा जाता है, जिस परिस्थिति की कामना की जाती है वह परिपूर्ण होती है और साथ ही साथ आगे की साधनाओ के लिए भी सफलता की संभावना को यह साधना बढ़ा देती है. साधक को मन्त्र जप काल मे सदगुरुदेव की उपस्थिति का भान होता ही है. यह साधना से भाग्य कितने भी रूठे हो, भाग्योदय होता ही है.

****

Nikhil Bhagyoday SadhaNa:

With the law of karma our present gets its form on the earth. In this way, there is a place for fate. The way we did our karmas in this or previous life the positive and negative results of those are only the calculations of fortune. Many times it happens that lots of opportunities comes to the door which can give lots of benefits but at last moments with few reasons we do not get benefit. Or in a joyful life there certainly comes bunch of troubles. At that time word automatically comes out of the mind that there is a fault in fate. So how can we change that fate?

For the rise of fortune many of the processes have already been given previously but for a disciple Nikhil related fortune rising sadhana will stay top in compare to other procedures.

For this sadhana, sadhak should light akhnada lamp which should keeps on lighting for the total days of sadhana. If the lamp lost light in between sadhak should stop the sadhana and should repeat it again from begining.

Sadhak should do 60000 chantings of the following mantra which should be completed in maximum 21 days.

Aum Nim purn Guruvei namah

Completing of the sadhana will give a new era on sadhaka's face, what so ever situation is desired could be turned in favour and with this possibilities for the success in the further sadhanas too increases. In the time duration of mantra chanting sadhak will surely feel presence of sadgurudev. With this sadhana, however the fate is infavorable, it will turn to rising fortune.

Nikhil vaibhav sadhaNa

वैभवशाली जीवन दिलाने में समर्थ एक अद्वितीय साधना साधना

वैभव का अर्थ है की जो कुछ भी हमारी न्यूनता हो उसे हम दूर करे और साथ ही साथ जो भी ऐश्वर्य हमारे पास है उसका हम पूर्ण रूप से लाभ उठा सके. वैभव साधनाओ के बारे मे सदगुरुदेव ने कहा है की अगर हमारे सामने ५० विभिन्न मिठाई हो लेकिन पेट मे दर्द है, मधुमेह है तो क्या फायदा. सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति मात्र से क्या होगा जब तक हमारे पास उसके उपभोग के लिए बल न हो.

भोग , भौतिक जीवन का एक अंग है. भोग है इसी लिए मोक्ष है. इस पक्ष को भी भली भांति समझना चाहिए और उसके लिए ऐश्वर्य के साथ ही साथ वैभव चाहिए. आप एक रेशमी कपडा लाए उसे सिलवाया लेकिन वो जब तक आप धारण ही न कर सके तब तक वह किसी काम का नहीं, अगर आप उसे धारण कर लेते है तो ही आपके उस ऐश्वर्य की सार्थकता है

वैभव से सबंधित इस निखिल साधना को समपन्न करने के लिए साधक को निम्न मंत्र के 11000 जाप 11 दिनों मे करना चाहिए. ताज़ी मिठाई का भोग लगाये तथा साधना के बाद उसे प्रसाद मे ग्रहण करे. साधना के दिनों मे गुरु चिंतन मे लीन रहे

ॐ निं कोषाधिपतये पूर्ण वैभव प्रदायमे नमः

इस साधना से साधक सभी प्रसस्त मार्ग मे विजय प्राप्त कर लेता है और भौतिक जीवन का पूर्ण रूप से उपभोग करता है.

Nikhil VaibhaV sadhaNa:

The true meaning of vaibhava is to remove all the deficiency and with that what so ever amount of the prosperity is there with us, we becomes able to have complete benefit of it. About vaibhav sadhana sadgurudev had told that if we have 50 different sweets infront of us and we have stomach pain, or diabetes then what is the use. What will happen with just gaining prosperity unless you don't have capacity to use that. Bhoga is an important aspect of material life. Moksha is there because bhoga is there. One should understand this side even and for that one needs vaibhava with aishwary. You took a fabric cloth, made a cloth out of it but if you cannot wear there is no use of it, if you can wear it then only your prosperity has a meaning

To complete Nikhil sadhana related to vaibhav one should do 11000 chantings of the following mantra in 11 days. One should offer fresh sweet in the bhoga and after mantra chanting one should have it in form of prasaad. In the sadhana days one should have maximum thoughts of gurudev.

Aum nim Koshaadhipataye purn vaibhav pradaayme namah

With this sadhana sadhak wins in every aspect and can have a blissful material life.

Nikhil tatv shrisaayujy sadhaNa

निखिल की तत्वशक्ति श्री विद्या साधना

निखिल तत्व के बारे मे लिखने की इस ब्रम्हांड मे सामर्थ्य नहीं है. जिस तत्व से निखिल गति का सञ्चालन करते है, अस्तित्व का बोध करते है वही तत्व शक्ति निखिल तत्व है. उस तत्व को समझने के बाद क्या कुछ बाकी भी रहता है? चाहे वह सदगुरुदेव से सन्देश प्राप्त करना हो या उन्ही के निदर्शन मे साधना करना या फिर सतत निखिलमय बन के जीवन को स्वर्णिम बना देना. फिर कुछ भी तो बाकी नहीं रहता.

हालाकि यह पूर्ण रूप से सन्यस्त साधना है और इसका पूर्ण विधान भी अत्याधिक श्रम साध्य और दुस्कर ही है. निखिल की तत्वशक्ति श्री विद्या है. निखिल तत्व अपने आप मे पूर्ण शिव का परिचारक है जब वह तत्व , शक्ति से गतिशील होता है तो वह शक्ति श्री विद्या के रूप मे सामने आती है. इस देव दुर्लभ साधना का एक लघु विधान सभी भाई बहिनों के मध्य रखना चाहूँगा

इस साधना के लिए साधक का पूर्ण ध्यान व् समर्पण सिर्फ और सिर्फ मात्र सदगुरुदेव निखिल की तरफ होना चाहिए. यह साधना 30 दिनों की है जिसमे हर रोज 11माला मंत्र जाप करना चाहिए, अगर साधक चाहे तो 21 माला मंत्र जाप कर सकता है.

निं पूर्ण सिद्धिं निं श्रीं निखिलेश्वराय नमः

इस साधना का महत्व शब्दों मे नहीं आँका जा सकता सिर्फ इसे महसूस ही किया जा सकता है ठीक कोई मिठास, सुगंध या मनोहर द्रश्य की तरह.

(साधक इन साधनाओ मे से किसी भी साधना को कर सकता है लेकिन इसे क्रम मे करने पर ज्यादा उचित है)

****

Nikhil tatv shree saayujj sadhana:

There is no one capable in the universe to write about Nikhil tatva. The tatva with which Nikhil controls the powers, can form a realization, that tatva power is Nikhil tatva. Is there anything left after understanding that tatva?

Rather it is about receiving messages from sadgurudev or to do sadhanas in his personal guidance or to dissolve you in Nikhil and to make the life real worth. Nothing remains left.

However the sadhana is completely sanyast sadhana and the complete procedure is also rare and hard work intensive. Tatva shakti of Nikhil is srividya. Nikhil tatva is completely shiv in its form and when it becomes charged with power; the power comes in the form of shrividya. I would like to place a small procedure of this rare sadhana in front of all brother sisters.

For this sadhana; sadhaka's total concentration and devotion should remain on sadgurudev Nikhil only. This sadhana is for 30 days in which daily 11 rosary of mantra chantings should be done. If sadhak wishes they even can do 21 rosary chantings

Mantra:

Shreem nim purn siddhim nim shrim nikhileshwaraay namah

The importance of this sadhana could not be described in the words but could only be felt like sweetness, fragrance or an attractive scenario

Astrology- Numerology

अंक विज्ञानं की कुछ बातें

ज्योंतिष के कितने अधिक आयाम हैं या कितनी अधिक उचाई संभव हो सकती हैं हम कभी समझ ही नहीं पाए , हाँ यह जरुर कर लिया की कुछ किताबे पढ़ कर अपने आपको ही सब कुछ मान कर बैठ गए , सदगुरुदेव ने भी कभी कहा था की वे सोचते थे कि कोई तो इन प्रारंभिक ज्ञान की बाते पढ़ कर उच्चस्तरीय बाते के लिए सामने तो आता और कहता कि हमें उस उच्चता पर जाना हैं पर ,,,,,

साथ ही साथ यदि आप परम गुरुदेव का पत्र जो उन्होंने सदगुरुदेव को लिखा था इसे आप " तांत्रिक सिद्धिया " में पढ़ सकते तब आप समझ पाएंगे की ज्योंतिष विज्ञानं के लिए उनके मन भी कितनी उच्चता रही हैं,

हम इन लेख माला में कुछ ऐसे ही विषयों की ओर आपका ध्यान करवाते रहे हैं, हाँ यह जरुर हैं कि इसे मात्र एक उच्चस्तरीय पाठक और विद्वानों के लिए ही नहीं लिखा जाये बल्कि सामान्य भाई बहिन भी कुछ तो समझ सके ... जान सके , ,,फिर धीरे धीरे इन विषय से सम्बंधित उच्च स्तरीय बाते भी सामने आती ही जाएगी क्योंकि इस पथ पर अभी तो हम प्रारंभिक कदम ही उठा रहे हैं.

और इस विज्ञानं में कदाचित सरल सा लगने वाला विज्ञानं हैं अंक विज्ञानं,,

जो भी बाते मैं लिख रहा हूँ उनको और अच्छे से समझने के लिए आप सदगुरुदेव द्वारा लिखित "अंक दीपिका" और " अंक ज्योतिष" किताबे पढ़ कर अच्छी तरह से आत्मसात कर सकते हैं .

इस विज्ञानं के लिए आपको कोइ ज्यादा उच्चस्तरीय गुणा भाग नहीं करना पड़ता हैं सिर्फ साधारण जोड़ करते बनता हो बस इतना ही अधिक हैं,,,

सदगुरुदेव कि ये किताबे मेरे घर में , मेरे को बाल्य काल में ही मिल गई थी , तब से मेरा शौक हो गया की किसी भी नंबर को देखूं और लग जाता उसे जोड़ने में की यह किसी तरह कि क्या यह अंक किसी त्तरह से मेरे जन्मांक से मिल जाये अब यह जन्मांक क्या हैं? यदि आपकी जन्म तारीख 21 हैं तो 2+1 =3 , या 25 हैं तो 2+5=7 हुयी और 10हैं तो 1+0=1 हुयी या 28 हैं तो 2+8=10=1+0=1 मतलब आपको अपने जन्म तारीख के अंक को तब तक आपस में जोड़ना हैं

जब तक की सिर्फ एक अंक न आये और यही आपका जन्मांक हैं.

और फिर इसे सदगुरुदेव द्वारा लिखित किताब में देखे उसमे सदगुरुदेव कमांक से इस अंक की विशेषताए बताई हैं, पर जब मैं अपने जन्माक की विशेषताए देखी तो लगा की मेरे को दृष्टी गत रख कर ही सारा उस अंक के बारे लिखा गया हैं मुझे बहुत ही आश्चर्जनक लगा ,

अब तो हर दिन मेरे लिए आने नए आश्चर्य जनक चीजे सामने लाता .. मैंने ध्यान से देखा तो पता चला की मुझे जो भी अंक वार्षिक परिक्षा में मिले या जो भी रोल नंबर मिले इन सभी में यह अंक इतनी बार आने लगा की मेरा विस्वास और आकर्षण बढ़ने लगा फिर तो मुझे ट्रेन में बिर्थ नंबर से लेकर जहाँ भी देखों यह अंक में या तो शुभ या अशुभ जो भी होता उसमे वह होता ही था . अब मैंने अब थोडा और गंभीरता से अध्ययन करना चालू किया .

तब पाया की न केबल इन जन्माक का बल्कि जो भी हमारा प्रचलित नाम हैं उसके अंको के वर्णों कुल योग भी बहुत अर्थ रखता हैं वह योग को हमारे जन्माक से मित्रता या फिर मैच करना ही चाहिए ही , पर यह कैसे पता लगाये , इसके लिए उस किताब में एक तालिका .टेबल दी हुयी हैं .

इस टेबल में अंग्रेजी वर्णमाला के हर अक्षर के लिए एक अंक निर्धारित हैं पर अपने नाम के हिसाब से उस से एक एक वर्ण के लिए नंबर चुनते जाए और फिर देखें की क्या उसका टोटल/कुल योग क्या बनता हैं, उस को सदगुरुदेव ने अच्छी तरह से समझाया हैं . और इसे उन्होंने अनेक उदा ह रण दे कर समझाया हैं .और आप यदि उसके हिसाब से अपने नाम कि spelling में परिवर्तन कर अपने जीवन को उच्चता कि तरफ ले जा सकते हैं .

पर इतना होने के बाद भी कई लोगों के मन में यह बात उठेगा की चलिए मेरा जन्मांक का असर तो दिख गया पर क्या यह सब पर यही नियम लागु होगा नही नही कई बार यह नहीं भी संभव होता हैं तब,

तब अंक शस्त्रियों ने एक नयी व्यवस्था दी जिसे संयुक्तांक कहते हैं इसका मतलब आपनी जन्म तारीख + महिना+ वर्ष जोड़ को एक अंक तक ले आये अब देखे कि क्या यह अंक का कुछ अर्थ हैं ...

जैसे 3 nov 1990 = 3+1+1+1+9+9+0=24=2+4=6

या फिर आप केबल अपने जन्म वर्ष का योग करके देखे, अनेको उदाहारण में यह भी पाया गया हैं,

जैसे 1968 =1+9+6+8 =24 = 2+4= 6

और इस तरह से आप वह संयुक्तांक सकते हैं जिसकी भूमिका आपके जीवन में रही हैं , और उस अंक को पाने जिस भी शुभ कार्य में उपयोग करेंगे तो और भी सफलता आपको पास होगी ही . पूज्य सदगुरुदेव की किताबे इस विषय में पढ़े आपको और भी ज्यादा विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा ही .

****

Some point about numerology

There many dimension of astrology and one can get such a height of gyan/divine knowledge can be possible but we can not understand that , yes that what we did that merely reading some books and consider or proclaimed about us that we knew every thing, even once Sadgurudev ji has said that they thought that some one would approach to him for advanced stages gyan of this science and say to him that I want to have perfection but…

In addition to that if you read a letter written by param Gurudev ji to Sadgurudev ji , than you can understand what is the place of this science in his heart ., in this series we will introduce to you some of such a aspect but it Is sure that this will not be always for only scholar and well expert one but also to our common brother /sister who do not have basic knowledge about this science too. than slowly slowly moved to the higher aspect and advanced aspect too.

And in this dimension , may be very simple looking dimension is numerology.

Whatever I am writing here to get more understanding and more aspect you can also read “ank deepika” and “ank jyotish” these two book of Sadgurudev ji

In this numerology , in the beginning you do not need to expert in astrology or in maths , but having knowledge of basic maths like addition will be satisfactory.

Thses Sadgurudev I have found in my home from my early age so it s quite natural that whenver any number comes to my sight I start to add and want to co relates how this number is related to mine janmaank

Now what is this janmaank . if your date of birth is 21 than 2+1=3 , if 25 than 2+5= 7 if 10 than 1+0=1 or 28 than 2+8=10+1+0=1 that means simply adding the bairth date number till you get single digit. And thi s single digit is your janmaank,

And you can search this number means janmaank peculiarities from Sadgurudev written book , he has mentioned various qualities and positive /negative things of the janmaank . when I checked mine I found it seems like Sadgurudev written all that keeping view of mine activity. And that was amazing.

Now each days comes , comes with many amazing things , and when I concentration on this science I found that even role number marks obtained din annual exam and not only this but getting train birth reservation and on many places this number comes again

an again.that all start attracting mine attention and I start again contacentrating and serious study about this science.

Than I found that not only our date of birth but the numeric total of our name is also having a big influence on that , means the add the number associated with each letter and have a total and this total have a very close relation ship with our janmaank, and both should be properly get matched but how we can know that , for that consider sasgurudev book that contains the table ,

And if it does not than make some slight change in your spelling and see now that matches or not .that small change can lead you to path of success and happiness.

After that some will questioned that it s true that your janmaank I s matched but what about other , this rules applicable to all , no no this is not certainty,

Than numerologists discovered new way to get the number that is sunyukatakshar means add your your date of birth + month +years and start adding till you get single word.

Like 3 nov 1990= 3+1+1+1+9+9+0=24=2+4=6

Or can add your only date of years this will also help you to understand which number governing to your life.

In this way you can understand /get your sanyukataank , that has a very specific role in your life, than use in any shubh kary , will reap more benefit, and read Sadgurudev book you will get more gyan/knowledge.

Nikhil tatv & shri tatv Most hidden secret revealed first time

इन्हें तो आत्मसात हर शिष्य को करना ही हैं

अपनी जिज्ञासाओं के शमन हेतु बहुदा मैं सदगुरुदेव जी से प्रश्न किया करता था और उनके निर्देशानुसार भिन्न भिन्न सन्यासियों या साधकों के समक्ष अपनी जिज्ञासा के समाधान हेतु प्रश्न रखा करता था। इसी क्रम में जब बात गुरु तत्व या **निखिल तत्व** को आत्मसात करने की आई तो इस हेतु मुझे सदगुरुदेव ने मुझे **सोऽहं स्वामी** जी के पास भेजा,स्वामी जी ने सम्पूर्ण सिद्धियाँ मात्र गुरु साधना के द्वारा ही प्राप्त की हैं और उन्होंने किसी भी साधक के जीवन का चरम लक्ष्य **सिद्धाश्रम** प्रवेश गुरु साधना के द्वारा ही प्राप्त किया है।क्योंकि निखिल तत्व अपने में वृहद अर्थों का समावेश किये हुए है, अतः यहाँ ज्यादा विस्तार में ना जाकर मात्र उतना ही लिखा गया है ,जो की हमारे लिए आवश्यक है,विषय को बिलकुल भी खीचने की कोई कोशिश नहीं की गयी है।

प्र० **निखिल तत्व क्या है,और उसका हमारे लिए क्या महत्त्व है** ?

उ० सृष्टि का सम्पूर्ण विस्तार अर्थात वस्तु,ज्ञान,ब्रम्हांड,तत्व और तेज जिस तत्व में समाहित हो जाये उसे अखिल कहा जाता है और उसी अखिल को अपने में समाहित कर लेने का तत्व या भाव **निखिल** कहलाता है। इस तत्व की प्राप्ति के बाद अज्ञान का पर्दा हटकर ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है। और सभी दुखों की निवृत्ति होकर केवल और केवल आनंद का साम्राज्य प्रसारित होता है। अधोगति की समस्त संभावनाएं तिरोहित हो जाती है और रह जाती है तो मात्र उर्ध्व गति। इसे अत्यधिक जटिल शब्दों में भी परिभाषित किया जा सकता है, परन्तु यदि सरल शब्दों में उसे समझना हो तो इससे सरल कुछ और नहीं कहा जा सकता है। क्यूंकि इस तत्व की विवेचना करने में तो समस्त शास्त्र और वेद भी नेति नेति कह उठते है। कहा भी गया है की

“असित गिरी समं स्यात कज्जलं सिंधु पात्रे ----------

--------------------------------- पारं न याति”

इसलिए अर्थ वे ही महत्वपूर्ण होते हैं जिन्हें ह्रदय सहर्ष स्वीकार कर ले।तब भी समझने के लिए एक उदाहरण से इसे समझा जा सकता है :-

द्वापर युग में महाभारत के युद्ध काल में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अपना ब्रम्हांडीय स्वरुप दिखाया था ,पर उसके पहले वे लगातार गीता का उपदेश देकर उसे प्रेरित करते रहे की तुम युद्ध करो और यही तुम्हारी नियति है इसी नियति को लेकर तुम जन्मे हो। परन्तु अर्जुन कदापि तत्पर नहीं हो पा रहे थे उस मनोभाव को एकाकार करने के लिए ,आखिरकार जब उपदेश से उसका हल नहीं निकल पाया क्यूंकि कई बार शिष्य के मनोमष्तिष्क पर अज्ञान की इतनी धुंध चढ़ी होती है की वो सद्गुरु द्वारा की गयी विवेचना को स्वीकार नहीं कर पाता है

उस अखिल सत्य को अंगीकार नहीं कर पाता है और ऐसी स्थिति में उसका पराजित होना अवश्यम्भावी होता है तो ऐसे में सद्गुरु को अपने निखिल तत्व का समावेश शिष्य में करने के लिए उस पर दिव्य नेत्र जागरण की अद्भुत क्रिया करनी ही पड़ती है ,ठीक वैसा ही जैसा की भगवान श्री कृष्ण के समझाने पर भी जब अर्जुन उनकी गूढ़ बातो को नहीं समझ पा रहा था तो भगवान को अपना विराट रूप दिखाना ही पड़ा।विशेषता इस बात में नहीं थी की अर्जुन ने उस विराट स्वरुप को देखा

अपितु विशेषता ये थी उस युद्ध क्षेत्र में बीच रणभूमि में उसे स्वयं जगद्गुरु से **निखिल-तत्व दर्शन दीक्षा** प्राप्त हुयी ,जिसके बाद उसके मनो मष्तिष्क से संशय-असंशय का भाव ही समाप्त हो गया और वो युद्ध के लिए पूरी तरह तत्पर हो पाया। महाभारत प्रतीक है ये समझाने के लिए की जीवन में बहुत बार जब हम आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ रहे होते हैं या ये कहा जाये की अपने अस्तित्व को समझने के लिए हम जूझ रहे होते हैं तब ऐसे में सद्गुरु निरंतर उस युद्ध को जीतने के लिए हमें अपने दिव्य वाक्यों से,विचारों से प्रेरित करते रहते हैं,परन्तु हमारी सामान्य मानव बुद्धि उस विचार को आत्म एकाकार कर ही नहीं पाती और तब ऐसे में पराजय निश्चित ही रहती है।

परन्तु यदि मनुष्य सद्गुरु से निखिल तत्व का ज्ञान प्राप्त कर ले तो इस पराजय को न सिर्फ टाला जा सकता है अपितु जीवन समर में पग पग पर सफलता प्राप्त होती ही है।

प्र० **निखिल तत्व की प्राप्ति कैसे संभव है** ?

उ० सबसे पहले ये समझना आवश्यक है की निखिल तत्व सद्गुरु प्रदत्त दिव्यता की पराकाष्ठा है ,इसके बाद कुछ भी शेष नहीं रह जाता है ,और ये सद्गुरु द्वारा करुणा के वशीभूत प्रदान किया गया वो प्रज्ञा तत्व होता है जो शिष्य को सम्पूर्ण भावों के मध्य ,सभी परिस्थितियों में स्थिरप्रज्ञता प्रदान कर देती है,तब ऐसे में उस शिष्य के ना सिर्फ दिव्य नेत्र ही जाग्रत हो जाते हैं ,अपितु भाव नेत्र,ज्ञान नेत्र और प्रेम नेत्र भी पूरी तरह खुल जाते हैं,तब प्रकृति का कोई रहस्य उससे छुपा हुआ नहीं रह सकता।

क्योंकि प्रत्येक नेत्र की अपनी एक विशेषता होती है,जैसे सामान्य भौतिक नेत्रों से हम प्रकृति की दिव्यता का अवलोकन नहीं कर सकते हैं ठीक वैसे ही दिव्य नेत्रों से हम भौतिक जगत और भाव जगत को नहीं देख सकते हैं। भाव नेत्र की अपनी विशेषता होती है ,ज्ञान नेत्र की अपनी और प्रेम नेत्र की अपनी। पर ये भी सत्य है की मात्र सद्गुरु के चरणों का आश्रय लेकर ही इन साधनाओं, विधियों और क्रियाओं की प्राप्ति की जा सकती है।

क्यूंकि इस तत्व को कोई आडम्बरी या स्वयं भ्रमित रहने वाला पाखंडी प्रदान कर ही नहीं सकता, और ये सत्य है की जिसके खुद के आत्मा रुपी दीपक में ज्ञान का तेल नहीं है वो भला कैसे किसी और को प्रकाशित कर सकता है। जिसे सत्य को देखने और सुनने के लिए किसी और की जरुरत होती है वो भला कैसे आपको सत्य से परिचित करवा सकता है, जो खुद भ्रमित हो, राग द्वेष से भरा हुआ हो भला वो औरों को कैसे मार्ग पर ला सकता है, जिसके खुद के पास निखिल प्रज्ञा नहीं हो वो किसी और को निखिल तत्व दे ही नहीं सकता।

नवचक्र तंत्र में कहा गया है की "**जो पिंड,पद,रूप और रूपातीत को सम्यक रूप से जानता है,वही गुरु हो सकता है**"। अर्थात पूर्ण और शुद्धतम ज्ञान ही गुरु का लक्षण है। **मालिनी तंत्र** में भी कहा गया है की मुमुक्ष के लिए स्वभ्यस्त गुरु ही श्रेष्ट है अर्थात जिसने खुद अभ्यास न किया हो वो आपको कैसे कुछ प्रदान कर सकता है। **तांत्रिक मतानुसार सद्गुरु मात्र ही परमशिव होते हैं अन्य नहीं।** अतः निखिल तत्व रुपीये प्रज्ञा शिष्य को स्वयं वो परब्रह्म ,वो प्रकृति पुरुष ही दे सकता है ,शिष्य के जीवन का सौभाग्य ही होता है की उसे सद्गुरु की प्राप्ति होती है और उनके चरणों का सहारा लेकर वो उस परम तत्व निखिल तत्व को आत्म एकाकार कर सकता है।

केवल वे सद्गुरु ही अनुग्रह कर सकते हैं। किसी भी स्थिति में ये सामान्य घटना नहीं हो सकती है। शिष्य की विशेषता मात्र ये होनी चाहिए की वो पूर्ण आत्म-अनुसन्धान के मार्ग पर चलने के लिए तत्पर हो फिर स्वयं वो निखिल ही अपने तत्व को उसे प्रदान करते ही हैं। योग भाष्य में कहा भी गया है की –

"तस्य आत्मानुग्रहाभावे: अपि भुतानुग्रहः प्रयोजनं।

ज्ञान धर्मोपदेशेन कल्पप्रलय महाप्रलयेषु संसरिणः पुरुषां उद्धरिष्यामीति॥"

अर्थात उस परब्रह्म का अपना कोई प्रयोजन न होने पर भी कल्प प्रलय और महाप्रलय में अनुग्रह योग्य जीवों को अपने उपदेशों एवं क्रिया द्वारा ज्ञान एवं धर्म तत्व प्रदान कर उस परम सत्य की प्राप्ति करवाना ही उसका उद्देश्य है। ये परब्रह्म ही निखिल है अनादि गुरुतत्व है और सृष्टि के प्रारंभ से निखिलेश्वर रूप में शिष्यों और साधकों को निरंतर आनंद प्रदान कर श्री **निखिलेश्वरानंद** कहलाते हैं। जो स्वयं ही निखिल हो वही निखिल तत्व की प्राप्ति करवा सकता है।

निखिल तत्व प्राप्त साधक के लिए तंत्र के तीनों भावों और सातों आचारों की साधना पद्धति का रहस्य स्पष्ट हो जाता है।

आज बहुतेरे को तो ये भी पता नहीं होता है की आखिर ये भाव क्या होते हैं ,परन्तु साधक के लिए ये भाव ज्ञान होना अति आवश्यक है। क्यूंकि तभी सृष्टि की आदि शक्ति और परम सौभाग्य की दात्री **श्री साधना** के लिए आपकी योग्यता अनुसार भाव आपको सद्गुरु प्रदान करते हैं।

वस्तुतः निखिल तत्व और श्री को विभक्त किया ही नहीं जा सकता ये परस्पर एक दुसरे से गुंथे हुए हैं।निखिल तत्व प्राप्त किये बगैर श्री विद्या के रहस्य को साधक आत्म सात कर ही नहीं सकता।

जीवन में यदि पूर्णता पानी है तो ये दोनों ही सूत्र आत्मसात होने ही चाहिए। खैर वे भावत्रय हैं

दिव्य भाव

वीर भाव

पशु भाव

और सात आचार हैं:-

वेदाचार

वैष्णवाचार

शैवाचार

दक्षिणाचार

वामाचार

सिद्धान्ताचार

कौलाचार

इन्ही भाव और आचारों पर तंत्र व साधना की सभी पद्धतियाँ निर्धारित होती हैं, सभी पंथ और संप्रदाय इन्ही पर आधारित होते हैं।

प्र० **यहाँ श्री से क्या तात्पर्य है**?

उ० इसके लिए सबसे पहले श्री का अर्थ समझना होगा ,समग्र संसार माया से ही उद्भव होता है मलिन संसार अशुद्ध माया से उत्पन्न है और उसका प्रधान गुण आसक्ति ,दु:ख, निराशा,अविद्या और विनाश है।इन्ही दुर्गुणों का जब विनाश जिस ज्ञान से होता है उसे श्री कहा जाता है।अर्थात मलिन माया का विनाश करने पर जिस शक्ति की साकरता चंहु और दिखती है उसे ही जगत पालनकर्ता श्रीमन नारायण की शक्ति महामाया कहा जाता है।

श्री साधना की शक्ति से ही साधक इन महामाया के प्रभाव से मुक्त होकर अपना अभीष्ट लक्ष्य पा सकता है। तब कुछ भी दुर्भग्य नहीं होता है ,सब कुछ सौभाग्य में परिवर्तित हो जाता है। तब लक्ष्मी भी मात्र चंचला लक्ष्मी नहीं होती है अपितु श्री युक्त होने के कारण वो कल्याणकारी व स्थिर भी हो जाती हैं। और इसी श्री विद्या का सायुज्यीकरण निखिल तत्व से करने पर ब्रम्हांडीय रहस्यों पर छाया अशुद्ध माया का तिमिर अंधकार पर्दा हट जाता है और सब कुछ स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है।

प्र० **निखिल तत्व प्राप्ति का क्या क्रम होता है** ?

उ० वस्तुतः निखिल तत्व प्राप्ति की ये एक ही साधना होती है जो की **सिद्धाश्रम प्रणीत** हैं और उच्च कोटि के साधक,सिद्ध इसे संपन्न करते ही हैं ताकि वे निखिल तत्व को पूरी तरह से आत्मसात कर सके और उन प्रकृति रहस्यों से परिचित हो सके जो की आगामी हैं दुर्लभ और अप्राप्य हैं। और इस निखिल तत्व प्राप्ति साधना के ३ चरण होते हैं।

कभी सदगुरुदेव ने स्वयं ही इसके समस्त चरणों को अलग अलग समय पर समझाया था।इन साधनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही है की इसमें किसी भी प्रकार का आडम्बर नहीं होता है और न ही ये मंत्र कीलित ही होते हैं, प्रकृति स्वयं ही इनका उत्कीलन कर देती है। और यदि साधक पूर्ण स्थिरचित्त होकर इन मन्त्रों का जप करता है तो उसे मनोवांछित सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

१-**पूर्ण निखिलेश्वरानन्द प्रत्यक्ष तत्व सिद्धि साधना**- इस साधना के द्वारा साधक सीधे ही सदगुरुदेव द्वारा अभीष्ट दीक्षा की प्राप्ति करता है। उसकी एकाग्रता की गहनता उसे ध्यानावस्था में या स्वप्न में अभीष्ट दीक्षा सदगुरुदेव द्वारा प्राप्त करवाती ही है , और वो निखिल तत्व युक्त होता ही है।जो किसी भी काल की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

२- **पूर्ण शक्तिपात सिद्धि साधना** - इस साधना के द्वारा साधक ने पूर्व जीवन,पूर्व काल में जो भी दीक्षा ली हो उन शक्ति को तो पूर्ण रूपें प्राप्त करता ही है साथ ही साथ वर्तमान में भी दिव्य सिद्धों के द्वारा जो शक्तिपात उस पर परोक्ष या अपरोक्ष रूप से होते हैं ,उन्हें भी वो संगृहीत कर प्रयोग कर पाने में समर्थ हो पाता है।

३-**अद्वितीय ब्रम्ह्त्व गुरु साधना** – सदगुरुदेव के पूर्ण विराट रूप के दर्शन और उनका आत्म एकाकार करने के लिए तृतीय और अंतिम चरण जिसके बाद कुछ और एक शिष्य के लिए बाकि नहीं रह जाता है।

ठीक इसी प्रकार **श्री साधना** की सम्पूर्णता दो चरणों से होती है :-

१- **निखिल तत्व सायुज्य भगवती राज राजेश्वरी साधना**- जीवन की आधारभूत साधना ,जिसके द्वारा अभीष्ट सफलता पाता हुआ साधक पूर्ण श्रीयुक्त जीवन प्राप्त कर पाता है।

२- **श्री प्राप्ति हेतु महानिशा साधना के ५ प्रयोग** – दीपावली की इतनी महत्ता क्यूँ है और इसके पांचो दिन कौन से विधान किये जाते हैं की जिससे एक पूर्ण क्रम होता है,आयु,आरोग्य,रक्षा,धन और अभीष्ट प्राप्ति का।

==

Q.**What is Nikhil Tatva, and whats its importance to us?**

A.The Creation's enlargement i.e. substance, knowledge, universe, real state and energy or spiritcomprised in the state called Akhil (Whole). And the same Akhil when comprises in the essence or notion is Known as **"Nikhil**"... After realizing such type of state the layer of lack of knowledge gets clear and light of knowledge is blowout everywhere.. And then after getting relieved with all pains and grieves only happiness remains in life….

All possibilities of degradation gets concealed and if something remains is only and only advancement personal growth. Well this can be defined in difficult words, but if it would have been fathom properly then besides such easy word no other words can be expressed more. And whatever had been explained above is in the simplest form. Because whenever explanations regarding this topic have been taken, even all Shastras and Vedas found helpless to put in easy words. Even this has been said, -

" Asit giri samam syaat kajjal sindhu paatre……..

……………………………………Paaram na Yaati"

Therefore only such Connotation is important which is easily acceptable by heart. Still this can be explained by one example:-

In Dwapar Yug Mahabharata, while the time of war, God Krishna had shown the (Bhrahmaandiya) universal form to Arjun, but before showing such form he always insisted him to do war by indicating Bhagvad Gita's divine thoughts and that's your fortune. And you are born with this destiny only. But Arjun was reluctant to imbibe this truth.

Ultimately after all such indication he failed to understood what Krishna wants to tell him because sometimes it happens when Sadguru himself tells truth but still shishya is not ready to imbibe it because of blurredness. In resultant he dont even noticed that the fact which he had been denied is told by his own Sadguru. In such situation he is bound to face defeat and So in such circumstances Sadguru penetrate his Nikhil tatva in Shishya.

For doing such tedious procedure Sadguru does the Divya Netra Jaagran wonderful activity exactly as Arjun when he found incapable to grasp the secret knowledge told by Lord Krishna so Lord Krishna had to express his Viraat swarup (Universal form) for him.

Here, Arjun's lookout of Viraat swarup of Lord krishna was not that important rather he got the "**Nikhil – tatva Darshan Deeksha**" in mid of the war keeps more importance. After which neither any type of suspiciousness nor a single negative thought remain in him. And he got completely ready for war in real sense.

Well here Mahabharat is just a symbol to make us understand that when we are on fight of our self-respect or I can say for self-identity, in such situation our Sadguru is always indicates us by divine thoughts, sentences but our commonsense doesn't allowed us to receive such knowledge and ultimate we face failure. Isn't it? But if human receive Nikhil Tatva knowledge from Sadguru then not only failure can be avoided but also success is welcomed for rest of the life.

Q. **How Nikhil Tatva can be achieved?**

A. First of all this is very important to understand that the Nikhil Tatva is ultimate level of divineness given by Sadgurudev., Beacause then nothing is left behind. And this tatva is that one which is bowed by Sadgurudev in kindness mode which not only keeps us stable at emotional level but also keeps stiff firm in all types of situations. In such circumstances, that's shishya's not only divine eyes are opened but expressing eyes, knowledge eyes, love eyes also opens up completely. Then no such secrets of nature remain unrevealed by him.

Because each type of eyes possess unusual significance in it. Exactly the way we can't see the divineness of nature by sheer lame eyes similarly by divine eyes we are unable to figure out materialistic world. Expressive eyes possess different importance so as knowledge eyes and love eyes. But this is also truth that without the Sadgurudev shelter this is just next to impossible.

This is because any tom, dicks and neither do not harry nor any self-misled hypocritical can give such knowledge. And this is also truth that one who does not possess any lamp form divine knowledge cannot enlighten any others lamp, how can he introduce you to the real truth…isn't it? The one who contained anger, hatred misled how he can show the right path to other ones. The one who doesn't possess Nikhil Pragya cannot bow Nikhil tatva to anybody else.

In **Nav Chakra Tantra** it has been said, "**Jo Pinde, pad, rup, aur rupatit ko samyak rup se jaanta hai**, vahi guru hota hai." Means – Complete and pure knowledge is the sign of being Guru. In **Malini Tantra** also said that desire for release from **birth is better gained by practicing Guru. I mean the one who have practically experienced it**. Its but obvious who haven't yet done practically how he can spread it to others.

According to Tantrikis Sadguru himself is Paramshiv no one else. Therfore Nikhil Tatva form Pragya has been given by the one who is Ultimate almighty and ultimate nature man, It's the good fortune of Shishya that he mets Sadguru in same birth. And due to which support he steps forward towards Nikhil Tatva and imbibe it completely. It can be done only by Sadguru. And in state it cannot be count as a normal happening. Shishya specialty should be this that he should always be in self-search.. so slowly n slowly sadguru himself notices the specialty and sows the Nikhil Tatva in shishya. In Yog Languauge it has been said –

" Tasya Aatmaanugrahabhave aapi bhutaanugrah prayojanam.

Gyaanam dharmopdeshen kalppralay mahapralayeshu sansrin purusham uddhrishyaameeti."

That means their must not be any personal motive of Parabhrahma, but then also in Kalp Pralay and Maha Pralay he favoured the eligible soul, by indicates and process they make sure that the Tatvas related to knowledge and religion get prominent in them in order achieve the ultimate truth of the life. Thats the only motive of Parabhrama.

This Parabhramha is only Nikhil "The eternal Gurutva" and since starting of creation in the form of Nikhileshvar, he bows happiness to their shishyas and Sadhakas and being recognised as **"Shree Nikhileshvaranand**". The one who himself is Nikhil can only gives us Nikhil Tatva.

Fir the gainer of Nikhil Tatva Sadhak, the three Bhavas of Tantra and Seven mannersim of life Sadhna procedure secrets becomes crystal clear.

Even many people wouldn't be aware that what does this 'bhav' meant so? But for sadhak it is quiet essential to know about it. Because then only the Sadgurudev grants you the Bhaav as per our eligibility for Aaadi Shakti of Creation and best fortune giver **"Shree Saadhna**" .Basically Nikhil Tatva and Shree cannot be seperated, they are plaited with each other. Without earnng Nikhil tatva, a sadhak cannot imbibe Shree Vidya secrets. If you want completeness in life then both these sutras are needed.

Well these Bhavas are :

Divya Bhav (Divine form)

Veer Bhav (Courageous form)

Pashu Bhav (Brute form)

And the seven Conduct are :-

Vedaachaar

Vaishnavaachaar

Shaivaachaar

Dakshinachaar

Vaamachaar

Siddhaantachaar

Kaulaachaar

Only on such Bhavaas and Conduct of life, all the processes of Tantra and Sadhnaas are based. Even all the paths and doctrines are also based on same.

Q. **Now the question arises here is what do you understand by 'Shree'**?

A. First of all let's understand the meaning of word 'Shree', in whole world is produced by Supernatural power called Maya. This filthy world is originated from Maya and its prime feature attachment, pain, disappointment, illiteracy and destruction. When these bad qualities get destroyed by the knowledge and that knowledge is known as Shree. Means after destruction of this filthy Maya, the remaining Shakti power has been named by the creator of world Shree Narayan i.e. his power 'Mahamaya'.

Only by achievement of Shree Sadhna power one can discharge from the impacts of Mahamaya and able to attain wishes. Then nothing remains disastrous, everything gets converts into good fortune. Then Lakshmi doesn't remain trembling, in fact unify with Shree, she became kind and stable. When this Shree Vidya's Sayujjyikaran (Beatific state of communion) merges with Nikhil Tatva, the black layer of lack of knowledge automatically get disappear and it's open up with the universal secrets with clear vision.

Q. **What's the serial of achievement of Nikhil Tatva**?

A. Actually **there is only one sadhna prescribed for Nikhil Tatva from Siddhaashram** and this is accomplished by high level of siddhas and sadhaks so as to get the essence of Nikhil Tatva completely and the secrets regarding nature became easy which would be found in rare. Well this can be earned by three steps in sadhna.

Often Sadgurudev had already explained it on various occasions. The main specialty of this sadhna is its unpretentious neither these mantras are pinned. Nature itself unpinned it. And if Sadhak attempts it with full concentration then definitely his wish is going be achieve, no one can stop him.

1. **Poorna Nikhileshvaranand Siddhi Saadhna** :- Via this sadhna the sadhak directly earns the Abheesth diksha by Sadgurudev. The depth of his concentration turns his Diksha kram either in dreams or while meditating from Sadguurdev, which is the biggest achievement in any era.

2.**Poorn Shaktipaat Siddhi Prayog** :- Via this sadhna the sadhak not only revives his past life power and diksha as it is but also become capable of handling the present dikshas given by the Divine siddhs directly or indirectly.

3.**Adviytiy Bramhatva Guru Sadhna** ;- He would be able to see the Viraat Swarup of Sadgurudev and unification of soul he reached till 4th and the last step after that for sadhak nothing remains then.

Exactly In same manner the Shree sadhna achievement can be done in two forms :-

1. **Nikhil Tatva Sayujya Bhagvati Raj Rajeshvari Sadhna** – Base of life, via which sadhak achieves desired success and steps forward and spend Shreeyukt life. (Completeness of life)

2. **Mahanisha Sadhna 5 process** – why Deepavali is so important and on this 5 days of Deepavali which five sadhnas can be done by which full count is done, Age, health, safety, wealth and desires can be fulfilled.

Purn nikhileshwaranand Prtyksh tatv siddhi sadhana

अब हमारे प्राणाधार पूज्य सदगुरुदेव दूर कहाँ ...

जीवन में कई बार मन बैचेन हो जाता है ये सोच कर की काश हमने सदगुरुदेव को देखा होता ,उनका साक्षात् किया होता ,उनसे शक्तिपात और दीक्षा पाई होती ,पर आज ये कहाँ संभव है ??

पर सत्य इससे बिलकुल विपरीत है। मुझे याद है की जब सदगुरुदेव ने ये उद्घोष दिया था की "**आने वाली पीढियाँ याद करेंगी की तुमने निखिलेश्वरानंद को देखा है**" और ये कोई सामान्य उद्घोष नहीं था, अपितु इसके पीछे उनके मन की पीढा भी थी, वे कालदृष्टा थे जिनके लिए भूत,वर्तमान,भविष्य कुछ भी अगोचर या छिपा हुआ नहीं था ,और इससे भी बड़ी बात ये थी की वे दूरदृष्टा थे जिन्होंने अपनी सभी योजनाये अपने जीवन में ही क्रियान्वित कर दी थी ,जिस के कारण सभी शिष्यों को उनका साहचर्य निरंतर प्राप्त होता रहे।

कितनी विचित्र बात है ना की हम तब ये विश्वास करते थे की सदगुरुदेव नित्य प्रति शिष्यों को दिशा निर्देश दिया करते हैं। परन्तु आज स्थिति बदल गयी है ,आज हमारी श्रृद्धा की डोर इतनी कमजोर हो गयी है की हमारा कुतर्की मन कदापि ये मानने के लिए तैयार नहीं होता है की सदगुरुदेव हमसे संपर्क करेंगे, या हमें साधना या जीवन सम्बन्धी दिशा निर्देश देंगे। इतने कमजोर विश्वास पर तो हमारा साधना जीवन टिका हुआ है।मैं यहाँ किसी तत्व विवेचना की बात ही नहीं कर रहा हूँ।

कोई गूढ़ ज्ञान की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। यदि यहाँ कुछ बता रहा हूँ तो वो मात्र उन शिष्यों की पीड़ाएँ हैं जिन्होंने उस परमगुरु ,उस परम सिद्ध योगेश्वर के साहचर्य लाभ की अभिलाषा में ना जाने कितनी रात तकिये में मुँह छिपाए रोते हुए बिताए हैं, असंख्य रात्रि तकिये के कपड़ो पर आंसुओं से सदगुरुदेव की आकृति उकेरते रहे।पर क्या किसी ने उनकी पीड़ा समझी ,नहीं ना।

क्या ये सब असंभव है ??

कदापि नहीं बहुतेरे साधक इस बात के गवाह हैं की सदगुरुदेव ने भावावस्था, ध्यानावस्था या स्वप्नावस्था में आकार उन्हें उनकी जिज्ञासाओं का समाधान दिया या उनकी इप्सित दीक्षा प्रदान कर उन पर अपने अनुग्रह की अजस्त्र वर्षा की। तंत्र की सम्भावना असीम है ,जहाँ से मानवीय सोच की सीमा समाप्त होती है वहाँ से तंत्र का आरंभ होता है।

सदगुरुदेव ने अपने गृहस्थ जीवन में ही इन सूत्रों को अपने शिष्यों को प्रदान कर दिया था और वे सदैव कहते थे की मेरे शिष्य मेरे ज्ञान की पूँजी को सदैव संभाले रहेंगे ।

मेरा ज्ञान वास्तविक तौर पर सदैव इनके साथ रहेगा ,क्योंकि इनका मेरी भौतिक संपत्ति से कोई लेना देना नहीं है अपितु इन्हें मेरे ज्ञान की प्यास है, और मैं इन्हें दीपक नहीं अपितु हीरक खंड और सूर्य बनाने के लिए ही सिद्धाश्रम से आया हूँ। बहुत बार जब वे किसी दीक्षा का विवरण देते थे तो साथ ही ये भी कह देते थे की मेरे अतिरिक्त इस पूरे ब्रह्माण्ड में ये ज्ञान तुम्हे कोई और नहीं दे सकता है और इसके आगे का क्रम तो कदापि कदापि किसी और को ज्ञात होगा ही नहीं।

राजयोग,राज्याभिषेक, सम्राटाभिषेक , पट्टाभिषेक के बाद कहाँ गया इसका अगला क्रम जिसे सिद्ध योगी "**ब्रम्हांड पार्श्विकरण दीक्षा**" के नाम से जानते हैं। कहाँ गयी "**पूर्णाभिषेक दीक्षा**" प्रदान करने का वो विधान जिसे पाने के लिए प्रत्येक साधक लालायित रहता है।

आज तो रसेश्वरी दीक्षा के लिए भी यही सुनने को मिलता है की "**सब सोना बनाना चाहते हैं**" अरे सोना बनेगा तो तब जब उस साधक को उसका विधान ज्ञात हो। क्या रसेश्वरी दीक्षा का इतना ही महत्त्व है जबकि **रसेश्वरी दीक्षा** जीवन और भाग्य को हीरक कलम से लिखने की क्रिया है जिसके विविध आयाम हैं।

"**पंचमहाभूत दीक्षा**" को कपोल कल्पना करार दे दिया गया है जबकि और भी कई **दुर्लभ दीक्षाओं का विधान सदगुरुदेव की ओजस्वी और दिव्य वाणी में आज भी मेरे और कई वरिष्ट गुरु भाइयों के पास सुरक्षित है**। और जो जब कहे मैं तब सुना सकता हूँ , **रिकार्डिंग तब भी होती थी** , अरे दीक्षा आप ही देंगे , क्योंकि आप को ही नियुक्त किया है , हमें नहीं।

पर जब इसके बाद भी शिष्य को मात्र भजन और नृत्य मिले तो साधक का जीवन कैसे प्रगति करेगा । कोई साधनात्मक उन्नति नहीं , तब मात्र सदगुरुदेव का आश्रय लेना ही श्रेष्ट होता है। और आज भी सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त "**गुरु आहूत मन्त्र**" उतना ही प्रभावी है जितना तब।

जो परमहंस होते हैं वे रिश्तों में नहीं अपितु अपने शिष्यों के कल्याण चिंतन में सदैव व्यस्त रहते हैं। इसके लिए उन्हें मात्र पूर्ण आग्रह युक्त हृदय चाहिए होता है और कुछ की आवशयकता कदापि नहीं होती। तंत्र के कई ऐसे विधान उन्होंने अपने शिष्यों को प्रदान किये हैं जिनका प्रयोग कर शिष्य आज भी सीधे उन्ही से मनोवांछित दीक्षा पूर्ण आग्रह के साथ प्राप्त कर सकता है।

सामान्य अवस्था में स्वप्नावस्था या ध्यानावस्था में ये दीक्षाएं या समाधान प्राप्त होते हैं ,जो की सामान्य घटना कभी नहीं कही जा सकती है क्यूंकि आप लाख किसी भी इष्ट की उपासना करे तब भी वो देवी देवता या शक्ति आपके स्वप्न में नहीं आएगी क्यूंकि **अचेतन मन परा तत्व को पकड़ ही नहीं सकता , ये तभी हो सकता है जब आप का मन पूर्ण चैतन्य हो आर आपकी प्रज्ञा का योग आपके इष्ट की या सद्गुरु की प्रज्ञा से हो गया हो।**

परन्तु स्वप्न मात्र में नहीं अपितु अति उच्च अवस्था में यदि सतत मन्त्र का प्रयोग किया जाये तो निश्चित ही सूक्ष्म शरीर के द्वारा या प्रत्यक्ष भी शक्तिपात रुपी असीम अनुग्रह प्राप्त हो जाता है।

साबर महाविशेषांक में सदगुरुदेव आवाहन और दर्शन मंत्र का विवरण दिया गया है , जिसका लाभ बहुत से साधकों ने उसे प्रायोगिक रूप से करके उठाया है। हम जो भी प्रयोग तंत्र-कौमुदी में देते हैं वे अनुभूत या सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त होते हैं। जिन्हें निसंकोच आप प्रयोग करके लाभ उठा सकते हैं। आलोचना का दृष्टिकोण अपनी जगह सही है परन्तु वो तभी ठीक है जब पहले विषय वस्तु को परख लिया गया हो, अन्यथा कुतर्क का कोई जवाब नहीं है। आज अपने कलेजे में छिपाए हुए उसी प्रयोग को मैं आप सभी के सामने दे रहा हूँ , जिसका लाभ मेरे समेत बहुत से वरिष्ट गृहस्थ और सन्यासी भाइयों और बहनों ने लिया है।

ये साधना २१ दिनों की है और पूर्ण पवित्रता के साथ इस साधना को संपन्न किया जाता है, सामग्री के नाम पर सदगुरुदेव का तेजस्वी चित्र ही अनिवार्य है और एक स्फटिक माला तथा ५ पंचमुखी रुद्राक्ष की आवशयकता होती है। साधना के पहले गुरु मंत्र का सवालाख जप अवश्य कर ले तत्पश्चात ही इस दिव्य साधना में अग्रसर हो। पवित्रता अनिवार्य है।

नित्य ब्रह्ममुहूर्त में इस साधना को संपन्न किया जाता है इसमें दो दिव्य मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। हाँ ध्यान रखने योग्य बात है की साधक एक समय शुद्ध सात्विक भोजन करे और पूर्ण मानसिक शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करे, ये कभी ना भूले की ये कोई सामान्य साधना नहीं है अपितु जीवन परिवर्तित करने वाली उस परम पुरुष की जगद्गुरु की साधना है ,उन्हें रोम रोम में आत्म-एकाकार करने की साधना है।

श्वेत वस्त्र धारण कर शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरूवार को ब्रह्ममुहूर्त में उत्तराभिमुख अपने सामने बाजोट पर सदगुरुदेव का चित्र स्थापित कर ले ,इसके सामने अष्टगंध से एक वृत्त बना ले और उस वृत्त की रेखाओं पर पञ्च अक्षत की छोटी छोटी ढेरियाँ बना दें,और उस वृत्त के मध्य में ॐलिख दें ,उन ढेरियों पर एक एक रुद्राक्ष स्थापित कर दें। जहाँ ॐलिखा है वहाँ गुरु पादुका या गुरु यन्त्र स्थापित कर दें। इस गोले के और गुरु चित्र के मध्य घी का दीपक स्थापित कर दें। और पूर्ण विधान से सदगुरुदेव के चित्र और यन्त्र का पूजन करे।तथा उन रुद्राक्षों पर एक एक करके –

ॐगुरुभ्यो नमः

ॐनिखिलेश्वरानंद गुरुभ्यो नमः

ॐपरम गुरुभ्यो नमः

ॐपरात्पर गुरुभ्यो नमः

ॐपारमेष्टि गुरुभ्यो नमः

मंत्र का उच्चारण करके अक्षत,पुष्प,धुप ,दीप तथा नैवेद्य समर्पित करे I ये ५ ढेरियाँ और रुद्राक्ष पञ्च परम गुरु शक्ति की प्रतीक हैं I इसके बाद निम्न दिव्य मन्त्र की १६ माला पारद माला या स्फटिक माला से जप करे –

निखिलेश्वरानंद सिद्धि मन्त्र-

ॐ निं निखिलेश्वराय सिद्धिम् देहि देहि निं ॐ

तत्पश्चात **निखिल प्राणश्चेतना मंत्र** का १ माला जप करे-

निखिल प्राणश्चेतना मंत्र-

ॐ पूर्वाह सतां सः श्रिये दीर्घो येताः वदाम्यै स रुद्रः स ब्रम्ह स रुद्रये स चैतन्य आदित्याय रुद्राः वृषभो पूर्णाह समस्तेः मूलाधारे तु सहस्त्रारे, सहस्त्रारे तु मूलाधारे समस्त रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ प्राणतः दीर्घतः एत्तन्य दीर्घाम भूः लोक,भुवः लोक,स्वः लोक,मह लोक,जन लोक,तप लोक,सत्यम लोक ,मम शरीरे सप्त लोक जाग्रय उत्तिष्ठ चैतन्य कुण्डलिनी सहस्त्रार जाग्रय ब्रम्ह स्वरुप दर्शय दर्शय जाग्रय जाग्रय चैतन्य चैतन्य त्वं ज्ञान दृष्टिः दिव्य दृष्टिः चैतन्य दृष्टिः पूर्ण दृष्टिः ब्रह्मांड दृष्टिः लोक दृष्टिः अभिर्विहृदये दृष्टिः त्वं पूर्ण ब्रम्ह दृष्टिः प्राप्त्यर्थम,सर्वलोक गमनार्थे,सर्व लोक दर्शय ,सर्व ज्ञान स्थापय, सर्व चैतन्य स्थापय,सर्वप्राण,अपान,उत्थान,स्वपान,देहपान,जठराग्नि,दावाग्नि,वडवाग्नि,सत्याग्नि,प्रणवाग्नि ,ब्रह्माग्नि,इन्द्राग्नि,अकस्माताग्नि,समस्तअग्निः,मम शरीरे,सर्व पाप रोग दुःख दारिद्रय कष्ट पीड़ा नाशय - नाशय सर्व सुख सौभाग्य चैतन्य जाग्रय,ब्रम्ह स्वरुप स्वामी परमहंस निखिलेश्वरानंद शिष्यत्व,स-गौरव,स-प्राण,स-चैतन्य,स–व्याघ्रतः,स-दीप्यत,स-चंद्रोम,स-आदित्याय,समस्त ब्रम्हांड विचरणे जाग्रय,समस्त ब्रम्हांडे दर्शय जाग्रय, त्वं गुरुत्वं ,त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णु,त्वं शिवोहं,त्वं सूर्य,त्वं इन्द्र, त्वं वरुण, त्वं यक्ष,त्वं यमः,त्वं ब्रह्मांडो, ब्रह्मांडो त्वं मम शरीरे पूर्णत्व चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रयामि ||

इसके बाद पुनः **निखिलेश्वरानंद सिद्धि मन्त्र** की १६ माला जप करे तब जाकर ये क्रम पूर्ण होता है I यही क्रम सम्पूर्ण साधना काल में रहेगा और रही बात इस दिव्य साधना की तो आप जिस भी समाधान या दीक्षा की अभिलाषा रखते हैं , उसकी प्राप्ति स्वतः ही आपको प्रभाव दर्शा देगी I ये साधना एक अचूक सजगता और समर्पण का भाव साधक में व्याप्त कर देती है ,जिसके प्रभाव से साधक के चारो प्राण जाग्रत हो जाते हैं और वो सरलता से अपने प्राणाधार सदगुरुदेव के दर्शन कर सकता है और उनसे सीधे ही समाधान प्राप्त कर लेता है I

सदगुरुदेव की असीम करुणा से ही इस प्रकार की दिव्य साधनाप्रकाश में आ पाई है। वे हम सभी के प्राण में हैं और जब भी कातर भाव से हम उन्हें बुलाएँगे वे सदैव की भांति हमारी ज्ञान पिपासा को शांत करने आयेंगे ही। इसे पढ़िए मत बल्कि करिये और प्रभाव देखिये।

===

Poorna Nikhileshvaranand Pratyeksha Tatva Siddhi Sadhna –

Many times it happens that our mind become anxious by the thought that, what if I would have seen Sadgurudev atleast once. One meet, a direct Shaktipaat by him and ofcourse Diksha. But is it possible now?

But the truth is exactly opposite of this fact. I remember well, that once Sadgurudev had announced "**the upcoming generation would remember that you have seen Nikhileshvaranand**". This was not a common announcement rather behind this statement his infinite pain was hidden. He was Kaaldrishta for whom watching past, present and future, nothing was hidden for him.

And top of his foresight was terrific that he had already planned everything, so that each shishya should get benefit of his existence. Isn't it strange that believed that Sadgurudev used to direct us every day. But today the circumstances are different. Today the thread of our devotion become very so weak that due to our suspicious heart doesn't trust on this fact that Sadgurudev remain contacted with us. Or he is guiding us in our sadhna life. On this weak trust our sadhna life is dependent.

Well, let me clear here I'm not indulging in any discernment. Even not discussing any secret, If I am telling something then i.e. For only those shishyas who have spent countless nights on bed hiding their creep by cusion that when we will see our revered guru. But does anybody realize their pain? No I guess..

Is it possible?

Never, many of them can evident that in Bhaavavastha, dhyanavastha or in swapnavastha Sadgurudev had given indication to them and fulfilled their curiousities via Ipsit Diksha he had shower blessings on them. Possibilities of Tantra is endless, where the logical mind of human end there the Tantra is started. Sadgurudev had given this sutra in his marital life itself.

He always said, "**My beloved shishyas would always treasure my knowledge form assets forever. Basically my knowledge would remain with them in actual sense. Because they are never concerned with my materialistic wealth rather they are seeker and thirsty for my knowledge. And I have come back from Siddhashram to make them not just a lamp but to make them a Heerak Khand and Sun**". Several times when he gives description about any Diksha, along with it he used to say nobody can give such knowledge apart from me in this whole universe and exceed it.

After **Raajyog, Raajyaabhishek, Samratabhishek, Pattabhishek** and next one is which is known between Siddh Yogis as "**Bramhaand Parshvikaran Diksha**". Well everyone is curious to know the procedure about "**Poornabhishek Diksha**".

Bad part is so many say about **Raseshvaari Diksha** that "**all wants make gold**" They don't know this fact that gold can be produce only when the correct procedure is known. Does the importance of Raseshvari Diksha keeps that much only, Basically Raseshvari Diksha is known for achieving hieghts in best luck and Heerak kalam procedure which have many dimensions.

"**Panch Mahabhoot Dikhsha**" is be called as a sheer fantasy whereas **there are several rare dikshas which are secure in sadgurudev's voice not only with me but also with the elder brothers also**. And whatever whoever say I can listen it properly**, that time was also recording facility was present**, are you giving diksha, because you only are appointed, not us naa… But still after all this if sadhak remains busy in singing bhajan and dance the how come he progress in his life. No sadhnatmak progress.

And surprisingly after all this question is no sadhnatmak progress, then only support can be demanded by Sadgurudev. And even sadgurudev given "**Guru Aahut Mantra**" is that powerful as it was before. Those who are Paramhans are not busy in welfare of their relatives rather they are indulged in welfare of their shishyas. For that they require fully devoted heart and nothing else is required.

There are various processes in Tantra which had given by sadguru via which still many shishyas are able to make contact with him directly and takes wishful dikshas whatever they wish too. In normal course of time in dreams, meditation they get these dikshas which is simply unususal. Because no use how many and how much you do your Ishta sadhna, **they would never appear before you..it is because the unconscious mind cannot catch the Para tatva, this can happen only when your mind is completely awakened and your pragya is connected with the your diety or sadguru's pragya.** But not only in dream but also in high level stage if continuously mantra chanting is done then via Astral body or in real also Shaktipaat form can be earned.

In **Saabar Mahavisheshank**, the sadguru avahan and darshan mantra has been explained whose benefits had been taken from so many sadhaks. Whatever experiments given in Tantra Kaumudi those are testes and self-experienced and more importantly given by sadgurudev. You can try it without hesitation and take benefit of it. The angle of criticism remains right at its place. But it was suited that time only when thing were tested properly whereas there are no solutions for arguments. Today those experiment which I have been kept in my heart since long is given whose benefits along with me many of old guru brothers and sanyasi brothers and sisters had taken.

This sadhna is done in 21 days of time with complete piousness. Things required are Sadgurudev's photo is must, one crystal rosary and Panchmukhi Rudraksh. Before sadhna gurumantra 1.25lakhs mantra chanting should have been done then only do this sadhna. Again m saying piousness and purity is must. Daily in early morning time brahma muhurt you have to do this sadhna. In this sadhna 2 divine mantras are used.

Oh yaa keep one thing in mind i.e. take veg food one time only. And complete celibacy mental and physical should be followed. Don't forget that this is very very rare sadhna which would changes life given by that supreme body. This sadhna is imbibing the tatva in each cell of body. Wear white clothes and on Thursday of Shukla Paksh you can start this sadhna facing towards east direction place Sadgurudev photo, place some flavoured ashtagandh and draw a rectangle, write **Om** in mid of it, on peaks of it establish one rudraksh and place guru Paduka and guru yantra. Around the circle near Sadguru photo light a butter lamp. And worship guru, yantra , paduka etc with all followed instructions. Then one by one on that rudraksha say

Om Gurubhyo Namah

Om Nikhileshvaranand Gurubhyo Namah

Om Gurubhyo namah

Om Paraatpar gurubhyo namah

Om Paarmeshti Gurubhyo Namah

After mantra chanting offer rice, flowers, dhup, lamp and sweet. These 5 dheries peak and rudraksh are sign of Panch Param Guru Shakti. Then after with this divine Mantra do 16 rosary of **parad rosary or crystal rosary.**

Nikhileshvaranand Siddhi Mantra –

Om Nim Nikhileshvaraaya Siddhim dehi dehi nim om

Then chant **Nikhil Praaneshchetna Mantra 1 rosary** –

Guru PraanasChetna Mantra

Om purvaah sataam sah shriye deergho yetaah vadamyai sa rudrah sa bramh sa rudraye sa chaitany aadityaay rudraah vrishbho purnaah samasteh mooladhare tu sahastradhare, sahastradhare tu mooladhare samst rom prtirom chaitany jaagray uttisthh praanatah deeraghatah aittny deergham ,bhuah lok, bhuvah lok,swah lok, mah lok , jan lok,tap lok , satyam lok , mam sharire sapt lok jagray uttisthh chaitany kundalini sahastradhar jagray bramh swarup darshay darshay jagray jagray chaitnny chaitany tvam gyan dristiah, divya dristiah , chaitany dristiah, purn dristiah, bramhaand dristiah, lok dristiah ,abhirviharadye dristiah, tvam purn bramh dristiah, praptyartham,sarv lok gamanarthe, sarv lok darshay, sarv gyan sthapay ,sarv chaitany sthapay, sarv praan, apaan ,utthan ,swapaan, deh paan, jathhragni, davaaagni, vadwaagni, satyaagni, pranvaagni, bramhaagni, indraagni, aakasmataagni, samst agniah, mam sharire, sarv paap rog dukh daridray kasht pida nashay nashay, sarv suck soubhagy chaitany jagray, bramh swarup swami paramhans nikhileshwaranand shishytv , sa-gourav, sa-praan, sa-chaitany, sa-vyaghratah, sa-deepytah, sa-chandrom, sa-aadityaay samast bramhaande vicharne jagray , samst bramhaade darshay jagray, tvam gurutvam, tvam bramha, tvam Vishnu, tvam shivoham, tvam sury, tvam indra, tvam varun, tvam yaksh, tvam yamah, tvam bramhaando, bramhaando tvam, mam shrire purnatv jagray uttisthh uttisthh purnatv jagray jagray purnatv jagrayami.||

There after again **Nikhileshvaranand Siddhi mantra** chant for 16 rosaries and then the serial goes complete. Same serial would be followed in whole sadhna time. And about Divya Sadhna for which ever diksha you wished to have, automatically you will get it. This sadhna gives you the required intension, awareness and feel for continuing in sadhna field, which impacts in all four directions of sadhak and easily meet the sadgurudev and contact directly too. It is ust because of Sadgurudev's infinite love, kindliness this sadhna comes in light. He is present in our Praan. And whenever we will call him heartly, definitely he will come and satisfy our all curiousity. Don't read it just rather practically do it.

Purn shaktiPaat siddhi sadhana

कैसे संचित रखे यह जीवन की सबसे अनमोल सदगुरुदेव कृपा

जब शिष्य जिज्ञासु बनकर अपने अज्ञान की निवृत्ति हेतु श्री सद्गुरु के चरणों में निवेदन ज्ञापित करता है , तब उसके निवेदन को स्वीकार कर अज्ञान रुपी अन्धकार का नाश करने के लिए सद्गुरु उसे ज्ञान का उपदेश देते हैं। वस्तुतः ये ज्ञान कभी सामान्य होता ही नहीं है ,क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति के बाद ही मनुष्य अपने कर्म फलों को नष्ट करने का भाव और पराक्रम प्राप्त कर पाता है ,ज्ञानाग्नि ही प्रदीप्त होकर शिष्य के लिए शक्तिपात की भूमि तैयार करती है।

इसे यो समझा जा सकता है की किसान को बीजारोपण के पूर्व भूमि की उर्वरा क्षमता बढ़ाने के लिए भूमि को जोतना पड़ता है।तत्पश्चात ही बीज का अंकुरण हो पाता है। ठीक वैसे ही बीज में छुपा हुआ ज्ञान का वृक्ष जो आचार विचार में पूर्ण प्रभाव के साथ हमारे व्यक्तित्व में ही आ जाये। सद्गुरु अपने तपः उर्जा के द्वारा अपने संचयित ब्रम्हांडीय ज्ञान को शिष्य में अपनी करुणा के वशीभूत होकर उड़ेल देते हैं, अर्थात बीज रोपण कर देते हैं,जिसके बाद शिष्य मात्र मन्त्र जप का आश्रय लेता है और उसे निर्दिष्ट या अभीष्ट ज्ञान की प्राप्ति होते जाती है।

शक्तिपात के तीन प्रकार होते हैं-

मंद

मध्यम

तीव्र

इनके नाम पर जाने की कदापि आवशयकता नहीं है (क्यूंकि इन भेदों के भी ३-३ उपभेद हैं, और जिनकी चर्चा करना यहाँ हमारा वर्तमानिक उद्देश्य तो कदापि नहीं है, वो गूढ़ चर्चा फिर कभी और करेंगे),अपितु ये समझना कही ज्यादा महत्वपूर्ण होगा की शक्तिपात कर्मफल रुपी मल को हटाकर ज्ञान का बीजारोपण करने की क्रिया है। अर्थात हमारे कर्मों का जितना गहरा प्रभाव आवरण बनकर हमारे चित्त या आत्मा पर होता है सद्गुरु को उतनी ही तीव्रता का प्रयोग करना पड़ता है ,दोष निवारण हेतु उतना अधिक अपना तप प्रयोग करना पड़ता है।

और ये क्रिया तब तो अवश्यम्भावी हो ही जाती है ,जब शिष्य गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञानवाणी के भावार्थ को नहीं समझ पा रहा हो और उसका मन संशय से मुक्त नहीं हो रहा हो I तब ऐसे में समर्थ गुरु अपने ज्ञान को सीधे ही अपनी दृष्टि,वाणी या स्पर्श द्वारा शिष्य के भीतर उतर देते हैं जिससे कर्म फल के परिणाम स्वरुप बाह्य नेत्रो और बहिर्मन के ऊपर पड़ी अज्ञान की पट्टी भस्मीभूत हो जाती है ,और उसका साक्षात्कार उस सत्य से हो जाता है,

जो सत्य सद्गुरु द्वारा दिग्दर्शन कराया जा रहा हो। आज हम श्री मद भागवद गीता को कर्म की और प्रेरित करने वाला ग्रन्थ मानते हैं, परन्तु उसे पूरा सुनने के बाद भी क्या अर्जुन उसका भावार्थ समझ पाया ? क्या वो युद्ध के लिए तत्पर हो पाया? नहीं क्योंकि उसे तब ये ज्ञान नहीं था की जो सामने रथ पर खड़े हैं वो सामान्य सारथि या मित्र ही नहीं हैं अपितु ऐसे जगद्गुरु हैं जिनकी वंदना सम्पूर्ण ब्रम्हांड करता है। उसे गीता के उन दिव्य वाक्यों में छुपे अर्थ समझ ही नहीं आ रहे थे I वस्तुतः जितने भी शास्त्र या तंत्र ग्रन्थ रचे गए हैं वे तीन ही प्रकार के श्लोकों में रचे जाते हैं।

अभिधा

लक्षणा

व्यंजना

और सामान्य साधक या शिष्य के लिए इन श्लोकों के मर्म को समझना अत्यधिक दुष्कर है I तब अर्जुन भी इस मर्म को नहीं समझ पा रहे थे और तब कोई और चारा न देख कर कृष्ण जी को शक्तिपात की क्रिया करनी ही पड़ी और जो बाते लगातार समझाने के बाद ह्रदय में नहीं उतर पा रही थी वो शक्तिपात से सहज ही संपन्न हो गयी। उसके बाद जो हुआ वो हम सभी जानते ही हैं I

पर क्या मात्र शक्तिपात होने से ही साधक का अभीष्ट प्राप्त हो जाता है , नहीं वस्तुतः शक्तिपात की प्राप्ति के बाद भी साधक का जीवन पवित्रता युक्त नहीं होता है और वो नित्य प्रति की जिंदगी में मिथ्याचार, अशुद्ध भोजन और मलिन भाव से युक्त होता ही है और तब ऐसे में सद्गुरु ने जो शक्तिपात आपको प्रदान किया है वो आपके कर्मों के कारण क्षीण होते जाता है ,जैसे मिटटी के मटके में असंख्य महीन छिद्र होते हैं और जब हम उसे जल से पूरित कर देते हैं तो थोड़े समय बाद वो मटका धीरे धीरे रिक्त होते जाता है I

अर्थात उसमे जल लगातार नहीं पड़ेगा तो एक समय बाद वो पूरी तरह सूख ही जायेगा I साधक को भी शक्तिपात की प्राप्ति के बाद संयमित जीवन और साधना का नित्य प्रति सहारा लेना पड़ता है यदि वो ऐसा नहीं करता है तो ऐसे में उसे प्राप्त शक्तिपात भी धीरे धीरे सुप्त हो जाता है I और ये भी सत्य है की हम पर शक्तिपात की प्रक्रिया ब्रम्हांडीय शक्तियों द्वारा सृष्टि के आरंभ से ही हो रही है और आज भी होती है परन्तु ये इतनी मंद और सूक्ष्म होती है की हमें इसका अनुभव किंचित मात्र भी नहीं हो पाता है।

इसलिए यदि शक्तिपात के प्रभाव को निरंतर शरीर और आत्मा में संजो कर रखना है तो सदगुरुदेव प्रदत्त **शक्तिपात सिद्धि साधना** संपन्न करनी ही पड़ेगी।इसके बाद आप उन सभी शक्तिपात के प्रभाव को आत्मस्थित कर पाएंगे जो पूर्व में आप पर हुए हैं या नित्य प्रति सिद्धाश्रम के महायोगियों द्वारा हम पर सूक्ष्म रूप से किये जाते हैं। ये एक अद्भुत और गोपनीय विधान है , जो सहज प्राप्य नहीं है।

किसी भी सोमवार से इस साधना को ब्रह्म मुहूर्त में प्रारंभ किया जा सकता है।वस्त्र व आसन श्वेत होंगे ,पूर्ण शुद्ध होकर आसन पर बैठ जाये और सामने बाजोट रखकर उस पर रेशमी सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर अष्टगंध से निम्नांकित यंत्र उत्कीर्ण करके उस यंत्र के मध्य में अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर घृत का दीपक स्थापित करे, तथा यन्त्र के पीछे गुरु चित्र तथा यन्त्र के सामने गुरु पादुका या गुरु यन्त्र स्थापित करे।

तत्पश्चातहाथ में जल लेकर सदगुरुदेव से प्रार्थना करे की “**हे सदगुरुदेव पूर्व जीवन से वर्तमान तक जिस भी दीक्षा शक्ति का आपने मुझमे संचार किया हैवे सदैव सदैव के लिए मुझमे अक्षुण हो सके इस निमित्त मैं ये दुर्लभ साधना कर रहा हूँ,आप अपनी अनुमति और आशीर्वाद प्रदान करें**” तथा **गुरु चित्र** और यदि **गुरु पादुका या गुरु यन्त्र** हो तो उन का दैनिक साधना विधि में दिए गए विधान अनुसार (या पंचोपचार विधि से) गुरु पूजन करे।पंचोपचार पूजन के विषय में पूर्व अंकों में बताया जा चूका है। इसके बाद **नवीन स्फटिक माला** से **१६ माला गुरु मंत्र** की तथा **२४ माला पूर्ण शक्तिपात सिद्धि** मंत्र की जप करे।

पूर्ण शक्तिपात सिद्धि मंत्र–

ॐऐं ह्रीं क्लीं क्रीं क्रीं हुं जाग्रय स्फोटय स्फोटय फट्॥

ये क्रम सात दिन का है,दीपक मात्र साधना काल में ही जले ,अखंड रखने की अनिवार्यता नहीं है, साधना के सभी सामान्य नियमों को अवश्य अपनाएं।अंतिम दिन जप के पश्चात उस माला को ४० दिनों तक पूजा के समय धारण करे और बाद में उसे पूजन स्थल पर ही रख दे।साधना काल के मध्य शरीर में तीव्र दाह उत्पन्न हो जाता है, गर्मी बढते जाती है अतः दुग्ध पान अधिक मात्र में करे, शरीर टूटता रहता है क्यूंकि आत्म रूप से व्याप्त शक्तिपात की तीव्र ऊर्जा रोम रोम में प्रसारित होते जाती है,चेहरे पर लालिमा और नेत्रों में आकर्षण व्याप्त हो जाता है। आप स्वयं ही इस अद्भुत मन्त्र के प्रभाव को देख पाएंगे, जरुरत है मात्र पूर्ण श्रृद्धा के साथ मन्त्र को अपने जीवन में स्थान देने की बाकि का काम तो स्वतः होते जायेगा।

==

Poorna Shaktipaat Siddhi sadhna

when Disciple became curious to release his lack of knowledge state and requests to sadgurudev, then his requests is been listen and Sadguru proceed some thought processing to vanish his lack of knowledge.

Actually this knowledge is never been casual to any one, because after achieving any type of knowledge he actually gets the notion of destroying it. Knowledge fire zeal only prepares the base for shaktipaat procedure.

This can be understood by this way – if any farmer sows seeds in farms, but before sowing, first he cultivate and plough the land. There after he starts the sowing of seeds later which converts into huge trees. The hidden form of knowledge in seed became in future tree. Exactly same case with us whatever seeds inside us is cultivated by Sadguru and ultimate after his hard efforts we became tree. By Sadguru's meditational powers and energy the universal knowledge get established in us. This all happens just because of his infinite endless love and kindliness for us in his heart. This means he sows the seed, where after sheer support of mantra jap shishya get success in his wishes.

The Shaktipaat are of 3 types :-

Mand

Madhyam

Teevra

Don't go by the sheer name of it. (Because there are 6-6 sub secrets of it, as of now whose discussion is not in intended. That secret discussion might be taken some other time) rather it's more important to understand that Shaktipaat is that process which helps to excrete the filthy thoughts in us and cultivates the seeds by sowing in us to enlighten the light of purity.

It means as much dark and strong layer of our past life impacts had been engrossed in our mind that much powerful process have been used to remove the effects by sadguru which is possible only by transferring his hard meditational power and energy via Shaktipaat.

And this becomes so important when Shishya is enabling to understand the knowledge is given by Sadguru and his mind is not free from suspiciousness. In that case capable guru directly transfers the light of knowledge by eyesight, speech or by touch, in resultant the filthy layer of external eyes and mind gets disappeared and then he has been acquainted with the ultimate truth of life which is again lead by Sadguru.

Today we considered the holy book ShrimadBhagwat Gita as most inspirational book but after listening completely, still the question remains as it is that does Arjun understood it properly? Does he become instant ready to face the war? Answer is NO because at that time he was not having the light of knowledge is not just his driver or friend but also mentor of the world who is worshipped by whole world. Arun didn't understand the hidden divine sentences meaning of Gita. Basically however the Shastras and Tantra Granthas had been written and expressed in three forms of Shlokaas –

Abheedaa

Lakshanaa

Vyanjanaa

And for normal Sadhak this is quiet difficult to understand the depth of these shlokas. At that time even Arjun was also not able to understand it amd no other solution left apart giving Shaktipaat remained with Shree Krishna. The talks which Arjun was not able to get since long and lots of efforts, mere by shaktipaat he embibed it instantly so easily smoothly. Thenafter whatever happened we are welaware about it.

Is shaktipaat is sufficient for a sadhak to realise his wishes, Answer is 'No' even after having shaktipaat diksha the sadhak's life doesnt remain pure. In his daily routine life he is full of falsehood, impure food and dirty notions and in such condition the shaktipaat energy given by Sadguru reduces day by day. This reduces only becase of our Karmas, likewise in mud pot there are infinite minute wholes which are not seen by lamed eyes.

When we fill it with water but after some time the water level gets on reducing manner and ultimate it again becomes empty. It means time on time if we doesn't fill with water then it would get dry. For keeping it wet the water supply shouldn't be stop. After getting Shaktipaat Sadhak should lead his life very carefully and support of sadhna is must.

And if he doesn't do sadhna, slowly slowly the shaktipaat energy disappears. And this is also a truth, the shaktipaat process by universal power holders is already been started from beginning and at today's date too but it is quite slow and minute that we don't realize it. Therefore if you want to conserve the impact of shaktipaat in you, then the Shaktipaat Siddhi Saadhna is the only solution. Then only you can imbibe the impacts which have been done in past and also at present done by Siddhaashram's Mahayogis upon you.

This is a wonderful and secret process which really rare. On any Monday you can start with this sadhna in Bramha mahurt (early morning auspicious time) Cloths and asana should be white in color. Clean and bath yourself and then be seated, establish the ashtagandha yukta yantra on small table covered with white cloth. Put some rice in middle of it and then light the butter lamp. Place Sadguru picture behind the yantra and place the Guru paduka and guru yantra before the small table.

Then take some water in palm and pray to Sadgurudev " **Oh my revered Sadgurudevji with due respect I would like to say something, since first birth to this birth, whichever dikshas you have transmitted in me, it should get resume in me forever for that purpose I'm pursuing this sadhna. I just want your permission and blessings".** Then as per instruction do worship guru paduka, guru pujan as u do on daily basis. About Panchopchaar Pujan process already been told in previous article. Then with **New Crystal Rosary (Navin Sphatik Mala**) do 16 rosaries gurumantra and 24 rosaries **Poorna Shaktipaat Siddhi Mantra** jap.

Poorna Shaktipaat Siddhi Mantra –

Om aim hreem kleem kreem kreem hoom jaagray sfotay sfotay fatt.

This should be done for seven consecutive days, Light the lamp in sadhna period only. Not needed on continuity (Akhand) follow all general instruction same as any sadhna. On last day after chanting wear that rosary for 40 days while worshipping time and after place it again at puja place. Repeat it every day till 40 days.

While in sadhna period sudden hotness would arise in body, body heat would increase so increase your milk intake. Body pain will be there as the astral form of Shaktipaat's sharp energy flows drastically in each cell of our body. Facial glow would increase day by day. Eyes would become more attractive and effective. You only can experience the after effects of this sadhna. What needed is complete belief on sadhna in personal life rest things are automatically managed for you

Adwitiy brAmhAtv guru sAdhAnA

कैसे संभव हो ,पूज्य सदगुरुदेव के ब्रम्ह स्वरुप के दर्शन ....

साधक के जीवन का सौभाग्य चरम पर होता है जब वो अपने सद्गुरु की विराटता को अपने दिव्य नेत्रों से देख सके ,उनके ब्रह्म रूप को देख सके अपनी आत्मा,अपने जीवन में उतार सके। ब्रह्म का तात्पर्य है अपने आत्मस्वरूप को समझना ,उससे परिचित होना।उस ज्ञान के द्वारा जीवन के उन रहस्यों को समझना जिसके द्वारा साधक अपनी कुंडलिनी जाग्रत करता हुआ आज्ञा चक्र तक पहुचता है और उस आज्ञा चक्र का भेदन करता हुआ शरीर के सर्वोच्च शिखर सहस्रार को जाग्रत करता हुआ उससे झरते हुए आनंद और अमृत का पान करने की क्रिया संपन्न करता है। मगर ये आनंद दो ही तरीकों से प्राप्त हो सकता है –

कुंडलिनी जागरण कर कुंडलिनी को आज्ञा चक्र से भेदित कर सहस्रार तक पहुँचाना।

या सद्गुरु के चरणों का आश्रय लेकर उनसे अत्यधि गोपनीय **ब्रह्मत्व गुरु मन्त्र** प्राप्त कर ,उसकी जप शक्ति से ही इस गृहस्थ जीवन में रहते हुए सहस्रार भेदन कर पाना।

पहला तरीका अत्यधिक दुष्कर है और उसमे सतत अभ्यास व निर्देशन की आवशयकता होती ही है। कई बार मात्र एक चक्र को स्पंदित करने में ही पूरा जीवन चला जाता है सम्पूर्ण कुंडलिनी की बात कौन कहे। परन्तु जो दूसरा तरीका है वो कही ज्यादा प्रभावकारी और सफल है ,जिसमे सद्गुरु की शक्ति का ही आश्रय लेकर कही सुगमता से शिष्य सहस्रार को जाग्रत कर सकता है और आज्ञा चक्र का पूर्ण भेदन हो जाने के कारण उसे वह ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिसे वेद "**ब्रह्म रहस्य**" के नाम से जानते हैं। और तब उसे अपने सद्गुरु की विराटता प्रति क्षण दृष्टिगोचर होती रहती है। इसके बाद साधक के जीवन में याचकवृत्ति का कोई स्थान नहीं रहता है ,अपितु वो प्रकृति का साथ तटस्थ होकर सहचर भाव से ही देता है ,साधक के लिए ऐसे में कुछ भी ,कोई भी ज्ञान अगम्य नहीं रहता है।

इस साधना का प्रारंभ सदगुरुदेव के सन्यास दिवस या किसी भी गुरूवार को महेंद्र काल से प्रारंभ करते हैं।

इस साधना में ध्यान रखने योग्य बात मात्र इतनी है की मूल मन्त्र के पहले और बाद में **११-११ माला गुरु मंत्र** की करना है और बीच में निम्न मंत्र की ५१ माला करनी है ,साथ ही साथ ये भी ध्यान रखना है की शुक्रवार से इस साधना को ब्रह्म मुहूर्त में ही संपन्न किया जाता है

और ये कुल १४ दिनों की साधना है सभी सामान्य नियमों का पालन करते हुए नित्य गुरु पूजन करना है और सदगुरुदेव हमें अपने विराट स्वरुप के दर्शन करवाए और ब्रह्म रहस्य से अवगत कराये, इसी भावना से स्फटिक माला से जप करना है।वस्त्र व आसन श्वेत ही रहेंगे। बाजोट पर गुरु चित्र ,गुरु पादुका और शक्तिपात साधना में जो यन्त्र बना है ठीक उसी यन्त्र का निर्माण कर बाकि साडी प्रक्रिया वैसी ही करनी है।

ब्रह्मत्व गुरु सिद्धि मन्त्र-

ॐपरात्पर ब्रह्म स्वरूपं निर्विकल्पं आज्ञाचक्र दयैति गुरुवर्यै नमः।।

साधना के मध्य में ही साधक का ध्यान लगने लग जाता है और उसे विविध दृश्य दिखाई देने लगते हैं।वे सभी दृश्य भविष्य या भूत काल से सम्बंधित होते हैं,जिनका हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध होता है।धीरे धीरे आप उस दृश्य के अर्थ को समझने लग जाते हैं और एक समय बाद आप जिस किसी का भी चिंतन कर मात्र १०८ बार मंत्र का जप कर नेत्र मूँद कर ध्यानस्थ होते हैं, आपके नेत्रों के समक्ष उस व्यक्ति की सभी गतिविधि स्पष्ट होते जाती हैं।

==

Advitiya Bramhatva Guru Sadhna-

The good fortune is any sadhak is on peak when he himself see the Viraat Swarup of his Saadguru by his own eyes, our soul could see his brahma rup, imbibe it in our life. That's the only wish. Here Bramha means – to understand our own internal form, to get introduce. And with that knowledge fathom the secrets of life. Via which activating the energy of Kundalini reached upto Agya Chakra and passing it reached at the highest peak of body i.e. sahastrar and feels and equally realize the state and he ends up the process. But this happiness can be discover only by two ways –

Activation of Kundalini and taking Kundalini to agya chaktra crossing all other chakras and reaching upto the Sahastraar.

Or requesting into the holy feets of Sadguru and earning very secretive **Brhmatva Guru Mantra** from him, only with that Shakti one can reach to its highest in this marital life also.

First way is very difficult and it continuously needs practice and guidance. Most of the times whole life can go for activating only one chakra so don't ask for whole kundalini activation approx. time. But the second way is most effective and successful way, in which Sadguru's power is taken as support and shishya easily reached upto the sahastrar level. After crossing Agya chakra he gets the knowledge which is known as "**Universal Secrets (Brahma Rahasya)".** And then he is able to see all the time viraat swarup of his sadguru. Then after there is no place of requesting mode in sadhak's life, rather he accompanies the nature with same level. In that way for Sadhak nothing remains impossible.

You can start this sadhna on Sadguru Sanyas Day or any Thursday of Mahendra Kaal.

In this Sadhna only one thing which you should keep in mind i.e. Before and after of Mool Mantra **11-11 rosaries guru mantra** are must and in mid of it **51 rosaries**, along with that keep in mind that you should finish it on Friday early morning time i.e. Bramha Mahurt. This is 14 days sadhna followed with all general instructions with daily guru pujan too. And sadgurudev himself express their Viraat swarup and aware us with the universal secrets. With the same feeling proceed for sadhna with Sphatik (crstal) rosary. Clothes and Asana should be of white color. On small table place the Guru Picture, Guru Paaduka and the yantra used in Shaktipaat Saadhna. Produce similar yantra and complete the sadhna with same procedure as before.

Brahmatva Guru Siddhi Mantra –

Om Paraatpar Brahma Swarupam nirrvikalpam agyachakra dayeeti guruvaryai namah.

In between of sadhna sadhak's meditation happens automatically. And various dreams become visible which are related to his past and future, these are deeply related to our present life. Gradually you are able to grab the meaning of those dreams and certain point of time about whomsoever you think of and chant the mantra for 108 times and sheer closed eyes with concentration, all the activities of that person appears as picture.

Nikhil tatv saayujy bhagvati raj rajeshwari sadhaNa

यह साधना रहस्य मिल जाना ही सदगुरुदेव की पूर्ण कृपा ही तो हैं ...

"राज राजेश्वरी दुर्लभं जायते नरः॥

पूर्णत्वं श्रेष्ट सिद्धित्वं न अन्यत्र वदेत् क्वचित॥

पूर्व जन्म कृत दोष इह जन्मनि यद् भवेत् ।

सर्व पाप विमुच्यन्ते चैतन्य शुद्ध साधनवै ॥

राज राजेश्वरी कुण्डल्योत्थान एव च ।

देह प्राण स चैतन्य शुद्ध ब्रह्म समो नरः ॥

अनंगोसम सौन्दर्य यौवनं तेजस वदेत्।

सम्मोहनम् कामत्वं प्राप्यते राज दीक्षतं॥

सहस्रार त्व जाग्रत्वं अमृतो पान त्वं सदः।

सर्व रोग विमुच्यन्ते दीर्घजीवी भवेत् नरः" ॥

जीवन को संवारने के लिए यूँ तो विविध साधनाएं प्रचलित हैं ,परन्तु मात्र राज राजेश्वरी साधना का योग यदि निखिल तत्व से हो जाये तो जीवन में कुछ भी असंभव नहीं रह जाता है ,और ये सिद्धाश्रम का और समस्त देवों का कहना है ,सभी ऋषि मुनि और सिद्ध योगियों ने इस साधना को जीवन में सर्वोपरि माना है ।

श्वेत बिंदु रक्त बिंदु रहस्य के अन्वेंशन काल में जब मैं स्वामी प्रज्ञानंद जी के पास पंहुचा था तो उन्होंने मुझे बताया था "की पारद विज्ञानं के समस्त दिव्य रहस्यों का ज्ञान और कुंडलिनी को एक ही झटके में मूलाधार से सहस्रार तक पंहुचा देने वाली एक मात्र साधना राज राजेश्वरी साधना है और चूँकि ये भगवतपाद सदगुरुदेव परमहंस निखिलेश्वरानंद प्रणीत है, अतः मात्र मन्त्र जप से ही जीवन के वो सभी अभीष्ट साधक को प्रदान कर देती हैं जो की अप्राप्य ही हैं, आज मेरे जीवन में मुझे जो भी प्राप्त हुआ है उसका आधार यही साधना है"।

उपरोक्त श्लोक ब्रह्मऋषि विश्वामित्र जी के हैं,जो उन श्लोको में स्पष्ट कहते हैं की जीवन का उत्थान कुंडलिनी जागरण के द्वारा ही होता है ,और सामान्य साधक के वश में कुंडलिनी जागरण की क्रिया संभव नहीं है।परन्तु यदि राज राजेश्वरी साधना संपन्न कर ली जाये तो यही परिस्थिति पूर्णतया अनुकूल हो जाती है, जो भी पुरुष जीवन में अनंग के सामान सुन्दर ,यौवन शक्ति से परिपूर्ण होना चाहते हैं और स्त्री रति के सामान कोमल,तेजस्विता युक्त अपार सौन्दर्य की स्वामिनी बनना चाहती हैं उसके लिए इस साधना से श्रेष्ट उपाय कोई और नहीं हो सकता।

जिस प्रकार जंगल की सूखी हुयी घास और पत्तियों को प्रचंड अग्नि एक क्षण में जला देती है ठीक उसी प्रकार ये साधना पूर्व जीवन और इस जीवन के सभी पापों को एक ही क्षण में समाप्त कर भस्मीभूत कर देती है।

मैंने विगत तीव्र साधना विशेषांक में भी यही कहा था की ये साधना तंत्र का आधार है ,और इसके बाद कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता है। इस साधना के प्रभाव से साधक सहस्रार से टपकते अमृत को धारण करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है ,और वही अमृत उसके बिंदु के साथ मिलकर ओजस में परिवर्तित हो जाता है तथा निर्जरा देह और पूर्ण ऐश्वर्य की प्राप्ति कराता है।

किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी को इस साधना का प्रारंभ किया जाता है , साधना के लिए गुरु यन्त्र,चित्र और श्री यन्त्र की आवशयकता होती है, श्वेत वस्त्र पहनकर मध्य रात्रि में इस साधना का प्रारम्भ करे, **पूर्ण भगवती राज राजेश्वरी की साधना में सफलता हेतु ये साधना की जा रही है और अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ गुरु तत्व युक्त होकर वे मेरे जीवन में उतरेयही आशीर्वाद आप सदगुरुदेव से मांगे** श्वेत वस्त्र, आसन, श्वेत पुष्प और खीर से भगवती और सदगुरुदेव का पूजन करे।इन दोनों यंत्रों का पूर्ण पूजन शास्त्रोक्त पद्धति से पंचोपचार करने के बाद स्फटिक माला से सबसे पहले निम्न गुरु तत्व मंत्र की ११ माला जप करें और उसके बाद राज राजेश्वरी मन्त्र की १०८ माला करे,फिर पुनः उपरोक्त गुरु तत्व मन्त्र की ११ माला जप करे।

गुरु तत्व मन्त्र-

ॐ गुरु शिवायै शिव गुरुवर्यै नमः

दिव्य भगवती राजराजेश्वरी मंत्र-

AING HREENG SHREENG

दीपक शुद्ध घी का होना चाहिए और इस साधना क्रम को ७ दिनों तक संपन्न करना है।इस साधना के प्रभाव से स्फटिक माला विजय माला में परिवर्तित हो जाती है ।इस माला को पूरे जीवन भर धारण करना है।राज राजेश्वरी मंत्र में **ग** की ध्वनि आयेगी। ये एक अद्विय्तीय साधना है ,जिसके द्वारा सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट से भरा जा सकता है।

===

Nikhil Tatva Sayujya Bhagvati Raaj Raajeshvari Sadhna –

"Raaj Raajeshvari durlabham jaayte narah..

Poornatva shreshtham siddhitvam na anyatra vadet kvachit

Purva janma krut dosh ih janmani yad bhavet

Sarva Paap vimuchhyante chaitanya shuddha sadhnave

Raaj Raajeshvari kundalyoutthaan eiva cha

Deh praan sa chaitanya shuddha brahma samo narah

Sammohanam kaamatvam prapyte raaj deekshitam

Sahastraar tva jaagratvam amruto paan tva sadah

Sarva rog vimucchyante deerghjeevi bhavet narah.

To make life beautiful many sadhnas are famous, but mere by Raaj Raajeshvari Saadhna yog if merges with Nikhil tatva then nothing would remain impossible in life. And this has not only said by all gods but also by Siddhashram yogis too that this is the ultimate saadhna in life. In discovery time of Shvet bindu Rakta Bindu secrets, I reached near Swaami Pragyaanand ji.

He told me, " that secrets of paarad Vigyan and taking kundalini from down to top in seconds can only be done by this sadhna only and this is given by Bhagvaadpaad Sadgurudev Paramhans Nikhileshvaranand." Therefore sheer by mantra chanting this fulfills the wishes of sadhak. And today whatever I got in my life is just because of this sadhna.

Above Shloka is of Bhrmhahrishi Vishvamitra said clearly that life's progress can be done by kundalini activation only, and common sadhak can do it. But if he accomplishes Raaj Raajeshvari saadhna then situation would become favourable for him. A man who wants to be as handsome as Anang with full manly power and the lady wants to become like Rati as delicate, charming and gorgeous then this sadhnaa is the best solution for such typ of seeker.

Exactly when the dry stems of jungle get fire in seconds similarly this sadhna fires ur past lifes and even this life paap karmas in seconds. I have given in previous articles that this sadhna is base of Tantra. And after achieving this nothing remain impossible. The impact of this sadhna is sadhak get energy to handle the Amrut drops comes out from sahastraar and that mixed up with the Bindu and converts you completely with healthy and beautiful body.

On any Shukla Paksha you can commence this sadhna. For this you need Guru yantra, guru photo and shree yantra. Wear white clothes with complete cleanliness and purity in midnight start this sadhna. "**Requests Sadgurudev that i am doing Poorna Bhagvati Raaj Raajeshvari sadhna to get completeness in all arts and bow me guru tatva in my life and success in this sadhna"** and then on white asana, white flowers, white sweet kheer to Bhagvati and Sadgurudev and do the worship with all instructions.Do Panchopchaar pujan of both the yantras and chant first guru mantra for 11 rosaries and then raaj Raajeshvari mantra 108 rosaries , then again guru mantra for 11 rosaries.

Guru Tatva Mantra –

Om Guru Shivaaya Shiv Guruvaryai namah

Divya Bhagvati Raaj Rajeshvari Mantra-

Aing Hreeng Shreeng

Lamp should be of pure butter and continue and complete this sadhna for 7 days. With impact of this sadhna the Crytal rosary would convert in Vijay rosary. You have to wear this rosary forever whole life. In Raaj Rajeshvari Mantra the sound of '**ga**' would come. This is really an astonishing sadhna which will enlighten your life..

Mahanisha shri sadhana purn vidhan

इस पूर्ण क्रम को करके तो देखें फिर देखे कैसे सदगुरुदेव और श्री कृपा आप पर बरसने लगती हैं

जीवन की आपाधापी में बहुधा हम मूल उद्देश्य से ही वंचित रह जाते हैं ,किसी पर्व विशेष की सार्थकता कैसे हो सकती है,इसका कदाचित भान ही आज लोगो को होगा। आज पर्व मात्र बाह्य आडम्बरों में ही घिरा रह गया है ,पर्व का मूल चिंतन तो लुप्त प्रायः ही हो गया है, फिर वो चाहे गुरु पूर्णिमा हो,होली हो,रक्षा बंधन हो या फिर दीपान्विता या दीपावली का ये पावन पर्व।

वस्तुतः प्रामाणिक विधान का ही आश्रय लेने पर जीवन में उन्नति संभव है ।और जीवन में सदगुरुदेव की कृपा के बगैर तो विधान की प्राप्ति कदापि संभव नहीं है। हमारे लिए दीवाली का अर्थ मात्र दीवाली और इसका पूजन ही है , परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की धन त्रयोदशी से भाई दूज तक के पांच दिवसों की क्या महत्ता है

और इन पांचो दिवसों का विधिवत तांत्रिक क्रम से पूजन करने पर ही महानिशा साधना का ये पर्व पूर्ण सर्वांगीण उन्नति देता है और वर्षभर के लिए पूर्ण अभय और उन्नति का वरदान भी ।दीवाली की रात्रि बीतने के साथ ही उत्साह मंद हो जाता है और साधना कक्ष में प्रवेश की इच्छा ही समाप्त प्रायः हो जाती है ,क्यूंकि दीवाली पर मंत्र कर लिया तो अब क्या जरुरत है ,और इसके पीछे अज्ञान हो मूल कारण होता है। काश की इन 5 दिवसों का गूढ़ अर्थ हम समझ सके और तदानुसार हम उसका उचित प्रयोग कर सके, खैर दीर्घ विवेचन प्रस्तुत करने का ये सही अवसर नहीं है इसलिए संक्षेप में उस विधान को यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं जो सदगुरुदेव ने अपनी प्रसन्नता के क्षणों में वर्णित किया था। यदि हम इस विधान का प्रयोग करते हैं तो सपरिवार अभय,पापों से मुक्ति, धन-शक्ति,प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति और पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति होती है।

- कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हम सभी धनतेरस के रूप में जानते हैं। परंपरा अनुसार स्नान करने के बाद संध्याकाळ में मृत्यु और रोगों से मुक्ति के लिए ३ दीपकों को घर के बाहर रखना चाहिए,ये दीपदान परिवार की तरफ से **यमराज** के लिए होता है जो वर्षभर के लिए अकालमृत्यु के भय को क्षीण कर देता है। दीपक प्रज्वलित करते समय निम्न प्रार्थना करनी चाहिए-

“मृत्युना पाश-हस्तेन कालेन भार्यया सह।

त्रयोदश्यां दीप-दानात् सूर्यजः प्रीयतां ” ॥

ततपश्चात रात्रि के प्रथम प्रहर में **आरोग्यधिपति भगवान धनवंतरी** का ध्यान और पूजन करना चाहिये ,याद रखियेगा की पंचोपचार पूजन वगैरह क्रियाएँ पहले भी कई अंको में स्पष्ट की जा चुकी है और सदगुरुदेव **"मन्त्र तंत्र यंत्र विज्ञान"**पत्रिका में सैकडो बार पूजन विधान दे चुके हैंIअतः पूजन विधान वह से देख लेIयहाँ मात्र मैं गुह्य विधान स्पष्ट कर रहा हूँ I पूजन स्थल में भगवती लक्ष्मी और गणपति जी का पूर्ण चित्र स्थापित होना चाहिये और सदगुरुदेव और भगवान गणपति के पूजन के बाद निम्न ध्यान करेIमहत्वपूर्ण तथ्य ये है की परिवार में जितने सदस्य हों लाल वस्त्र बिछाकर उतनी ही सुपारी स्थापित की जानी चाहिये बाजोट परIमुख पूर्व की तरफ होना चाहियेI

ध्यान-

"चतुर्भुजं पीत-वस्त्रं सर्वालन्कार-शोभितं I

ध्याये धन्वंतरिम् देवं सुरासुरनमस्कृतं" ll

तत्पश्चात दीर्घायु प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण परिवार की तरफ से संकल्प लेकर दीर्घायु लक्ष्मी का पंचोपचार पूजन कर दीर्घायुष्य लक्ष्मी मन्त्र की ११ माला जप संपन्न करे ,ये जप लाल हकीक या मूंगे की माला से करे ,माला प्राण प्रतिष्ठित होनी आवश्यक है I

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौं अमृत्यु लक्ष्म्यै नमःI

प्रातः काल समस्त सुपारियों को दक्षिण दिशा में निर्जन स्थान पर फेक देंI

- **रूप चतुर्दशी या नरक चतुर्दशी विधान**- सौंदर्य प्राप्ति और पूर्ण पाप मुक्ति के लिए इस दिन साधना की जाती हैI

स्नान करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए **अपामार्ग** को अपने मस्तक पर घुमाना चाहिये –

सीता लोष्ट सहा युक्तः सकन्तक-दलान्वितः I

हर पापमपामार्ग ! भ्राम्यमाणः पुनः पुनः ll

स्नान के बाद निम्न मन्त्र में से प्रत्येक का तीन तीन बार उच्चारण कर जलदान करना चाहिये अर्थात जल अर्पित करना चाहिये और "श्री भीष्म" को भी तीन अंजुली जल अर्पित करना चाहिये I

यमाय नमः

धर्मराजाय नमः

मृत्यवे नमः

अन्त्काय नमः

वैवस्वताय नमः

कालाय नमः

सर्व भूत क्षयाय नमः

औदुम्बराय नमः

दध्नाय नमः

नीलाय नमः

परमेर्ष्ठिनी नमः

वृकोदराय नमः

चित्राय नमः

चित्र गुप्ताय नमः

और सांयकाल घर के बाहर धर्म-अर्थ काम मोक्ष रुपी चार बत्तियों का दीपक प्रज्वलित करना चाहिये,इसके बाद ही अन्य स्थानों पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिये

तत्पश्चात तिल के तेल का दीपक जलाकर उसका विधिवत पूजन कर ११ माला मन्त्र सौभाग्य लक्ष्मी मन्त्र का जप करना चाहिये –

ॐ श्रीं ह्रीं सौभाग्य लक्ष्म्यै श्रीं अखंड सौभाग्य देहि देहि ह्रीं श्रीं नमः ॥

- **महानिशा श्री विधान** – धन ऐश्वर्य की अतुलनीय प्राप्ति के लिए आज दीपावली की रात्रि मे साधना की जाती है,आज की रात्रि को किसी भी प्रकार के मन्त्र को स्वयं के लिए जाग्रत किया जा सकता है, आज की रात्रि काली काल जाग्रत होता है जिस समय किसी भी मन्त्र का जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। और एक और पद्दति है जिसमे पूजन तो लक्ष्मी का ही होता है किन्तु वो अष्ट सिद्धि संयुक्त हो जाता है अतः भविष्य मे जब भी अष्ट सिद्धि साधना करना हो तो साधक इसी श्रीयंत्र पर कर सकता है जिस पर उसने निम्न विधान किया हो।

पूजन स्थल पर पूर्व की तरफ मुह करके बैठना चाहिये और सामने लक्ष्मी गणेश की मूर्ती और श्रीयंत्र की स्थापना करना चाहिये,हाँ एक बात ध्यान अवश्य रखे की ये विधान मिथुन लग्न मे होना चाहिये जो की प्रचुर संपत्ति और ऐश्वर्य के साथ साथ सिद्धियों और संतान सुख की भी प्राप्ति होती है और याद रखिये की यदि हम सीधे ही स्थिर लग्न यथा वृषभ और सिंह मे हम सीधे पूजन करते हैं तो जो संपत्ति हमारे पास है ,

अनजाने मे हम उसी को स्थायित्व दे देते हैं,फलस्वरूप जो प्रगति और उच्चता जीवन मे वर्ष भर आणि चाहिये, वो कदापि नहीं आती है,जब आप नवीन ऐश्वर्य का प्रयत्न करेंगे और उस ऐश्वर्य को स्थायित्व देंगे तभी तो आपको वर्ष भर मनोवांछित लाभ होगा।

रात्रि मे सर्वप्रथम सदगुरुदेव,गणपति और भगवती लक्ष्मी का ध्यान कर मनोयोग पूर्वक षोडशोपचार पूजन करना चाहिये तत्पश्चात-

गं श्रीं गं

मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करते हुए कुमकुम और केसर से रंजित अक्षत को बाये हाथ मे लेकर दाहिने हाथ से श्रीयंत्र पर अर्पित करना चाहिये, इसके बाद पुष्प व अक्षत को निम्न मन्त्र बोलते हुए श्रीयंत्र पर अर्पित करें।

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि

ॐ चंचलायै नमः जानुनी पूजयामि

ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि

ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि

ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि

ॐ विश्व वल्लभायै नमः वक्ष-स्थलं पूजयामि

ॐ कमल वासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि

ॐ कमल पत्राक्षयै नमः नेत्र त्रयं पूजयामि

ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि

पुनः निम्न मन्त्र बोलते हुए पुष्प व अक्षत अर्पित करे –

ॐ अणिम्ने नमः

ॐ महिम्ने नमः

ॐ गरिम्णे नमः

ॐ लघिम्ने नमः

ॐ प्राप्तयै नमः

ॐ प्राकाम्यै नमः

ॐ ईशितायै नमः

ॐ वशितायै नमः

तत्पश्चात निम्न मन्त्र पढते हुए पुनः अक्षत और चन्दन अर्पित करे

ॐ आद्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ विद्या लक्ष्म्यै नमः

ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ अमृत लक्ष्म्यै नमः

ॐ कमलाक्ष्यै नमः

ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः

ॐ योग लक्ष्म्यै नमः

तत्पश्चात निम्न कुबेर मंत्र की १ माला जप करे –

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिम् देहि दापय नमः

इसके बाद ११ माला निम्न ***अभीष्ट सिद्धि लक्ष्मी*** मन्त्र की करे

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं हुं ॥

मन्त्र जप संपन्न होने के बाद घर और बाहर रखने के लिए दीप को थाली या सूपे मे सजा ले और निम्न मन्त्र पढते हुए उनका पूजन अक्षत छिडकते हुए करें और उसके बाद दीपकों को जहाँ रखना हो रख दे-

अग्नि ज्योति सूर्य ज्योतिः चन्द्र ज्योतिस्तथैव च।

उत्तमः सर्व ज्योतिनां दीपः अयं प्रति-गृह्यतां॥

दीपक अखंड रूप से पूरी रात्री तक प्रज्वलित रहे यह साधना का एक महत्वपूर्ण नियम है.

- धान्य लक्ष्मी अन्नपूर्णत्व प्रयोग- पूरे वर्ष भर प्रचुर धान्य सुख पाने हेतु ये प्रयोग दीवाली के दूसरे दिन किया जाता है और इस लघु प्रयोग से अन्न भण्डार भरे रहता है रसोई मे।

दीवाली के दूसरे दिन सूर्योदय के पूर्व ही एक ताम्बे के कटोरे मे ५ प्रकार के धान्य भर कर उसके सामने निम्न मंत्र की ५ माला मन्त्र जप कमाल गत्ते की माला से करे और उसके बाद उस धान्य या अनाज को सूर्योदय के साथ ही छत पर या बाहर पक्षियों के लिए बिखेर दे ,और प्रभाव तो आप देखेंगे ही।

मन्त्र-

श्रीं अन्नपूर्णे प्रियन्ताम् सह श्रियै नमः

- रक्षा कवच दूज विधान- भाई दूज के दिन बहन जिस सूत्र को भाई की कलाई पर बांधती है उसे निम्न मन्त्र से ३२४ बार अभिमंत्रित करने के बाद ही भाई की कलाई पर बांधा जाना चाहिये,ये क्रिया परिवार का वरिष्ट सदस्य या कोई भी संपन्न कर रक्षा सूत्र को बहन को दे दे ताकि उन सूत्रों को बहन भाई को तिलक लगा कर उनकी कलाई पर बाँध सके और वर्ष भर की रक्षा भाइयों को प्राप्त हो सके।ये क्रिया मध्यान्ह काल के पहले संपन्न हो जानी आवश्यक है। जितने लोगों को सूत्र बांधना है,उतनी संख्या मे सूत्र लेकर लाल रंग की धोती पहन कर पूर्व दिशा की और मुँह कर मंत्र करना है ।

ॐ रक्ष रक्षिणी रक्षात पूर्ण रक्षेश्वराय नमः।

इस प्रकार ये महानिशा श्री प्राप्ति विधान पूर्ण होता है, आप इस विधान के साथ अन्य मन्त्रों का जप भी दीपावली की मध्यरात्रि मे कर सकते हैं यथा,अघोर,शैव,शाक्त मन्त्रों का ,वो आपके ऊपर निर्भर है । जो मूल विधान है वो आपके लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर दिया है ।

==

Mahanisha Shri sadhana complete procedure

In the race of the life many times we miss our prime goal, how the ultimate significance of the special days to be receive least people might be aware of that. In current time the festival days have become outer fake pomp only, the main objective related to the special feast are lost, rather it is guru purnima, Holi, Raksha bandhan or it is about sacred festival of Diwali or Dipaanvita in other words.

In fact, the progress of the life is only possible with authentic procedures. And in the life it is impossible to get such processes without blessings of Sadgurudev. For us, the meaning of diwali remains poojan of diwali only but we are actually not aware about the significance of the five important days from Dhan Chaturdashi to Bhai Dooj and by completing five days tantric ritualistic procedures of poojan this festival of mahanisha grants complete progress and blessings of completeness for one whole year.

When dipawali night ends the complete enthusiasms for sadhana slowly ends and wish to enter in sadhana room gets dissolve because mantra chanting on diwali has been done what does more of it requires? After this thinking responsibility lay of unawareness. May we understand complete importance of these five says and can use the precious time; anyways it is not time to give description of it thus here by the description of the procedure is given which sadgurudev provided with blessings in happiest moments. If we complete the procedure then safety, freedom from sins, monetary wealth power, relief from natural disaster and complete safety could be gain.

- kartik krushn trayodashi is famous among all as Dhan teras. Traditionally after having bath in the evening one should place 3 lamps (dipak) our side the house to get relief from diseases and death, This lamp offerings are for YamaRaaj by the family which removes fear of premature death. While lighting up the lamp one should pray as follow.

"Mrutyunaa paash-hastena kaalena bhaaryayaa saha

Trayodashyaam deep-daanat suryajah priyataam"

After that in the first face of night (pratham prahar) mediating and poojan of health god dhanawantari should be done. Do note that panchopachara poojan had been given in previous issues and sadgurudev even had given that hundreds of time in "Mantra Tantra Yantra Vigyan". Thus poojan vidhan could be noted from there. Here I am just describing the secret process. In worship place picture of lord ganapati and goddess lakshmi should be established and after Sadgurudev and ganapati poojan one should meditate as follows; here important point is one should establish as no. of betel nuts on the red cloth placed on wooden-mate (baajot) as no. of family members are there. Face should be facing east direction.

Meditation –

"chaturbhujam peet-vastram sarvaalankaar-shobhitam
Dhyaaye Dhanavantarim devam Suraasur-namaskrutam"

after that for to have long life take sankalpa on behalf of whole family; after lakshmi panchopachaar poojan chant 11 rosary of Dirghayush Lakshmi mantra. The chanting should be done with red hakeek rosary or Munga rosary, rosary should be charged (pran pratisthit)

Om aeim hreem shreem kleem hsOm amrutyu lakshmyei namah

In early morning throw all the betel nuts in south direction at the uninhabited place.

-Procedure of Roop chaturdashi or Narak chaturdashi – sadhana to have beauty and get relief from sins are to be done on this day.

While bathing one should chant the following mantra rolling apaamaarg on the head-

Seta losht sahaa yuktam sakantak-dalaanvitah
Har paapamapaamaarg! Bhraamyamaanah punah punah

After bath one should offer water by chanting every mantra three times and **"shri Bhishma"** should be offered water three times.
Yamaay namah
Dharmaraajaay Namah
Mrutyave Namah
Antkyaay namah
Veivaswataay namah
Kaalaay namah
Sarv bhoot kshayaay namah
Audumbaraay namah
Dagdhaay namah
Neelaay namah
Paramersthinee namah
Vrukodaraay namah
Chitraay namah
Chitra guptaay namah

And at evening one should light lamp containing four lights (chaturmukhi) which represent four aspect of life Dharma, artha, Kaama, Moksha. After that only other lamps should be lighted.

After that one should light lamp of sesame oil and after poojan of the same one should chant 11 rounds of the saubhagya lakshmi mantra

Om Shreem Hreem Saubhaagy Lakshmyei Shreem Akhand Saubhaagy Dehi Dehi Hreem Shreem Namah

-MahaaNisha Shri Vidhan – Today on diwali night sadhana is done to have complete wealth and prosperity, in today's night any mantra could be awaken for the self, in today's night kaalee kaal stays awake at that particular time any mantra can give a desired accomplishment. And there is one more way in which poojan of lakshmi is done but that remains merged with asht siddhi thus in future whenever sadhana for asht siddhi is to be done sadhak can do it in the same shri yantra on which process has been done.

One should sit facing east in the worship place and establish idol of lakshmi ganesha and shriyantra in front, here one should remember that the process should be done in Mithun Lagna which grants full wealth & prosperity accomplishment with children wishes and do even remember that if we directly does the process in Sthir Lagna Vrishab or Sinh lagn then in that condition unknowingly we gives stability of current situations and wealth which resulting loss of the progress and prosperity which we should gain for whole year, when you give establishment of the new prosperity then you will have progress of the same and desired results for one complete year.

In the night with devotion do the shodopachaar poojan of sadgurudev, ganapati and lakshmi after that-

Gam shreem Gam

The rice coloured with kum kum and kesar should be taken in right hand and those should be offered on shriyantra with 108 chants of the above mantra from left hand; after that offer flowers and rice on shriyantra chanting mantras below.

Om chapalaayei namah paadau poojayaami
Om Chanchalaayei namah jaanunee poojayaami
Om Kamalaayei namah katim poojayaami
Om Katyaayanyei namah naabhim poojayami
Om Jaganmaatre namah jatharam poojayaami
Om Vishv Vallabhaayei namah vaksh-sthalam poojayaami
Om Kamal Vaasinyei namah hastou poojayaami
Om Kamal patraakshayei namah Netr trayam poojayaami
Om shriyei namah Shirah Poojayaami

Again offer flowers and rice with mantras below
Om animne namah
Om Mahimne namah
Om garimne namah
Om laghimne namah
Om praptyei namah
Om praakaamyei namah
Om ishitaayei namah
Om vashitaayei namah

After this again offer rice with sandal

Om Aadhy lakshmyei namah
Om vidhya lakshmyei namah
Om saubhagya lakshmyei namah
Om Amrut lakshmyei namah
Om kamalaakshyei namah

Om saty lakshmyei namah
Om bhog lakshmyei namah
Om Yog lakshmyei namah

After this, chant one round of the kuber mantra given below

Om aim shreem hreem kuberaay dhan Dhaany samruddhim dehi daapay namah

After that chant 11 rosary of abhisht siddhi lakshmi mantra

Om shreem hreem shreem praseed shreem hreem shreem hum

After mantra chanting is completed one should decorate the lamps to be placed in/ out house in a plate and chanting the below mantra one should do the poojan with rice and place the lamp

Agni jyoti sury jyotih Chandr jyotistathiev ch
Uttamah sarv jyotinaam dipah Ayam prati-Gruhyataam

Here, it is very important rule for this sadhana is that the lamp should stayed single lighted (akhanda) for whole night.

-dhaanya lakshmi annapurnatv prayog- to have grain lakshmi for one whole year the sadhana is done on next day of diwali and with this small prayog kitchen stays filled with grains and commodity

On the next day of diwali, before sun rise one should fill five types of grains in a copper bowl and should chant five rounds of the mantra with kamalgatta rosary and after that in sunrise time spread that grains on terrace or outside of the house for birds, you will feel the effect of the sadhana.

Mantra-

Shreem annapoorne priyantaam sah shriyai namah

-Raksha Kavach Dooj Procedure- the sutra which is tied to the brother by sister on this day should be mantra powered (abhimantrit) with the following mantra, any of the elder member of family can even do the process and give it to the sister so that sister can tied it after doing tilak and complete security to the brother could be gain. This process should be completed before noon

The no. of the person going to tied, the same quantity of the sutra should be taken and mantra jaap should be done facing east direction wearing red dhoti.

Om raksh rakshinee rakshaat purn raksheshwaraay namah

This way the mahanisha shri prapti vidhan is completed. With this mantra you can even do other mantra chantings in dopawali rather aghora, shaiv, shakt or whatever you think of. The main procedure has been given here for benefit of all.

Soot RAHSYAM -8 Surya vigyan aur kaal chakra

सूर्य विज्ञानं और काल चक्र

त्रिनाभिमती पञ्चारे षण्नेमिन्यक्षयात्मके।

संवत्सरमये कृत्स्नम् कालचक्रम् प्रतिष्ठितं॥

तीन नाभियों से युक्त है सूर्य के रथ का चक्र,अर्थात भूत भविष्य और वर्तमान ये तीनो काल ही सूर्य रथ चक्र की तीन नाभि है,नाभि अर्थात जहाँ स्पंदन होता हो प्राणों का।वेदों मे काल को प्राण ही तो कहा गया है। और सूर्य इन प्राणों का अधिपति है,अर्थात जहाँ कालमयी दृष्टि की बात आती हो या अपनी दृष्टि को काल के परे ले जाकर व्यापकता प्रदान करनी हो तो सूर्य की साधना करनी ही पड़ेगी और उनके रहस्यों को आत्मसात करना ही पड़ेगा।

बहुधा साधकों के मन मे सूक्ष्म शरीर सिद्धि का सरलतम विधान जानने की बात आती है ,परन्तु शास्त्रों मे ऐसी कोई क्रिया स्पष्ट नहीं है ,जिसके माध्यम से सरलतापूर्वक स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को प्रथक कर उन गुह्य और अनबुझे स्थानों की यात्रा की जा सके,जहाँ आज भी प्राच्य आध्यात्मिक उर्जा बिखरी पड़ी है और जहाँ जन सामान्य के कदम पड ही नहीं सकते,इसलिए ये स्थान अबूझ ही रह गए हैं और अबूझ रह गयी है

यहाँ पर दिव्य उर्जाओं की उत्पत्ति का रहस्य भी।जब सिद्ध मंडल से साधनात्मक ज्ञान प्राप्ति की बात आती है तो हमारे चेहरे मात्र लटक ही सकते हैं क्यूंकि हमने कभी सदगुरुदेव की व्यापकता को समझा ही नहीं,अन्यथा उनसे सूर्य विज्ञानं के ऐसे ऐसे रहस्य प्राप्त किये जा सकते थे जो की कल्पनातीत ही कहे जा सकते हैं।

हमने मात्र पदार्थ परिवर्तन को ही सूर विज्ञानं की प्रमुख उपलब्धि माना है और समझा है परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की प्राण रहस्य को समझ लेने के बाद किसी भी लोक मे गमन,ग्रहों पर नियंत्रण और कुंडलिनी भेदन इत्यादि की प्राप्ति अत्यधिक सरल हो जाती है। सूर्य की सप्त किरणों और उनके रंगों मे कुंडलिनी जागरण, काल-दृष्टि की प्राप्ति और ब्रह्माण्ड के अबूझे रहस्य हस्तामलकवत दृष्टि गोचर होने लगते हैं। सप्त रंगों मे बिखरी सूर्य की किरणों का सम्मिलित रूप श्वेत है जो की व्यापकता का परिचायक है और परिचायक है पूर्णता का भी।

भला कैसे ???

क्या आप जानते हैं की सूर्य के सप्त रंगों से लोकानुलोक गमन का गहरा सम्बन्ध है, सविता मंत्र का मूल ध्वनि मे किया गया उच्चारण आपके शरीर को अणुओं के रूप मे विखंडित कर देता है और ये विखंडन मनोवांछित लोक मे पहुचकर वापिस अपना मूल स्वरुप पा लेता है, अक्सर ऐसे मे इन अणुओं के बिखर जाने का भय होता है परन्तु सूर्य विज्ञानं का अध्येता ये भलीभांति जानता है की सूर्य प्राणों का परिचायक है ,अर्थात प्राणशक्ति की सघनता और उससे प्राप्त बल,विखंडित अवस्था मे भी हमारे शरीर के अणुओं को बिखरने से बचाए रखती है ,और अणुओं के चारो और एक आवरण बना देती है जिसके कारण ब्रह्मांडीय यात्रा के मध्य शरीर के अणु किसी भी बाह्य आघात से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं ,

और उनकी मनोवांछित लोकों मे जाकर साकार होने की कामना मे कोई बाधा नहीं आती है ,और एक बार जब कोई मनोवांछित लोक मे पहुच जाता है तो वह देह वहाँ के वातावरण के अनुकूल बन जाती है और तब वहाँ के रहस्य और विज्ञानं को समझना सहज हो जाता है । वस्तुतः सूर्य की किरणों के सात रंग यथा बैगनी,जामुनी,नीला,हरा ,पीला,नारंगी और लाल का सप्त लोको से गहरा सम्बन्ध है –

भू,भुवः ,स्वः ,मह :,जनः,तपः और सत्यम, और इस सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए हमें श्वेत की अर्थात आदित्य के रहस्य को समझना पड़ेगा , क्यूंकि ये सभी रंग सम्मिलित होकर श्वेत का ही विस्तार करते हैं ।तभी कालचक्र का सहयोग लेकर आप कालभेदी दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और ये कोई जटिल कार्य नहीं है ।यदि साधक **सूर्योदय के पहले पूर्व की तरफ मुख करके ओम का गुंजरन ७ मिनट तक नित्य करे और फिर सूर्योदय के साथ ही ७० मिनट तक गायत्री मंत्र का जप और फिर पुनः ७ मिनट तक ओम का गुंजरन**।

यदि इस क्रिया को ३ रविवार तक नित्य दोहराया जाये तो सूर्य के मध्य मे होने वाले विस्फोटों का मूल अंतर्गत कारण हम भली भांति समझ सकते हैं और उर्जा की उत्पत्ति का रहस्य भी ज्ञात हो जायेगा,क्यूंकि ये ओम की ही ध्वनि है जो की इस क्रम से प्रयोग करने पर बाह्य सूर्य का अन्तः सूर्य से तारतम्य बिठाकर रहस्यों के आदान-प्रदान की क्रिया सरल कर देती है ।और इस प्रकार सविता मन्त्र का सहयोग आपको कालचक्र की विविध शक्तियों का स्वामी बना देता है तब कालातीत दृष्टि पाना भला कहाँ असंभव रह जाता है।

==

SOOT RAHASAYAM- SURYA VIGYAAN AND KAAL CHAKRA

Trinabhimati panchaare Shanneminyashayatmake!

Sanvatsarmaye Kritsram Kaalchakram Pratishthitam!!

In Vedas these kaals means three dimensions of time i.e. present, past and future are considered as the life energy and our navel is the central pivotal point where all the functions which are necessary for our existence is continuously going on but the most dynamic fact is that these three time dimensions or we can say navel portions are working as wheels for the chariot of rotating sun.

Now the important thing which one should keep in his/her mind is that Sun is honored as the owner of this life energy so if one wants to have the capacity to see beyond the time or we can say across the time than it is important to have the blessings of Sun ….wait wait!! Not only blessings besides he should be one with all the secrets and mysteries related with it (Sun). Several saadhak wants to know the easiest way which can help them to transform their hard-core body (sathool shreer) into the transparent or micro one (suksham shreer) so that without wasting any more time they can visit all the secret places where even today spiritual energy is sprinkling its aura and these places are and will be remain unvisited by common people just because of these the secret that why these places are full of such spiritual energy is still remains unsolved.

When questions are raised regarding to have the knowledge from Sidhmandal than without showing lifeless faces we have no second option to do as we didn't try ever to understand the extension of universal commanding power who is no-one but our revered Sadgurudev otherwise from him we can came to know unimaginable and unbelievable secrets from him about our issue i.e. Soot Rahasayam.

We are feeling our head in the air on our knowledge that we can transfer metals through it but just imagine how everything became so easy if we came to know that through sun the procedure of astral journey (Lok gaman), controlling power over planets and kundlini bhedan could become easy to easiest. Simultaneously such things as Kundlini Jaagran, the power of Kaal Drishti and all the unsolved ultimate mysteries related to our universe get starting resolved on their own with the colorful seven rays of sun. Don't forget that collectively all they seven different colorful rays of sun is of white in color which is the symbol of completeness as well as of expansion.

Now the most important question which says KNOCK! KNOCK!! To our mind is how it is possible!!!!

So let me solve this mystery for you……do you people don't know that there is a close relation between the seven colors of sun and astral journey or we can say move from one planet to another that too with your own body……Confuse!!!

Let me more modify it if we enchant Savita manta with its proper intonation (mool dhvani) than this mantra have a capacity to divide our body in its basic atoms and these atoms get their basic real body when it enters in its desired planet….one thing which always frighten us is that what happen if these atoms get spread or misplaced so the answer is that a person who has the knowledge of this science knows that sun is the source of life energy

so this energy give the power of stability and unity to the atoms at the time of this diversion and this unity works as a protecting sheet of atoms from any type of destruction during astral journey and body gets its true form as soon as it enters into its desired planet and easily becomes habitual according to its new found land and also that person easily can learn or understand the science of that planet too. Basically there is a close relation between the seven colors of sun that are- purple, move, blue, yellow, orange and red and of seven lokas (sapt lok) that are **Bhu, Bhuvah, Swah, Maha, Janah, Tapah and Satyam**.

So to understand the relation between them we should understand the secret of white which is unique in itself as these colors collectively create white one because if you understand this bonding then you can easily with the help of Kaal Chakra ,have the power to see beyond the time i.e. called Kaal Drishti but this will only happen **when a saadhak who wants to have this power stand on his legs facing east and enchant OM for seven minutes then Gayatri Mantra for next seventy minutes then again OM for next seven minutes daily.**

If sadhak repeats this procedure daily for consecutive three Sundays then easily he can come to know the secrets of give and take internal and external mysteries which always and continuously occur in the core of sun and he also come to know the fact ,

that this is nothing but this OM sound which is responsible for the balancing and making easy this give and take process. So this Savita Mantra can make you the owner of all the different powers of Kaal Chakra then after that how can one even thinks that it is impossible to see beyond the time…..IS IT REALLY……I DON'T THINK SO.

SWARN RAHSYAM -8

अद्भुत रहस्य आपके लिए ही

रस-तन्त्र के अन्वेंषण काल मे सदगुरुदेव की कृपा से मेरा साक्षात्कार उन अद्भुत सूत्रों से हुआ जिन्हे की रस सिद्धों के मध्य अभी तक गुप्त ही रखा गया था और मात्र गुरुमुखी परंपरा से ही शिष्यों को प्रदान किया जाता था, साथ ही मैं ये बात भी बता दूं की ये सूत्र अनेकानेक बरसों से इन सूत्रों को कोई प्राप्त भी नही कर पाया......... क्यूंकी जो मापदंड इन सूत्रों की जानकारी के लिए साधकों मे होने चाहिए थे वो भी अप्राप्य ही थे....... परंतु सदगुरुदेव की असीम कृपा से पुनः ये सूत्र हम सभी साधकों और शिष्यों के मध्य उपलब्ध हुए हैं.

क्यूंकी सदगुरुदेव की सोच अन्या विद्वजनो से भिन्न ही रही है.....अन्य विद्वांो का मत जहाँ पर ये रहा है की पहले सुपात्र या कुपात्र को देखो वही सदगुरुदेव का मत रहा है की ज्ञान को बिखेरते चलो ,जिसमे ज़रा सी भी उर्वरा शक्ति होगी वहाँ ये परिष्कृत बीज स्वयं ही अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित हो जाएगा. अतः पात्रता को साधक के लिए छोडो. लाभ तो बस वही उठा पाएगा जो इस ज्ञान को प्रयोगात्मक रूप से आत्मसात कर पाएगा..

सामान्यतः साधकों का खेचरत्व या आकाश गमन के प्रति जिज्ञासा स्वाभाविक है,और वे ये भी जानते हैं की आकाश गमन या खेचरत्व के लिए कुम्भक का कितना महत्व है कुम्भक के द्वारा ही शरीरस्थ वायु को रोक कर अपने शरीर को शून्य मे उठाया जा सकता है और वायु गमन किया जा सकता है .... पर क्या आपको ये पता है की सामान्य कुम्भक से तो ये संभव ही नही है क्यूंकि कुम्भक के द्वारा शून्य मे उठा तो जा सकता है,किंतु उत्थित अवस्था मे आप बात चीत नही कर सकते,यहा तक की कोई कोई साधक तो बाह्य-ज्ञान भी खो बैठते हैं,इसके अलावा उर्ध्व वायुमंडल मे चलते हुए समय समय पर प्रतिकूल प्रवाहशील वायु का आघात लगने से पतन का भय भी उत्पन्न हो जाता है.परंतु................किरात कुम्भक कर लेने पर देह शून्यमय हो जाता है. सामग्रा देह को संकुचित और प्रसारित करने की क्षमता का विकास होता है.

देह को शुद्ध कर उसके किसी अंग मे वायु पूर्णा कर रखने का नाम ही किरात कुम्भक है.इसी कुम्भक के वारा विशुद्ध वायु को देह मे भर लिया जाता है. ऐसे मे जब शून्यस्थ होते हैं, तो बाह्य ज्ञान भी बना रहता है और प्रतिकूल वायु का प्रभाव भी नही होता और बात चीत भी की जा सकती है..ऐसे मे अति-प्रबल और शक्तिशाली तेज़रशि के दर्शन और संस्पर्शन से भी ज्ञान नष्ट नही होता. लेकिन क्या ये इतना सहज है ????

नही ना…… पर रस-तन्त्र मे पारद के द्वारा (जो रस से रसेंद्र की यात्रा पूर्ण कर चुका हो- मतलब जिस पर दिव्यौषधियों का संस्कार हो चुका हो, रत्नो और स्वर्ण का जारण हो चुका हो) गुटिका का निर्माण किया जाता है और इस दौरान नवार्ण मंत्र का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है . सिद्धा कुंजिका स्तोत्रा जिसका प्रयोग सभी मंत्रों के उत्किलन और सिद्धिकरण के लिए किया जाता है उसमे ये पंक्तिया ज़रूर याद रखिए की खाँ खीं खूं खेचरी तथा.. मतलब हे देवी खाँ खीं… के रूप मे आप खेचरत्व शक्ति प्रदान करने वाली हो . और ये खाँ बेज ही क्षम अर्थात आकाश बीज बन जाता है और शरीर का गुरुत्वाकर्षण आपके नियंत्रण मे कर के आपको खेचरत्व दे देता है और ऐसा होता है अवश्य होता है नवार्ण मंत्र के द्वारा ही. बस वर्णो का क्रम गुरु निर्देशानुसार परिवर्तित करना पड़ता है.

ब. सूर्योदय का पहला मंडल ऋक-मंडल कहलाता है. इस मंडल की 16 किरणों की अधिष्ठात्री शक्तियों को हम षोडश मात्रकाओं के नाम से जानते हैं और इन मात्रकाओं का समन्वित रूप ही राज राजेश्वरी षोड़शी त्रिपुर सुंदरी हैं. इनका उत्किलन कर जब हम अभिषिनचितिकरण की क्रिया करते हैं

तो हमे सहज ही सूर्य विज्ञान का ज्ञान प्राप्त हो जाता है .ये क्रिया बाह्य उपादान जैसे की लेंस के साथ भी हो सकती है या बगैर किसी बाह्य उपादान के भी संभव होती है. इस प्रक्रिया के लिए आप जिस गुटिका का निर्माण करते हैं वो संपूर्ण वर्णों के मंत्रों से सिद्ध होती है . जितने भी वर्ण हैं उनकी अपनी अपनी एक शक्ति होती हैं

और उनका विशेष ध्यान भी तथा उनका एक मंत्र भी , इन मंत्रों को पूर्ण रूपेण जागृत कर जब उस वरणात्मक मंत्र के द्वारा जब हम गुटिका या विग्रह का निर्माण करते हैं तो ये गुटिका शून्य सिद्धि या पदार्थ परिवर्तन हेतु सूर्य सिद्धि से हमे युक्त कर देती है . अब ये वरणात्मक मंत्र क्या है???? तो इसके विषय मे संक्षिप्त मे इतना कहना ही पर्याप्त है की जैसे का वर्ण का कोई अर्थ नही होता है ,लेकिन उस का के साथ प+उ+र का संयोग कराया जाए तो कपूर बनता है

जिसका अर्थ भी है और आकृति भी . इसी तरह वरणात्मक मंत्रों से जब वो गुटिका युक्त होगी तो आप शून्य मंत्र को उसके सामने सिद्ध कर जिस भी वस्तु या पदार्थ का चिंतन करेंगे वो शून्य से आप के लिए सृजित हो ही जाएगी. क्यूंकी वो मंत्र उस गुटिका से क्रिया कर आपके चिंतन मे आए हुए पदार्थ के वर्णों को संगठित कर एकरूपता प्रदान कर अस्तित्वा मे ला देगा.

अगले लेख मे आंतरिक ,आत्मिक कीमिया और रक्त-बिंदु, श्वेत बिंदु क्रियाओं का वो रहस्य आपके सामने उद्घाटित होगा जो निश्चय ही रस-तन्त्र के गूढ और गोपनिय आयामो से आपको अवश्य ही परिचित करवाएगा.शायद तब आप समझ पाए की सदगुरुदेव के कई ऐसे पक्षा हैं जो की हम समझ ही नही पाए या कभी हमने जानने की कोशिश ही नही की.

During the discovering period of Ras-tantra and with blessings of beloved and revered Sadgurudev, I got introduced to such a surreal divine sources. Because of some genuine reasons it was kept secret and by the way of Gurumukhi parampara it got transferred time by time to all disciples. Well, along with this information I would like to tell u all that till the time all these was untouched from years n years. The reason behind this was the parameters which one should have for getting this precious knowledge was also unrevealed.

Now it is possible to acquire benefit from this with blessings of Sadgurudev. It is because Sadgurudev's thinking is always exceptional from other erudite and savant persons. As per intellectual people the knowledge must be dispersed as per the deserving criteria set by themselves. But here our great Sadgurudev always used say that one who would be having a bit of fecundity (urvara shakti) there the litmus seed will turn into a budding, precocious fruitful tree.

Therefore the judgment criteria should lie down there with the aspirant itself as he is the best judge of himself. Yes, only those can achieve the benefits who will imbibe and assimilate the experimental form of knowledge in desired manner. Commonly all the aspirant and disciple are curious to know more about the Art of flying (Khechratva ya akash Gaman) and some of them who have little bit of knowledge also aware about the importance of Kumbhak which helps the body to uplift and fly in air.

But do you know the fact that it is not possible by normal Kumbhak. Because due to kumbhak one can easily uplift the body in air but cannot be able to talk with anyone in this period. Even some of them loose their contact with outer knowledge. Apart from this there are chances of getting harm by the vertical atmosphere waves which results into downfall……By doing Kiraat Kumbhak the body becomes shunyamay.

It enhance the power of Samagra body by miniature and transmit it in the better form. By making the body in pure sanity and inserting air completely in any part of body termed as Kiraat kumbhak. By this kumbhak the body can be filled with impure air. And when we experience the hollowness (shunya) stage, in this process the outer senses also remain active and harmless. Even conversation is also possible.

Along with reflection, appearance and sansparshan of tremendous potential and powerful tejorashi knowledge doesn't get destroy. But do you think is it that easy???? Hmmm answer is No…

But due to alchemy (parad) in Ras-Tantra (which already finished the journey from ras to rasendra – means sanskar of divyoshadhi is done sucessfully, Jaran of gold and stones) This is how the formation of gutika takes place and during this phenomenon specially the Navarna mantra chanting is done.

The Siddha kunjika stotra is also chanted for utkilan and siddhikaran. But don't forget to pronounce the khaam kheem khoom khechari tatha.. matlab he devi khaam kheem…in the form of Khechartatva bestows the power of fling in air(she devi khaam kheem… ke roop me aap khecharatva shakti pradan karne vali ho)… .. aur ye kham beej hi ksham and it becomes the aakash beej which controls the gravity of body and gives u the divine power of khechratva. This is possible only by the Navarna Mantra. this must be done in sequential format under the instruction of revered Guru.

•The veryfirst atmosphere of Sunrise (suryoday) is know as Rik-Mandal. The sixteen rays of ruling power (adhishthatri shaktiyon) are known as Shodash matrakaon. And the complete form of Shodash matrakaon is called as Raaj Rajeshvari Shodashi Tripur Sundri. When utkilan is done and activity called abhishinchitikaran is going on, we get the knowledge of Surya Vigyan. It can also be done by the external equipment i.e. lens or can be successfully accomplished without help of any other external factors. For this the gutika is produced and siddha by the sampoorna varna mantra. Each varna contains individual power. Each of them consists of dhyan and mantra in individual form. Each one of them need to be excited till the time and by that varnatmak mantra we produce the gutika or Vigrah. In this way Gutika becomes the shunya siddha and after Padartha parivartan results into surya siddhi. Now the question is what is varnatmak mantra???

Now in short I would explain that there is no meaning of Varna ,but with that ‘Ka” if the addition of ‘pa+uu+ra’ is done then the word “Kapoor” is formed which have its own meaning and shape. In the same way when this gutika is inclusive of varnatmak mantra with the help of siddh shunya mantra, if you will ponder any thing in your mind right the moment you will find the identity of it and will appear in front of us.

In my next article you will find the information about Inner, Astral alchemy and Rakt-bindu, the secret of Shvet-bindu activities which would definitely introduce you all from the enigmatic and hidden secret dimensions of Ras-Tantra. May be then only all will understand the unrevealed aspect of Sadgurudev.

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

जीवन में लक्ष्मी की अपनी ही महत्ता हैं और इस लिए हमारे मनीषियों ने बहुत सोच विचार कर एक पूरा मॉस का नाम ही लक्ष्मी मास या कार्तिक मास रख दिया जिसका हर दिन ही दीपावली के सामान ही महत्वपूर्ण हैं , और सदगुरुदेव जी ने भी यह लिखा हैं जो चतुर होते हैं और जिन्हें जीवन में आगे जाना हैं वह इन 30 दिन का उपयोग साधनात्मक रूप से कर के मतलब पूरे 30 प्रयोग संपन्न अपने पूरे भाग्य को ही बदल लेते हैं, क्योंकि वह यह अच्छी तरह से जानते हैं की जीवन को यूँ ही रो झिंक कर नहीं काटा जा सकता हैं उसके लिए तो पौरुष वांन रुख कर साधना मय तो होना ही पड़ेगा ही .

और इसी लक्ष्मी मय बनने की श्रंखला में एक सरल सा प्रयोग ..

मंत्र : **ॐ सरस्वती इश्वरी भगवती माता क्रां श्रीं श्रीं श्रीं मम धन देहि फट स्वाहा ||**

इसे आपको प्रतिदिन करना हैं रोज़ 108 बार कमसे कम 40 दिन तक .और यदि आप सामान्य साधनात्मक नियमो का पालन करते हुए करते हैं तो निश्चय ही आपके जीवन में लक्ष्मी तत्व अनुकूल होता ही हैं., जिस तरह महाविद्या साधना में तेल का दीपक लगाया जाता हैं उसी तरह लक्ष्मी साधन में घी का दीपक लगाया जाता हैं कुछ मिठाई भी भगवती लक्ष्मी को अर्पित करे.. सुबह या शाम कभी भी किया जा सकता हैं वस्त्र आसन माला आदि का कोई प्रतिबन्ध नही हैं पर यदि आप पीले रंग के वस्त्र का प्रयोग करे तो ज्यादा उचित रहेगा यदि रात्रि काल में जप करते हैं तो पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके करे .

****

Ek saral lakshmi prayog

There a importance of lakshmi tatv in life that's why our great one manishi /tantra scholar has after a much consideration decide named a one complete month lakshmi mass or kartik mass. And a every single day of that month is as equal as the Deepawali , and sagurudev ji has written that those who are cleaver and want to go ahead in life they surely use each and every day of this month and do 30 prayog and became able to change their fortune from bad to good, since they knew that life can not be pass like this way of depression and frustration, on must has to be sadhanamay ..

And to make this possible here Is this simple prayog

Mantra :

Om sarswati ishwari Bhagvati mata kraam shreem shreem shreem mam dhan dehi phat swaha ||

You have to chant 108 times in every day for next at least 40 days, and follow every possible sadhantmak rules than surly this lakshmi tatv bless you , and like earthen lamp light up already filled up with oil in mahavidya sadhana so here in this sadhana use ghee instead of oil.

And offer some sweets to bhagvati lakshmi , and there not any restriction re3garding the color of clothes and aasan and mala but if you use yellow color that would be fine, and this can be done either morning or in night , in night time your direction would be west facing.

TOTKA - VIGYAN

. १.पीपल के वृक्ष की जितनी भी प्रशंशा की जाये कम हैं यह आपके भाग्य तक को बदलने समर्थ हैं यदि आप पीपल के निचे एक तेल का दिया लगा कर बिना पीछे मुड़े वापिस आ जाये तो कुछ ही दिनों में धन लाभ की अवसर बनने लगते हैं.

२, जिस तरफ का स्वर चल रहा हैं उस तरफ का ही पैर सबसे पहले निकाल कर घर से बाहर निकले तो वह दिन भी अच्छा होगा ,

३, अनेको विद्वानों का कथन हैंकि यदि लक्ष्मी जी के सामने 9 बत्तीया वाला दीपक लगाया जाये तो यह आर्थिक दृष्टी से बहुत ही अच्छा रहता हैं ,

4जीवन में जब कभी भी किसी कन्या की शादी हो रही हो उसमे अपना योग दान करे या निराश्रित कन्याओ की शादी में योग दान करे यह भी अनेक अशुभो को दूर कर आपको शुभता दें में समर्थ हैं ,

5.नारियल को राहू का प्रतीक माना गया हैं , यही शनिवार को नारियल को बहते हुए पानी में बहाया जाये तो राहू गत समस्या से अनुकूलता होती हैं.

6. जीवन में अधिकतर समस्या किसी भी कार्य में अत्यधिक देरी से ही सामने आती हैं और इसका कारण शनि ही होता हैं और इसकी शांति के कुछ उपाय में से एक शनि वार को भगवान शंकर में काले तिल को चढ़ाना भी हैं.

7.शनी की शन्ति का उपाय जो बहुतायत से प्रचलित हैं वह हैं की काले घोड़े की नाल की एक छल्ला जिसे बना कर अगुली में पहिना जाये .

8 वहीँ विवाह में अनावश्यक यदि विलम्ब हो र हा हैं तो ऐसे तो इसके अनेक करण हो सकते हैं पर एक सरल का उपाय यह हैं की किसी भी केले के पेड़ के नीचे गुरूवार के दिन अगरबत्ती लगाये .

९. इशान दिशा को काफी पवित्र माना जाता हैं और इस दिशा में पूजा स्थान को रखने को कहा जाता हैं , पर आज यह कहाँ संभव हैं पर इसके कारण बहुत सी समस्या का सामना हमें करना ही पड़ता ही हैं, तो इस दोष की निवृति के लिए " ॐ नमः शिवाय" मन हा आधिकाधिक जप करना ही चाहिए .

१० घर पर जो जो भी सोफा सेट लगाया जाये उसकी दिशा इस तरह से रखी जाय की यदि उस पर घर का मालिक बैठता हैं तो उसे के ठीक सामने दक्षिण दिशा नहीं होना चाहिए .

****

1, the pipal tree is very much importance in our way of life this Is able to change your fortune ,if light a earthen lamp filled with oil nearer to it s roots and come back without looking than with in short of span of time you will find the opportunity to get financial benefit.

2, if you coming out from your house than takeout that feet first ,that direction is nostril air is running means swar.

3.many scholar suggest that if earthen lamp with 9 battiya light up in front up of goddess lakshmi, it will be good for financial gain.

4.when ever you find marriage of any girl happening give whatever you can gives in term of help in financial matter or other desired things, or for those girls marriage who have not have unfortunately any shelter , this will change your luck .

5, naraiyal (coconut) is resentative of Rahu and if you throw the nariyal in running water than it will help you if any problem that comes because of Rahu planet

6. whenever delay occurs in our life any work , many times this happens because of Saturn planet so you offer black till on Bhagvaan Shankar this help to reduce the problem.

7.if you are having problem with some dosha because of Saturn planet why not try to wear a ring made of nall of black hoarse.

8 there may be many reason for delay in marriage but light up a agarbatti below the a bananas tree ,specially on Thursday this help you.

9. ishan direction is considered very holy , normally our prayer room should be in that direction but in modern life this is always not happens than to reduces this dosha chant “om namah shivaay “ mantra as much as you can.

10 in home sofa set should be placed in such a way that when ever the house owner sit on that , should not south direction facing.

AYURVEDA : SOME TIPS

.

जीवन का पहला सुख तो सभी अब जान ही गए हैं "निरोगी काया " पर इस सुख को लगातार स्थायी कैसे रख जाये इस हेतु कुछ सरल से उपाय आपके सामने हैं

1, नीम की सदियों से एक तेज antiseptic माना गया हैं और हल्दी का भी लगभग यही गुण हैं तो यदि कोई घाव ठीक नहीं हो रहा हो तो पहले नीम की पत्तियोंको तवे पर गर्म कर से और फिर इसमें हल्दी मिला कर एक पट्टी में रख कर घाव पर बांधे आराम होगा, याद रखे सीधे नहीं बल्कि पट्टी में बाध कर लगाना हैं .

2,जब कभी भी कोई भी मास पेशियों की चोट लग जाये तो सीधे ही गर्म सिकाई न करे बल्कि पहले दो दिन तो कम से कम बर्फ से ही सिकाई करे हाँ इसके बाद आप हलकी गर्म सिकाई कर सकते हैं पर फिर भी आराम न दिखे तो डॉक्टर की सलाह अवश्य ले

3. मोच आ जाने यदि किसी कारण वश तो बेल की पत्तिया ले उसे गुड के साथ पका ले और इसका लेप उस मोच वाली जगह पर लगाये दिन मे कई बार यह करे ३/४ दिनमे ही आशातीत लाभ होगा ,

4. जिनके भी पेट में कीड़े हैं वे सभी यदि प्रातः काल दो तीन लाल टमाटर कच्चे चवा चवा करखाते हैं तो यह बहुत ही लाभदायक पाया गया हैं हैं .

5. कब्ज से आज कौन नहीं परेशां होगा , अनियत्रित जीवन शैली का यह अभिशाप हैं ही रात को जब आप सोने जा रहे हो आप एक चम्मच सौफ अच्छी तरह से चवा चवा कर खा ले और इसके बाद एक गिलास हल्का कुनकुना पानी पी ले आपको लाभ होगा

6. यूँ तो प्याज को त्याज ही कहा गया हैं पर यह भी एक गुणकारी वस्तु हैं यदि आप कच्ची प्याज खाते हैं तो आपके मुख के कीड़े नष्ट होजाएंगे,

7. ठीक इसी तरह लहसुन का भी गुण हैं कम से कम एकं कली तो कच्ची खाना ही चाहिए यह भी अनेक रोगोंमे के लिए एक बहुत लाभदायक सिद्ध हुयी हैं, जैसे पेट सम्बंधित

8, एक लहसुन को बिना तले चवा कर खा जाएँ आपको स्वास सम्बंधित रोगों में लाभ पहुंचेगा .

9. प्याज का नियमित सेवन से रक्त जनित रोग भी दूर होते हैं

1० .दमे से प्रभावित व्यक्ति तो को नमी वाली जगह से दूर रहना चाहिये , और उसे संभव हो तो सरसों के तेल से मालिश अपनी करना चाहिये .

****

Every body knew about the very first happiness ,"Nirogi kaya"means to have healthy body but to keep this such /happiness so for this here are some upay..

1/ the neem leaves are considered antiseptic and turmeric also has the same effect , so if any wounds are not getting healed so neem leaves mild heated on any tava and mix turmeric and this paste should be covered in a cloth and applied on that wounds , it helps.

2, when ever you are feeling any muscular pain do not apply very first on that any hot massage , actually very first two days you have to massage that area with ice already covered in cloth and after two day than can apply little bit hot massage , if still situation is not seems to good, than , must consult ant doctor.

3. if having "moch" than apply twice or thrice paste prepared with leaves of bel tree and gud. Within 3 or 4 days you will feel much recovery.

4.those who are having some "keede" in his smooch must eat two three lal tamatar (red tomato) every morning . this helps a lot.

5.who is not worried about indigestion , this is the bye product of modern un controlled life style, when your are going to sleep in night take a small spoon full of sounf and thoroughly chew it and take a mild heated hot water this will help a lot,

6 normally , in many house many people still have a distance from onion ,if you eat raw onion so this will destroy/remove many bacteria in your mouth.

7. like that one should take one or two “lahsun” raw kali and this also very helpful in many dieses .like stomach related .

8.if you eat daily one raw lahsun kali this will removing “dama” dieses from your lungs.

9.and the same way eating onion remove many of the blood impurities.

10, the person who is suffering from dama , have to keep a distance from the place where too much humidity have, and have massage with sarso oil thi s message also help a lot.

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक

होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Shakti Saayujy Aghor sadhana Maha Visheshank for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV